कश्मीर की लोक कथाएँ

पृथ्वीनाथ 'मधुप'

कश्मीर की लोक कथाएँ पृथ्वीनाथ 'मधुप'

लोक-साहित्य में कथाओं का अपना एक विशिष्ट स्थान है। कथाओं को बच्चे, बूढ़े, जवान तथा मर्द और औरतें बहुत ही दिलचस्पी के साथ सुनते हैं। ये तुरन्त प्रसार पाती हैं और सुनने वाले के स्मृति-पटल पर देर तक बनी रहती हैं। व्यक्ति के मन पर प्रभाव डालने और स्मृति-पटल पर देर तक बने रहने के कारण लोक-कथाओं ने क्षेत्रों, प्रांतों और देशों की सीमाएँ पार की हैं।

लोक-कथाओं को अत्यन्त लोकप्रिय बनाने में इनमें वर्णित तिलिस्म, चमत्कार तथा मनुष्य की तरह बोलने वाले पशु-पक्षियों आदि का भी हाथ है। इनमें विद्यमान मनोरंजक तत्वों के कारण भी ये अत्यंत लोकप्रिय रही हैं, बल्कि यह कहना अनुचित न होगा कि कई लोक-कथाएँ मनोरंजन के लिए ही कही गई हैं। 'कश्मीर की लोक कथाएँ' सदा लोक पक्षधर तथा साम्राज्यवाद के विरुद्ध अपनी आवाज दर्ज कराती रही हैं।

कश्मीर की लोक-कथाएँ

प्रिय डॉ० भट्ट को
सस्नेह!
[signature]
7-3-02

पृथ्वीनाथ मधुप

यात्री प्रकाशन
दिल्ली-110094

प्रकाशक : **यात्री प्रकाशन**
बी-131, गली नं. 2, सादतपुर
दिल्ली-110094
फोन : 2269962

मूल्य : **125.00**

प्रथम संस्करण : 2001

शब्द-संयोजक : प्रतिभा प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली-110032

मुद्रक : तरुण प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली-110032

KASHMIR KI LOK-KATHAYEN (Folk Tales) by Prithvi Nath Madhup

ईशान
और
मेधा
के लिए
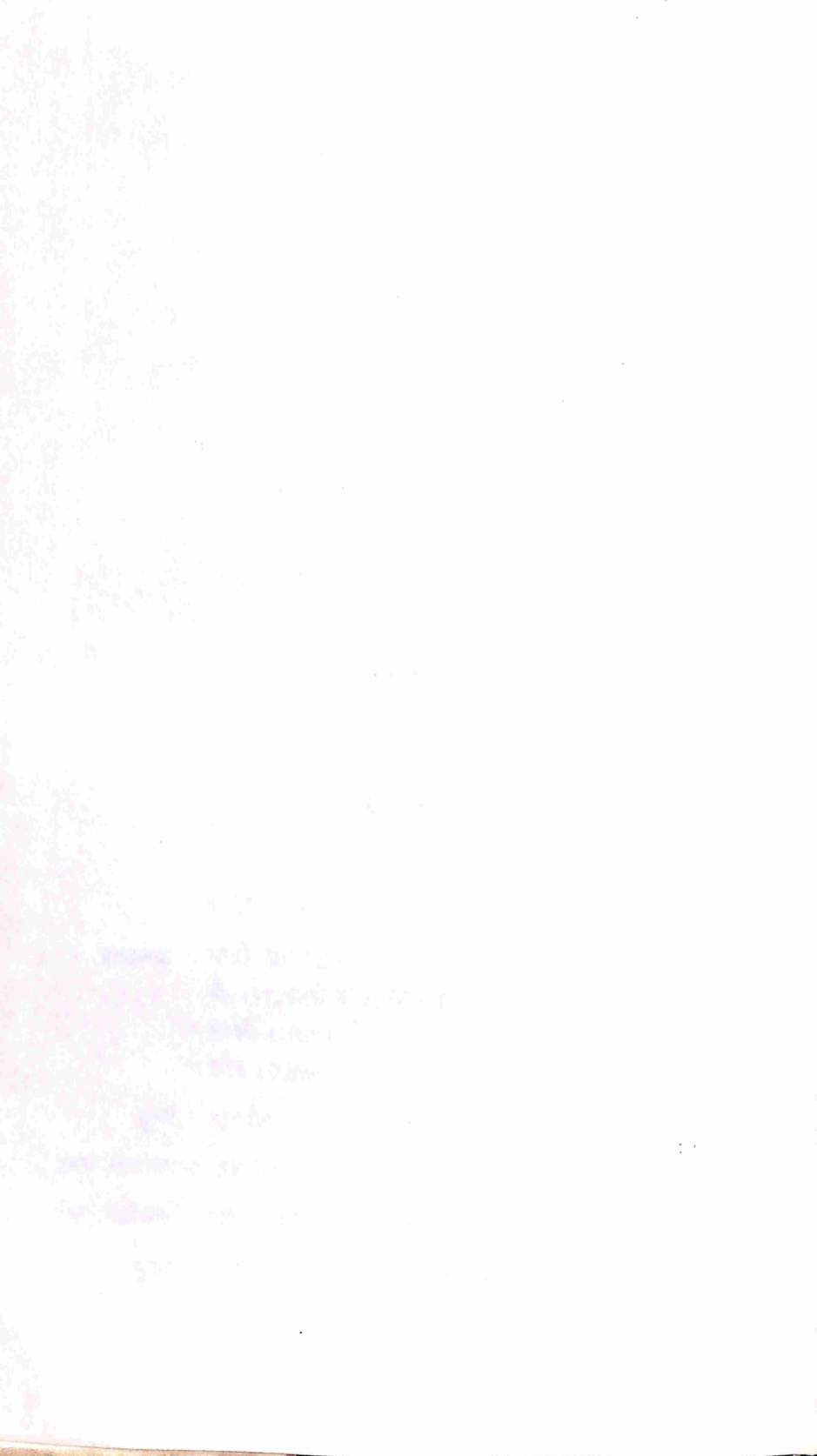
पूर्व-वचन

लोक-साहित्य वह साहित्य है जिसकी रचना लोक याने जन द्वारा अनायास ही होती रही है। इस साहित्य-सृजन की प्रक्रिया तभी से आरम्भ हुई होगी जब से मानव को वाणी का वरदान मिला होगा। मानव-मन को जब विभिन्न अनुभूतियों से गुज़रना पड़ा होगा तो वह अपने स्वभाव के कारण इन अनुभूतियों को अपने मन में ही क़ैद करके न रख सका होगा। मन के भावों को व्यक्त करने की ललक जब चरम पर पहुँच गई होगी तभी लोक-मानस से लोक-साहित्य की धारा फूट पड़ी होगी। अपने जीवन के उषा काल से ही चूँकि मानव प्रकृति के संसर्ग में रहा है अत: लोक-साहित्य का प्रस्फुटन निश्चय ही प्रकृति की मनोहर, ममतामयी एवं आनन्दमयी गोद में हुआ होगा। कई विद्वानों का कथन है कि लोक-साहित्य अपढ़ जनता के ज्ञान की अभिव्यक्ति है। अपढ़ों के ज्ञान की मिट्टी इतनी उपजाऊ सिद्ध हुई है कि पढ़े-लिखों का समस्त साहित्य तथा सारी कलाएँ इसी मिट्टी ने उपजाई हैं। आधुनिक मानव को यदि अपने अतीत की वास्तविकता की सही पहचान करनी हो तो इसी मिट्टी के कणों की मुखरता को ध्यान से सुनना होगा।

आम धारणा यह है कि मानव जाति के अतीत का लेखा-जोखा मोटे-मोटे इतिहास ग्रन्थों के पृष्ठों पर दर्ज है, पर यह धारणा बिल्कुल ग़लत है, क्योंकि इतिहास का कभी मानव याने लोक के साथ कोई लेना-देना नहीं रहा है। इतिहास ने कभी लोक-चिन्ता की ही नहीं। इसने अपने पन्ने-पन्ने पर, सम्राटों-महाराजाओं, सुल्तानों-बादशाहों, मंत्रियों-वज़ीरों, सूबेदारों-सरदारों, युद्धों-सन्धियों, जीतों-हारों, दग़ाबाजियों, लूटपाटों तथा जालसाज़ियों इत्यादि को ही हमेशा स्थान दिया है और जन की ओर कभी भूल कर भी दृष्टिपात नहीं किया है। शासकों, लुटेरों और जालसाजों-दग़ाबाज़ों के कुछ कारनामों से ही इतिहास नहीं बनता। सच पूछा जाए तो आज तक इतिहास लिखा ही नहीं गया। इतिहास शासकों, सम्प्रदायों तथा राजनीतिक दलों का हथियार नहीं होता, न यह किसी बिकाऊ मस्तिष्क की खुराफात ही होता है। इतिहास हर देश, हर प्रान्त और हर क्षेत्र के लोक-साहित्य की ज़बान से बोलता है। इस बोली को जब सही तरह से सुन और समझ कर लिखा जाएगा तभी इतिहास अस्तित्व में आ जाएगा। इसके अस्तित्व में आने पर कृत्रिमता की कच्ची दीवारें ढह जाएँगी।

सम्पूर्ण धरा के समस्त जायों को अपनी मूल एकता एवं समान अनुभूतियों की पहचान हो जाएगी और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का पवित्र भाव साकार हो जाएगा।

लोक-साहित्य के प्रमुख रूप से पाँच अंग— कथाएँ, पद्य-कथाएँ, गीत, कहावतें तथा पहेलियाँ— माने गए हैं। इसका उद्‌भव और प्रसार दोनों मौखिक रूप में हुआ है। इसके प्रसार में पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं का अधिक योगदान रहा है, पर कथा कहने वालों, किस्सोगोओं एवं लोक-नायकों आदि के योगदान को कुछ कम नहीं माना जा सकता। यह अमूल्य मौखिक साहित्य-निधि अब हमारे बीच से तेजी के साथ विलुप्त होती जा रही है क्योंकि रेडियो, चलचित्र तथा दूरदर्शन और इसी प्रकार के अन्य उपकरण तेजी के साथ जनता को अपनी गिरिफ़्त में लेते जा रहे हैं। इस निधि को समूल नष्ट होने से पहले हमें चाहिए कि इसे लिपिबद्ध कर भावी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखें तथा देश और विदेश में प्रमुख रूप से बोली जाने वाली भाषाओं में इसकी गन्ध को सुरक्षित रखते हुए अनूदित करें।

लोक-साहित्य में कथाओं का अपना एक विशिष्ट स्थान है। कथाओं को बच्चे-बूढ़े, जवान तथा मर्द और औरतें बहुत ही दिलचस्पी के साथ सुनते हैं। ये तुरन्त प्रसार पाती हैं और सुनने वाले के स्मृति-पटल पर देर तक बनी रहती हैं। व्यक्ति के मन पर प्रभाव डालने और स्मृति पटल पर देर तक बने रहने के कारण लोक-कथाओं ने क्षेत्रों, प्रान्तों और देशों की सीमाएँ पार की हैं इसमें सर्वाधिक सहायक हुए हैं यात्री, व्यापारी तथा पर्यटक आदि।

प्राप्त जानकारी को आधार बनाते हुए अनेक विद्वानों की मान्यता है कि भारतीय लोक-कथाओं का प्राचीनतम लिपिबद्ध संग्रह गुणाढ्य का पैशाची भाषा में लिखित वृहत् कथा है। वृहत् कथा की रचना पूरी कर गुणाढ्य ने इसे राजा सातवाह को भेजा परन्तु राजा ने इसकी अवहेलना की। इससे गुणाढ्य बहुत दुखी हुआ। उसने दुखी होकर ये कथाएँ वन के पशु-पक्षियों को सुनाना आरम्भ किया। पशु-पक्षियों ने इन्हें इतनी तल्लीनता से सुना कि उन्होंने अपना खाना-पीना तक छोड़ दिया। गुणाढ्य एक-एक पन्ना सुनाते जाते और उसे सामने जल रही आग में जलाते जाते। जब राजा ने यह सुना तो उसने क्षमा-याचना की पर तब तक न जाने कितने पन्ने भस्म हो चुके थे और शेष बचे थे केवल एक लाख श्लोक ही। इन्हीं शेष बचे एक लाख श्लोकों को वृहत् कथा नाम दिया गया। वृहत् कथा को कश्मीर नरेश महाराज अनन्त (सन् 1042-1077 ई.) के सभा कवि सोमदेव ने संस्कृत में अनूदित किया और नाम दिया कथा सरितसागर। कथा सरितसागर अनेक रोचक कथाओं का संग्रह है जिन्हें बाईस हज़ार श्लोकों में ढाला गया है। डॉ. वेदकुमारी घई के अनुसार— "पंचतन्त्र तथा वेतालपंचविशतिका इस विशाल ग्रन्थ का भाग बन गए हैं। बौद्ध, जैन तथा पौराणिक कथाओं का बहुत बड़ी संख्या में इस ग्रन्थ में समावेश

हुआ है। अलिफ लैला की अनेक कहानियों के मूल रूप कथा सरितसागर में मिलते हैं।'' पंचतन्त्र को संसार की सभी प्रमुख भाषाओं में— चीनी, जापानी, ग्रीक, लेटिन, अरबी, जर्मनी, फ्रांसीसी, इतालवी, स्वीडिश, डच, रूसी तथा अंग्रेजी में— अनूदित किया गया है। इन अनुवादों ने भी निश्चित रूप से अपने-अपने देश की लोक-कथाओं को प्रभावित किया होगा और उनका आधार बनी होगी। इस बात की तस्तीक थ्योडोर बेनफे ने यह कह कर की है कि पश्चिम की लोक-कथाएँ भारत की लोक-कथाओं का परिणाम है। उपर्युक्त से यह स्पष्ट है कि लोक-कथा क्षेत्र में भी कश्मीर ने संसार को उल्लेखनीय देन दी है। अस्तु,

इस समय जो सामग्री उपलब्ध है उसके आधार पर कहा जा सकता है कि कश्मीरी भाषा में 'रची' गई कश्मीर की लोक कथाओं का पहला लिपिबद्ध संग्रह एक ईसाई पादरी जॉन हिल्टन नावेल्ज़ के प्रयत्नों से तैयार करवाया गया होगा। इसी संग्रह की कथाओं का अंग्रेजी अनुवाद 'फोक टेल्ज़ ऑफ कश्मीर' नाम देकर नावेल्ज़ ने सन् 1885 ई. में प्रकाशित किया। इस संग्रह में 64 लोक-कथाएँ हैं जो अनुवादक ने कश्मीर के विभिन्न व्यक्तियों से प्राप्त की हैं। इन व्यक्तियों के नाम और पते संग्रह की पाद टिप्पणियों में दिए गए हैं। नावेल्ज़ के पश्चात् ऑरैल स्टाइन नाम के एक और ईसाई ने सन् 1912 ई. में हातम नाम के एक कश्मीरी मुसलमान किस्सागो से, जो व्यवसाय से एक तेली था, 25 किस्से सुने। इन किस्सों को इन्होंने अंग्रेजी में अनूदित किया और नाम रखा— हातिम्स टेल्ज़। इस पुस्तक को सन् 1923 ई. में ग्रियर्सन ने सम्पादित कर प्रकाशित किया। इन ईसाई विद्वानों के पश्चात् इस दिशा में जिन कश्मीरी पण्डित विद्वानों ने काम किया उनके नाम हैं, पण्डित (प्रोफेसर) सोमनाथ धर तथा पण्डित (प्रोफेसर) श्यामलाल साधु। प्रोफेसर धर ने कश्मीरी फोक टेल्ज़ नाम से कई कश्मीर की लोक-कथाओं का अंग्रेजी में अनुवाद किया और इसे प्रकाशित किया सन् 1948 ई. में हिन्द किताब्स, बम्बई ने। प्रोफेसर साधु ने इसी तरह कई लोक-कथाओं का अनुवाद किया और इसे प्रकाशित किया श्रीनगर (कश्मीर) के एक स्थानीय प्रकाशक कपूर ब्रदर्स ने। पुस्तक का नाम है 'फोक टेल्ज़ फ्रॉम कश्मीर।'

सम्भवत: स्वतन्त्रता-प्राप्ति से पहले किसी हिन्दी लेखक ने पुस्तकाकार में कश्मीर की लोक-कथाओं का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत नहीं किया। स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद भी इस ओर कोई गम्भीर और ठोस कदम नहीं उठाया गया। छिटपुट प्रयत्नों में आत्माराम एण्ड सन्ज़, दिल्ली द्वारा बच्चों के लिए प्रकाशित तथा पण्डित नन्दलाल चचा द्वारा अनूदित 'कश्मीरी लोक-कथाएँ' प्रकाशित हुईं। इसके पश्चात् सन् 1972 ई. में जम्मू-कश्मीर की कलचरल अकादमी ने कश्मीर के दो जाने-माने हिन्दी साहित्यकारों पण्डित शशिशेखर तोषखानी व पण्डित मोहन निराश तथा जया धर से

कुछ चुनी हुई कश्मीर की लोक-कथाओं का हिन्दी में अनुवाद कराया। इस लघु संकलन का सम्पादन किया श्री श्यामलाल शर्मा ने। इस संकलन को कश्मीर की लोक-कथाओं के हिन्दी अनुवाद की शुरुआत ही कहा जा सकता है, इस क्षेत्र की कोई उपलब्धि नहीं।

कश्मीरी लोक-कथाओं को अपने मूल रूप में लिपिबद्ध और प्रकाशित करने का काम श्रीनगर (कश्मीर) के एक स्थानीय प्रकाशक, गुलाम मुहम्मद नूर मुहम्मद ने किया। इन्होंने कश्मीरी लोक-कथाओं के कई छोटे-छोटे संग्रह छापे। इस दिशा में सर्वाधिक गम्भीर एवं स्तुत्य प्रयास जम्मू-कश्मीर कलचरल अकादमी ने किया है। इस संस्था ने अभी तक विभिन्न विद्वानों से लोक-कथाओं को संग्रहीत करवाकर लिपिबद्ध करवाया है। इन कथाओं को काडशिरिलूकुँ कथुँ (कश्मीरी लोक-कथाएँ) नाम देकर पाँच भागों में नस्तालीक लिपि में प्रकाशित किया है। इस क्रम को जारी रखने का काम अकादमी के पास है।

लोक-कथा-निधि एक ऐसा दर्पण है जिसमें संसार के विभिन्न क्षेत्रों की संस्कृतियों, परम्पराओं तथा सोच आदि के स्पष्ट प्रतिबिम्बों को देखा जा सकता है। कश्मीर की लोक-कथा-निधि इसका कोई अपवाद नहीं। कश्मीरी-जन प्राचीन काल से ही अध्यात्म तथा पाण्डित्य आदि की ऊँचाइयों को पार कर चुके थे और साथ-ही-साथ अपने गार्हस्थिक कर्तव्यों को भी बखूबी निभा रहे थे। 'वाग्भट्ट' नामक कथा का वाग्भट्ट इसका एक उदाहरण है। वह धूप-वर्षा की परवाह न करते हुए अपने गृहस्थ को पालने हेतु खेतों में हल चलाता है। साथ ही वह पूरे भारतवर्ष में अपने समय का महानतम पण्डित है। भीम के मन में उठ रहे शंकाओं को वह जान लेता है और उनका समाधान एक कौए द्वारा हल चलवा कर करता है। हस्तिनापुर पहुँच कर वहाँ के पण्डितों के अहंकार का नाश वह अश्वमेध यज्ञ के हवन-कुण्ड की ओर इशारा कर अग्नि प्रकट करके तथा यज्ञशाला के दीवारों की ओर इंगित कर वेदपाठ की शुद्ध और मधुर ध्वनि पैदा करके करता है। भगवान श्रीकृष्ण स्वयं खड़े होकर एवं करबद्ध होकर वाग्भट्ट से यज्ञारम्भ करने की प्रार्थना करते हैं। ये सब बातें किस ओर इंगित करती हैं, समझना कठिन नहीं। यह कथा इस ओर भी इशारा करती है कि कश्मीर हमेशा भारत का एक अटूट अंग रहा है। यहाँ के जन का देश के अन्य भागों के साथ सदा सम्पर्क रहा है।

कश्मीरी जनमानस में धार्मिक प्रवृत्ति कितनी गहरी और मजबूत है, इस बात को संकलन की 'विश्वास', 'पन-कथा' तथा 'पीर बहादुर की रोटी' जैसी कथाएँ उद्घाटित करती हैं। देवी-देवताओं के प्रति अनास्था मनुष्य को बहुत महँगी पड़ती है तथा इनके प्रति विश्वास एवं आस्था मनुष्य के दुखों एवं संकटों को एक आन में ही दूर करती है। साधु-महात्मा की शरण में जाने, उसकी सेवा करने तथा तीर्थ

आदि करने से कष्टों का निवारण होता है। इस विश्वास को 'जोगी और किसान', 'विश्वास', तथा 'भैंस के कान वाला राजा' आदि कथाएँ सहज ही प्रकट करती हैं। धर्म एवं आस्था विश्वास के साथ ही कर्म की महत्ता को भी लोक-कथाएँ स्थापित करने में सहायता देती हैं। इस सन्दर्भ में 'कर्म या धर्म' नामक कथा को लिया जा सकता है।

लोक-कथाएँ अनैतिकता की घोर विरोधी तथा नैतिकता की प्रबल पक्षधर रही हैं। 'हियमाल-नागराज' की हियमाल तथा 'ज़ोहरा खोतन और हयाबन्द' की ज़ोहरा खोतन हमेशा हर स्थिति में अपने जीवन साथी के प्रति वफादार रहती हैं। ये अपने सतीत्व की प्राणपण से रक्षा करते हुए अपने प्रेम को किसी भी दशा में कलंकित नहीं होने देती। 'भैंस के कान वाला राजा' का राजा कुसंगति में पड़कर अपने हृदय में घृणित विचारों को पनपने देता है और इसी के परिणामस्वरूप रात के समय गहन जंगल में आश्रय देने वाली तपस्विनी महिला (जिसका पति यात्रा पर गया है) को अपनी वासना का शिकार बनाना चाहता है। पर इस महिला के सतीत्व की रक्षा होती है और अपने पाशविक कृत्य के कारण राजा का चेहरा पशुओं जैसा हो जाता है। उसे लम्बे समय तक यातनाएँ सहनी पड़ती हैं। 'सच्चे मित्र' के राजकुमार के मित्र को यद्यपि राजकुमार से दोस्ती करने के कारण राजा का कोपभाजन बनना पड़ता है, फिर भी वह राजकुमार के लिए जान जोखिम में डालकर सच्ची मैत्री का परिचय देता है। इसकी सच्ची मैत्री से जिन भी प्रभावित होता है और परी राजकुमार को सौंपने के अतिरिक्त राजकुमार और इसके मित्र की जान भी बख्शता है।

लोक-कथाओं का एक जरूरी अंग प्रकृति है। लोक-कथाओं में मानव चरित्रों के साथ-साथ मानवेतर चरित्र, जैसे पशु, पक्षी, पेड़, जिन, डाइन इत्यादि भी होते हैं। ये चरित्र सदा मानव के सहायक या किसी सच्चाई आदि को उद्घाटित करने वाले रहे हैं। कौआ वाग्भट्ट के लिए हल चलाता है और स्वन्य किसुँर का पोषण पुत्रीवत् करता है। उसके लिए गुड़िया, रंगीन चर्खा और सोने के जेवर लाता है। पटरानी बनने की परीक्षा में स्वन्य किसुँर की सहायता अन्य पक्षियों से कराता है। सातवीं राजकुमारी जब अपने घायल प्रेमी की खोज में निकलती है तो एक वृक्ष की टहनी पर बैठे तोता-मैना उसे प्रेमी राजकुमार के शहर का रास्ता बताते हैं और उसके घावों को ठीक करने के लिए इलाज भी बताते हैं। 'मछुआ और तोता' का तोता अनेक रहस्य खोलता है। सूधबिलाव और दूधबिलाव हियमाल से शादी करने की इच्छा रखने वाले राजा को हियमाल और नागराज के भस्म हुए शरीरों को पुनर्जीवित करने का तरीका बताते हैं। 'पतिघातिन' के सातवें राजकुमार को एक काला नाग ही उसकी होने वाली पत्नी की कटि से लिपटे जहरीले साँप के बारे में बताता है और साथ ही इस साँप को मारने की युक्ति भी बता देता है। चलने-फिरने वाले

पशु-पक्षी ही नहीं अपितु अचल वृक्ष भी बोलते हैं और इन्सान की मदद करते हैं। ज़ोहरा खोतन जब दूसरे देश जाने पर विवश हो जाती है तो वह वृक्ष, जिसके नीचे उसे फाँसी लगनी थी, उसके कहने पर उसके पति को उसका सन्देश देता है। पृथ्वी तथा आकाश भी मानव के सहायक बनते हैं। चाँद पर की बुढ़िया चाँद की किरण फेंककर स्वन्य किसुँर को चाँद पर चढ़ने में मदद करती है। 'माँ का शाप' की 'इन्दु' (चन्द्रमा) दावत से सभी व्यंजनों से थोड़ा-थोड़ा अपनी माँ के लिए लाती है। 'चूहा और चुहिया' की चुहिया जब मेंड़ से घास देने को कहती है तो वह उसे दे देती हैं। 'चूहा और चुहिया' जीव तथा प्रकृति की एक दूसरे पर निर्भरता एवं आपसी सम्बन्धों को रेखांकित करने वाली सुन्दर बाल-कथाएँ हैं। जिन अज्ञात कथाकारों की कल्पना का ये परिणाम है, उनके प्रति मन स्वत: ही श्रद्धावनत होना चाहता है।

मानव की चतुरता तथा उसके सोच को लोक-कथाएँ किस तरह उभारती हैं वह देखने योग्य है। 'पठान और पण्डित' का पण्डित युवक किस चतुराई के साथ पठान के अपने हाथों से उसके परिवार का सर्वनाश कराता है, दाद देने योग्य है। भारतीय समाज में प्राय: कन्या का जन्म प्रसन्नता का कारण नहीं होता। पर पुत्री-पुत्र से कुछ कम नहीं होती, इसी सोच को बढ़ावा देने के लिए 'सातवीं राजकुमारी' की सातवीं राजकुमारी का असाधारण एवं चमत्कार पूर्ण चरित्र कितनी सूझ-बूझ से गढ़ा गया है, देखते ही बनता है। दिवालिया होने के पश्चात् राजा को अपनी सातवीं बेटी ही उबारती है और राजा को एहसास हो जाता है कि जन्मते ही उसके वध की आज्ञा देना बहुत गलत फैसला था। 'हर लड़की अपना भाग्य साथ लेकर आती है,' कश्मीरी समाज में प्रचलित इस विश्वास को भी यह कहानी पुष्ट करती है। लड़की लक्ष्मी का रूप है और लड़की माता-पिता की सच्ची हमदर्द और परिवार के लिए शुभ होती है। इस धारणा को भी उक्त कथा से बल मिलता है। लड़की बुद्धिमत्ता में किसी से कम नहीं होती, इस बात की तसदीक 'नमक' तथा 'कर्म और धर्म' नामक कथाएँ करती हैं। युवावस्था में कोई भी विपत्ति सही जा सकती है, पर बुढ़ापे में ऐसा नहीं हो सकता। बुढ़ापा आनन्द और आराम से कटना चाहिए— यह सोच कितना सटीक और सत्य है जिसे सदाराम की पत्नी ने विपत्ति को घर बुलवा कर उद्घाटित किया है।

लोक-कथाओं को अत्यन्त लोकप्रिय बनाने में इनमें वर्णित तिलिस्म, चमत्कार तथा मनुष्य की तरह बोलने वाले पशु-पक्षियों आदि का भी हाथ है। इनमें विद्यमान मनोरंजक तत्त्वों के कारण भी ये अत्यन्त लोकप्रिय रही हैं, बल्कि यह कहना अनुचित न होगा कि कई लोक-कथाएँ मनोरंजन के लिए ही कही गई हैं। ये कथाएँ सदा लोक पक्षधर तथा साम्राज्यवाद के विरुद्ध अपनी आवाज दर्ज कराती रही हैं। यही कारण है कि राजाओं-बादशाहों आदि को प्राय: बुद्धिहीन और क्रूर चित्रित किया

गया है। ये मौत की सज़ा से कम सज़ा प्रायः नहीं सुनाते। अपनी सन्तानों तक को भी इन्होंने देशनिकाला और मौत की सज़ाएँ सुनाई हैं।

लोक-कथाओं में चूँकि जन के हृदयों की धड़कनें धड़कती हैं। अतः इन्हें संकलित कर लिपिबद्ध करके सुरक्षित रखने की कोरी आवश्यकता है। इसके बाद इस विशाल एवं गम्भीर सागर का अच्छी तरह से मंथन करने की आवश्यकता है। फिर इसमें से वे रत्न प्राप्त होंगे जो अखिल मानव जाति के पथ को अपने अद्भुत आलोक से सराबोर कर देंगे जिससे समूचा अँधेरा अवश्य मिट जाएगा। दुर्भाग्य की बात यह है कि अभी तक इस ओर कोई समुचित कदम नहीं उठाया गया है।

पिछले दो-तीन वर्षों से मैं एक प्रायोजना— कश्मीरियत की तलाश पर काम कर रहा हूँ। इस काम के लिए मुझे कश्मीर के आतंकियों ने 'कश्मीरियत' नया शब्द गढ़कर तथा इसकी मनमानी बेसिर-पैर की परिभाषाएँ देकर उकसाया। कश्मीरत्व या कश्मीरियत को तब तक समझना (अतः परिभाषित करना) असम्भव है जब तक कि कश्मीरी जनमानस को समग्र रूप से न समझा जाए। इस जनमानस का स्पष्ट बिम्ब कश्मीरी-लोक साहित्य-दर्पण में ही देखा जा सकता है। अतः इस बिम्ब से साक्षात्कार करने के लिए ही मैंने लोक साहित्य के अति लोकप्रिय एवं प्रमुख अंग लोक-कथा को पहले चुना। क्योंकि लोक-कथाओं से गुजर रहा हूँ। अतः कुछ चुनी हुई लोक-कथाओं का हिन्दी रूपान्तर हिन्दी जगत् के सम्मुख रखने का विचार आया। मेरे इस विचार का अनुमोदन किया हिन्दी कविता के शिखर पुरुष श्रद्धेय बाबा नागार्जुन के सुपुत्र श्रीयुत श्रीकान्त जी ने। श्रीयुत श्रीकान्त ही कश्मीरियत की तलाश क्रम की मेरी पहली पुस्तक 'कश्मीरियत : संस्कृति के ताने-बाने' की तरह प्रस्तुत पुस्तक को भी हिन्दी पाठकों तक पहुँचा रहे हैं। इस स्नेह सहयोग के लिए मैं इनका हृदय से आभारी हूँ।

जय वीणा-पाणि!

—पृथ्वीनाथ मधुप

पृथ्वीनाथ मधुप
84/C-3, ओमनगर, उदयवाला,
बाड़ा, जम्मू-1800[illegible]2
फोन: 555168

कथा-क्रम

बाल लोक-कथाएँ

वाग्भट्ट

कहा जाता है कि महाभारत युद्ध समाप्त हो चुका था और देश में पाण्डवों का राज पुनः स्थापित हो चुका था। एक दिन महाराज युधिष्ठिर ने हस्तिनापुर के विद्वानों और वरिष्ठों को भोजन के लिए निमन्त्रित किया। भोजन करवाने के बाद महाराज युधिष्ठिर उनसे सम्बोधित हुए—''महाभारत-युद्ध में हमने विजय पाई और समूचे देश पर हमारा शासन है, पर न जाने क्यों मेरा मन उदास है। जैसे मेरे हृदयोद्यान के सघन बौरों पर तुषारपात हो गया है ! क्या आप में से कोई महानुभाव मेरी इस उदासी का कारण बता सकता है ?'' कुछ क्षणों के बाद एक वयोवृद्ध महानुभाव ने कहा, ''महाराज, युद्ध में असंख्य लोगों का खून बहा। लाखों घर बरबाद हो गए। अनेक माताओं की आँखों के तारों को मौत के घाट उतारा गया। दुल्हिनों के मेहँदी रचे हाथ फीके पड़ गए। हस्तिनापुर की गलियों और बाजारों में शोणित के नद बह गए। यहाँ का कण-कण रक्त-रंजित है, इसीलिए आपका मन अशान्त एवं उदास है। इस पातक से मुक्ति पाने के लिए आपको प्रायश्चित्त स्वरूप अश्वमेध यज्ञ रचाना चाहिए।'' यह सुनकर निर्णय लिया गया कि अश्वमेध यज्ञ रचाया जाए। इस बारे में श्रीकृष्ण जी को भी अवगत कराया गया। अब यहाँ यह प्रश्न उठाया गया कि इस यज्ञ में वेदपाठ कौन करेगा तथा यज्ञ के प्रमुख पण्डित का पद किसे दिया जाएगा ? इस काम के लिए कोई उच्च कोटि का विद्वान् तथा महान् साधक ही चुना जाना चाहिए। अन्त में इस बात का निर्णय लिया गया कि यह पद श्रीकृष्ण ही सँभाल लेंगे और उन्हें सूचित करने के लिए पाण्डुओं के मँझले भाई भीम को भेजा गया ताकि श्रीकृष्ण यज्ञ का श्रीगणेश करें। भीम सन्देश लेकर द्वारिका नगरी में श्रीकृष्ण जी के पास पहुँचे।

श्रीकृष्ण ने जब भीम से सन्देश सुना तो उन्होंने भीम से कहा कि मुझसे भी श्रेष्ठ और उत्तम विद्वान् कश्मीर में हैं। इस विद्वान् का नाम वाग्भट्ट है। इन्हीं के कर कमलों से ही यज्ञ का श्रीगणेश करवाया जाना चाहिए। जब श्रीकृष्ण का सन्देश लेकर भीम हस्तिनापुर लौटे तो श्रीकृष्ण का सन्देश सुनकर सभी पाण्डव एवं विद्वान् हैरान हो गए। और कहने लगे कि क्या हस्तिनापुर के विद्वानों से भी बढ़कर कोई श्रेष्ठ विद्वान् देश में विद्यमान है ? श्रीकृष्ण का कहना था, अतः सभी अनुत्तर हो

गए। अन्त में भीम को कश्मीर की ओर भेजा गया। कई महीनों के पश्चात् भीम कश्मीर पहुँच गए। यहाँ पहुँच कर कई लोगों से वाग्भट्ट के बारे में मालूम किया और पूछते-पाछते वॉग्यहोम गाँव पहुँच गए। उन्होंने यहाँ चार-पाँच व्यक्तियों को एक वृक्ष की छाया में बतियाते पाया। उनके पास जाकर भीम ने उनसे वाग्भट्ट और उनके आश्रम के बारे में मालूम किया। इन लोगों ने जब यह नाम सुना तो ठहाका मार कर हँस पड़े और कहा कि यहाँ वाग्भट्ट नाम का कोई व्यक्ति नहीं; पर यहाँ वागुर नाम का एक दरिद्र है। वर्षा-घाम में हल चलाते-चलाते जिसका अंग-अंग ढीला हो जाता है, सम्भवत: उसी ने तुम्हारे सामने अपने बारे में बतंगड़ बनाया होगा। फिर भी जाओ, वह वहाँ खेत में हल जोत रहा है और वह उधर उसकी झोंपड़ी है। वहाँ उसकी पत्नी से मालूम करना। यह सुनकर भीम झोंपड़ी की ओर गया और वहाँ पहुँचकर वाग्भट्ट की पत्नी से मिला। वह उस समय चक्की पीस रही थी। "माता! श्रीमान् वाग्भट्ट जी कहाँ हैं ?" भीम ने पूछा। "वत्स, वे वहाँ उस पेड़ तले हल जोत रहे हैं।" वाग्भट्ट की पत्नी ने उत्तर दिया। भीम खेत की ओर चल पड़े। वहाँ इन्होंने एक काले-कलूटे व्यक्ति को, जो केवल कौपीन धारे हुए था, हल जोतते देखा। इसे देखते ही भीम के चेहरे पर घृणा-सी छा गई। सोचा, कहाँ हस्तिनापुर के पण्डित और विद्वान् और कहाँ यह कलूटा दरिद्र ! भीम को लगा कि श्रीकृष्ण ने कहीं गलती की है। न जाने कहाँ इस नंगड़ का नाम सुना है। यदि यह उस सम्मिलन में प्रविष्ट होगा तो सब कुछ भ्रष्ट हो जाएगा। भीम यही सोच रहे थे कि वाग्भट्ट की पत्नी भी खेत पर वाग्भट्ट के लिए खाना लेकर आ गई और भीम से पूछ बैठी—"वत्स, क्या वाग्भट्ट से मिले ? तनिक प्रतिक्षा करो। वे यहीं इसी वृक्ष की छाया तले भोजन करने आ जाएँगे।" कुछ क्षण बीते कि वाग्भट्ट भी वहीं आ गया और एक अतिथि को भी आया पाया। अतिथि से औपचारिकता निभाने के बाद पूछा कि "वत्स, तुम मेरे पास किस उद्देश्य से आए हो ? मुझसे क्या काम है ?"

भीम असमंजस में पड़ गए कि कहूँ या न कहूँ ? पर उन्हें श्रीकृष्ण की आज्ञा याद आई और कहा—"हे द्विजश्रेष्ठ, महाराज युधिष्ठिर को अश्वमेध यज्ञ रचाना है। श्रीकृष्ण ने आपको इस यज्ञ में सम्मिलित होने और प्रमुख पण्डित का पद स्वीकारने का निमन्त्रण दिया है।" यह सुनकर वाग्भट्ट हँसने लगे और बोले—"न जाने कहाँ जाना था और कहाँ आ गए हो। प्रभु ही जाने तुम्हें किसको बुलाना था और तुम किसके पास आ गए। कहाँ वागुर और कहाँ अश्वमेध यज्ञ। मेरे सम्मिलित होने से तो सब कुछ गड़बड़ा जाएगा। अरे, मेरे पास पेट-भर भोजन और तन भर कपड़ा नहीं है, मैं अश्वमेध यज्ञ क्या जानूँ ?" यह कहते-कहते वाग्भट्ट मैले हाथों ही भात खाने लगे। भीम ने जब उनकी मलिनता देखी तो उसे घिन आ गई। सोचने लगा यह ठीक ही कहता है, यह वह हो नहीं सकता जिसे भगवान ने इतना ऊँचा

दर्जा दिया हो। इसी बीच अचानक ही उसकी दृष्टि बैलों पर पड़ी। उसने देखा कि एक कौआ हल की मूठ पर बैठा है और बैल सही दिशा में स्वत: चल रहे हैं। भीम दृष्टिवान पुरुष थे, अत: उन्होंने इस संकेत को समझ लिया।

वाग्भट्ट उठ खड़े हुए और पुन: हल चलाने लगे। भीम वाग्भट्ट से यज्ञ में सम्मिलित होने के लिए काफी अनुनय-विनय करते रहे और कई दिन पश्चात् वाग्भट्ट ने यज्ञ में शामिल होने की हामी भरी। साथ ही यह शर्त रखी कि मैं उस धरती पर अन्न ग्रहण नहीं करूँगा जो धरती मानव शोणित से रँग गई है। मेरे लिए अत्यन्त परिश्रम पूर्वक ऐसे चूल्हे पर अन्न पकाना है जिसका स्पर्श उस मिट्टी से न होता हो। भीम ने इस शर्त को स्वीकार लिया और वाग्भट्ट को लेकर हस्तिनापुर की ओर चल पड़े। तीन महीनों के बाद वे हस्तिनापुर पहुँच गए। जब श्रीकृष्ण ने वाग्भट्ट के आगमन के बारे में सुना तो वे अपने मित्रों सहित वाग्भट्ट के स्वागत के लिए आ गए। श्रीकृष्ण ने वाग्भट्ट के पैर पखारे और अत्यन्त श्रद्धापूर्वक उन्हें दरबार में लाए। जब वहाँ के ब्राह्मणों ने इस काले-कलूटे व्यक्ति को देखा तो वे खीसें निपोरने लगे। वाग्भट्ट यह सब देख रहे थे और मन-ही-मन हँसते जा रहे थे।

अश्वमेध का समारम्भ हुआ। श्रीकृष्ण ने वाग्भट्ट को ऊँचे आसन पर आसीन किया और स्वयं उनके चरणों के पास बैठ गए। यज्ञारम्भ से पहले ब्राह्मणों ने आपस में कानाफूसी शुरू कर दी। जब अग्नि प्रज्वलित करने की बेला आ गई तो एक ब्राह्मण उठ खड़ा हुआ और वाग्भट्ट से कहने लगा— "द्विजवर, अग्नि प्रज्वलित कीजिए।" "अंगारे ले आइए" वाग्भट्ट ने उत्तर में कहा। "क्या आप आग से आग जला देंगे! फिर आप में कौन-सी विशिष्टता है ? हमें विश्वास था कि आप मन्त्रोच्चारण से अग्नि प्रज्वलित करेंगे।"

"क्या आज तक किसी ने मन्त्रोच्चारण से अग्नि प्रज्वलित की है ?" वाग्भट्ट ने पूछा।

"विप्रवर! क्या दीपक राग द्वारा दीपक नहीं जलते ?"

यह सुनकर वाग्भट्ट मौन हो गए और ब्राह्मण जोर-जोर से हँसने लगे।

बात सही थी। श्रीकृष्ण खड़े हो गए और करबद्ध होकर वाग्भट्ट से कहने लगे, "महाराज, ये लोग अनजान हैं, इन पर दया कीजिए। मेरे लिए अब अग्नि को जीवादान दीजिए।" ऐसा कहते उनकी आँखों से अश्रु धाराएँ बह निकलीं जिससे वाग्भट्ट बहुत अशान्त हो गए और चीख पड़े— "भगवन्! बस कीजिए, बस मैं आपकी आज्ञा का पालन कर रहा हूँ।" यह कहते हुए उन्होंने यज्ञ-कुण्ड की समिधाओं की ओर उँगली से संकेत किया और अग्नि धू-धू कर प्रज्वलित हो उठी। चारों दीवारों की ओर इंगित किया और वहाँ से वेद-पाठ की ध्वनि ऐसे आने लगी जैसे हजारों ब्राह्मण समवेत स्वर में वेद-पाठ कर रहे हों। युधिष्ठिर एकदम उठ खडे हुए और वाग्भट्ट को चंवर डुलाने लगे।

विश्वास

कहा जाता है कि प्राचीन काल में एक तपस्वी ब्राह्मण कश्मीर में रहा करता था। परिवार बड़ा होने के कारण उनका पालन-पोषण करने में असमर्थ रहा करता था। वह रातभर अपनी तपस्या में लीन रहता था और दिनभर मेहनत-मजदूरी करने में अपने को खपा देता। जितना ही वह नम्र और अच्छे स्वभाव का था, उतनी ही इसकी पत्नी क्रुद्ध और तीव्र स्वभाव की थी, जो उसे हर समय बहुत तंग करती रहती थी। एक दिन ब्राह्मण काम ढूँढ़ने के लिए निकला पर कहीं भी काम न मिला। शाम को वह डरते-डरते आँगन में प्रविष्ट हुआ; पर ज्यों ही उसे पत्नी ने खाली हाथ आते देखा वह हाथ में 'दुकरुन'* लेकर आँगन में आई और आव देखा न ताव, पति पर प्रहारों पर प्रहार करने लगी। दूसरे दिन फिर ब्राह्मण काम की तलाश में निकला, पर इस दिन भी भाग्य ने साथ न दिया। घर पहुँचा तो वहाँ बच्चों को भूख से तड़पते देखा। यह देख उसका कलेजा मुँह को आया। करता भी क्या, अतः बच्चों को खाली पेट सुला दिया। उसे नींद कैसे आती ! सोचने लगा कि भगवान ने स्वयं कहा है कि मैं रात होने से पहले कीड़े-मकोड़ों तक के लिए अन्न की व्यवस्था करता हूँ। यदि पुस्तकों में लिखी यह बात सही है तो मेरे कलेजे के टुकड़ों के लिए अन्न की व्यवस्था क्यों नहीं हुई। इनके पेट खाली क्यों रह गए ! यह सोचने के पश्चात् वह उठ खड़ा हुआ। पुस्तक खोली। वहाँ बिल्कुल यही लिखा था। अपने आप से कहने लगा— यह ग़लत है, सरासर ग़लत! इस बात को पुस्तक से मिटाना ही ठीक है। यह कहकर कलम हाथ में ली और इस वाक्य को ही काट दिया। पुस्तक बन्द करके रख दी और लेट गया।

अगले दिन प्रातः पुनः काम की खोज में निकल पड़ा। दिन-भर काम करने के बाद कई पैसे की कमाई हुई। इन पैसों से सेरभर (लगभग एक किलो) आटा खरीदा और घर आ गया। पर ज्यों ही आँगन में पैर रखा वहाँ दूसरा ही आलम

---

* दुकरुन (कश्मीरी शब्द) वह छोटी मज़बूत टहनी जिससे चूल्हे के अन्दर की जलती उपलों की आग को चलाते थे। इसका अगला सिरा अधजला और लम्बाई गज भर (तीन फुट) हुआ करती थी।

था— हर दिशा जगमग और हर कोई काम में व्यस्त! उसे लगा शायद वह किसी दूसरे के घर में आ गया है। दहलीज़ पर नज़र पड़ी तो वहाँ उसकी पत्नी चेहरे पर चमक और अधरों पर मुस्कान लिये बाँहें उठा उसके स्वागत को तत्पर थी। जब वह दहलीज पर आया तो पत्नी ने हँसते हुए उसके मुख में मिश्री का एक ढेला डालते हुए कहा, ''आज हमारी उम्रभर की विपदा और अभाव दूर हो गए। आपके एक मित्र ने हमें इतना धन और सम्पत्ति दिया कि हम पीढ़ियों तक निश्चिन्त हो गए। प्रभु ! उसे दीर्घायु प्रदान करें और लोमष ऋषि की आयु दें।'' पत्नी की बात सुनकर ब्राह्मण सोचने लगा कि मेरा ऐसा कौन मित्र है जिसमें इतनी दातृशक्ति है ? हो-न-हो कोई भ्रम वश यह धन दे गया। कहीं मेरी पत्नी ने किसी सीधे-सादे व्यक्ति को अपनी चतुराई से तो नहीं ठगा है ? ''अरी, वह व्यक्ति था कौन ?'' ब्राह्मण ने पत्नी से पूछा।

''अजी, क्यों नाटक करते हो! जैसे कुछ पता ही नहीं! वह वही था जिसकी कल कहीं पर आपने जिह्वा काट दी है।'' पत्नी ने उत्तर दिया। ''काफी खून बह रहा था बेचारे का। कह रहा था, अपने पति से कहना कि मेरी जीभ में टाँका लगा दे जिससे खून बहना बन्द हो जाए।''

''बकवास न कर! मैंने किसकी जीभ काटी है ? मुझे पूरा-पूरा बता दे कि वह था कौन! नाम क्या था उसका ?'' पति एक साँस में बोल पड़ा।

''जब आप सुबह शहर की ओर चल पड़े तभी एक घोड़े वाला आया। उसके घोड़े की पीठ पर एक थैला था। मुझसे पूछा कि तुम्हारा पति कहाँ है ? मैंने कहा, वे काम से गए हैं। उसने कहा, यह थैला ले लो तो मैं जाऊँ। हमने थैला लिया और ऊपर की मंजिल पर इसे खाली किया, इसमें हीरे, रत्न, मोती और सोने के सिक्के थे। थैला लौटाते हुए हमने उनसे पूछा कि आप कौन हैं ? क्या नाम है आपका ? ये रत्न-हीरे आदि कहाँ से लाए ? उसने जवाब में कहा कि तुम्हारे पति का मुझ पर ऋण था। कल रात तुम लोगों के पास कुछ भी खाने को नहीं रहा होगा। तुम्हारे पति ने क्रोधीले लहजे में मुझ से तगादा किया। मेरी जुबान से जब कुछ देर के लिए बोल न फूटे तो वह उठा और मेरी जुबान काट डाली। यह कहकर उसने अपनी जीभ दिखा दी। वह कटी थी और उससे लगातार खून बह रहा था...।'' पत्नी बोलती जा रही थी। उस दृष्टिवान साधक की समझ में सारी बात आ गई और बिना घर में घुसे उन्हीं कदमों से लौट पड़ा।

''आप कहाँ चल पड़े ?'' पत्नी ने पूछा।

''उस बेचारे की जीभ में टाँका लगाने।'' पति बोल पड़ा।

चलते-चलते वह ब्राह्मण एक तपोवन में पहुँचा और फिर कभी घर न लौटा।

जोगी और किसान

बहुत पहले की बात है, एक गाँव में एक सीधा-सादा किसान रहता था। छोटा-सा ज़मीन का टुकड़ा था उसके पास। वह भी खुश्क। उसका गुजारा कठिनाई से चलता था। परिवार में काफी सारे सदस्य और धन का अभाव। जीवन से ऊबा और कर्ज़े में डूबा हुआ था। रात-दिन चिन्ता में घिरा प्रभु से प्रार्थना करता रहता था।

उसने अपने छोटे-से खेत को हल से जोत कर बीजा था और अब ढेले तोड़ रहा था। प्रभु की करनी वहाँ से एक जोगी गुज़रा। हाथ में एक अजीब एवं अनेक कोणों पर मुड़ी लाठी जैसे साँप, गर्दन में लटका झोला, कमर में घुटनों तक कपड़ा लपेटे और एक हाथ में कठौती। जोगी ने किसान के मिट्टी सने शरीर से पसीना बहते देखा। जोगी को देखकर किसान ने भी ढेला तोड़ना बन्द कर दिया तथा आश्चर्यचकित हो उसे टुकुर-टुकुर देखने लगा। जोगी ने उसे अपने पास आने का संकेत किया। किसान हौले-हौले क़दम बढ़ाता उसके समीप आया और कहा—"क्या साऽ छुख वनान (क्या कहते हो महाराज!)" जोगी बोला— "तुम्हारे पास चिलम तो नहीं ? मैं चरस का सूटा लगाना चाहता हूँ।" किसान को उसकी भाषा समझ न आई। जोगी को भी लगा कि इसे मेरी भाषा समझ में नहीं आती है, अतः उसने इशारों से चिलम पीना और धुआँ छोड़ना दिखा दिया। किसान को अब समझ आया कि जोगी हुक्का चाहता है।

किसान संकेत करते हुए जोगी को एक वृक्ष की छाया तले ले गया और वहाँ उसे अपना मिट्टी का हुक्का दिखाया। उसने हुक्का में पास ही बहती छोटी-सी कुल्या को ताज़ा पानी से भरा तथा प्रेम से जोगी के सामने रख दिया। अलाव से एक मिट्टी के टूटे बर्तन के टुकड़े पर अंगारे ले आया। जोगी यह सब देख रहा था और उसे किसान की हालत पर बहुत तरस आ रहा था। वह उसका आतिथ्य देखकर प्रसन्न भी हो रहा था। किसान ने जेब से ताँबे का एक पैसा निकाला और चिलम के छेद में डाल दिया क्योंकि चिलम का छेद बड़ा और खुला था। यह जंग लगा पैसा भी उसने अपने खेत से ही पाया था। जोगी ने चरस की एक गोली निकाली और तम्बाकू के साथ, तथा कुछ और मिलाकर, चिलम में भर दिया। चिलम पर दहकते अंगारे रख कर वह आकाश की ओर देखते हुए वह कश लगाने लगा। धुएँ के बादल उठे और जोगी की आँखें दहकते अंगारों से भी लाल हो गईं। किसान को

सम्बोधित करते हुए वह कहने लगा, ''आप गरीब है, आप गरीब है।'' किसान को इसका अर्थ समझ न आया पर गरीब शब्द सुनकर। उसने 'हाँ' में सिर हिलाया। ''हाँ गरीब सख (बहुत) है।'' इसी के साथ जोगी उठ खड़ा हुआ। किसान को हाथ से सलाम की और चलता बना। किसान ने उसे जाते हुए दूर तक देखा फिर किसान ने चिलम खाली की। जंग लगा पैसा जो पहले लाल था अब पीला यानी सोने जैसा बन गया था।

उसी समय उस ओर उस गाँव का किसान आ गया। किसान ने सुनार से कहा, ''अरे उस्ताद जी, जरा यहाँ आइए और इसे देखिए।'' किसान ने यह मजाक में ही कहा था। सुनार, जिसका नाम अहमद था, किसान के पास आया और पूछा, ''किसे ?'' किसान ने पैसा दिखाया। अहमद सुनार बैठ गया। कसौटी जेब से निकाली और पैसे को पूरी तरह देखा और कहा, ''ठीक है। शुद्ध है। क्या इसे बेचना है ?''

''जी हाँ, पैसों की आवश्यकता है।''

सुनार ने एक सौ ग्यारह रुपये निकाले और किसान को देने लगा। किसान हैरान हुआ और सुनार से कहा, ''अजी, मज़ाक क्यों करते हो ?''

''मैं मज़ाक क्यों करने लगा। लो, और पाँच रुपए देता हूँ। बस इससे अधिक न दूँगा।''

किसान को लगा कि सुनार मज़ाक कर रहा है। इस ताँबे के पैसे का इतना मोल ? जब सुनार पाँच रुपए और देने लगा तो किसान ने बिस्मिल्लाह करके पैसे लिये। सुनार उठ खड़ा हुआ और सोने का पैसा लेकर वहाँ से चल दिया।

किसान हैरान था कि जोगी ने इस ताँबे के पैसे को आन-की-आन में ही सोने में कैसे परिवर्तित कर दिया! काम छोड़ कर वह जोगी की खोज में उसी दिशा में गया जिधर वह गया था। दिन ढलने से पहले उसने एक स्थान पर जोगी को लेटे, नींद में मस्त पाया। उसे पाकर वह बहुत खुश हुआ और उसके जागने की प्रतीक्षा करता रहा। जोगी किसान को देखकर चकित हुआ। किसान उसके चरण पकड़ कर अनुनय-विनय करने लगा कि ''मुझ पर कृपा कीजिए। मैं बहुत गरीब हूँ···।'' और ज़ार-ज़ार रोने लगा।

जोगी को किसान पर दया आ गई और उसने कहा कि ''तुम्हें मेरे साथ सात दिन रहना होगा।'' किसान तैयार हो गया। फिर जोगी ने किसान को सूखी लकड़ियाँ लाने और धूनी जलाने को कहा। किसान ने तुरन्त ही इसे कार्यान्वित किया। जोगी ने भूमि में एक छेद बना दिया। इस छेद में अपनी लाठी का निचला हिस्सा घुसेड़ा और अगले भाग पर अपना माथा टिकाकर साधना करने लगा।

किसान धूनी में लकड़ियाँ डालता गया। अपने लिए थोड़ा बहुत कुछ-न-कुछ बनाता गया और दिन काटता गया। सातवें दिन जोगी द्वारा बनाये गये छेद से एकदम

एक मोटी जलधारा निकली, जिसने आसपास को जलमग्न कर दिया। किसान यह देखकर दूर भाग गया और चकित होकर देखने लगा, यह क्या माजरा है! फिर जल गायब हो गया और जोगी ने किसान को इशारों से अपने पास बुलाया। वह जोगी के पास आया। जोगी ने उसे एक गोल ठींकरा दिया और कहा, ''लो यह तुम्हारे लिए समुद्र से लाया हूँ। इसे घर में किसी सन्दूक में रखना। तुम मालामाल व आबाद हो जाओगे। एक बात का ध्यान रखना, इसे खोना नहीं।'' जोगी के अच्छी तरह से समझाने पर किसान ने ठीकरा अपनी जेब में रख लिया और जोगी से विदा लेकर घर की ओर चल दिया। मील-दो मील चलने के बाद उसे एक पीर साहब दिखे। किसान को ख्याल आया क्यों न मैं इस ठीकरा को पीर साहब को दिखा दूँ। उन्हें शायद ज्ञान होगा कि इस ठीकरा के रखने से मेरा कल्याण होगा कि नहीं। ठीकरा पीर को दिखा कर इसे प्राप्त करने का सारा किस्सा भी उन्हें सुनाया। पीर समझ गया कि इस ठीकरा में कुछ शक्ति है और किसान से कहने लगा कि इसे एक रात मेरे द्वारा भी अभिमन्त्रित करने की आवश्यकता है। किसान बहुत नादान था और पीर के कहने में आ गया। यह मुल्ला किसान का ही पड़ोसी था। घर पहुँच कर किसान ने अपनी पत्नी को सारा वृत्तान्त सुनाया।

एक दिन बीत जाने पर किसान पीर के पास ठीकरा लेने गया। पीर मुकर गया और उल्टे उससे कहने लगा कि तुम बकवास करते हो। किसान ने बहुत कुछ कहा और चिल्लाया पर किसी ने उसकी न सुनी। लोगों ने उससे कहा कि तुम पागल हो गए हो। वह बहुत पछताया और परेशान हो गया। सोच-विचार के बाद वह फिर जोगी की खोज में निकल पड़ा। पूरे एक दिन की खोज के बाद उसे जोगी मिल गया और रोते-रोते उसने सारी दास्ताँ सुना दी। किसान ने जोगी के पैर पकड़ लिए और बहुत अनुनय-विनय की। जोगी मन-ही-मन कहने लगा कि यह नादान है, ठीकरा उसके हाथ दिया!

विवश होकर जोगी ने किसान से तुरन्त आग जलाने को कहा। जोगी ने आग में अपना चिमटा लाल सुर्ख कर दिया और पूरी शक्ति से उसे जमीन में गाड़ दिया। चिमटे के गड़ते ही पीर जोगी के पास धड़ाम से गिर गया। जोगी ने उससे कहा, ''अरे कमीने, तुमने इस सीधे-सादे इनसान को क्यों लूट लिया ? यह बेचारा गरीब और अभावग्रस्त है।'' पीर पर जैसे वज्रपात हो गया और वह लाहौल विल्लाह··· पढ़ने लगा। जेब से ठीकरा निकाल के दिया और बाल-बाल बच गया। किसान ने अपना ठीकरा लिया और जोगी से विदा लेकर चल दिया। पीर को दण्ड मिला कि वह पूरे एक महीने तक जंगल से अलाव के लिए सूखी लकड़ियाँ इकट्ठी करके लाए, तभी उसकी जान बख्श दी जाएगी। किसान एक महीने में ही अपने क्षेत्र का बड़ा व्यापारी बन गया। मुल्ला जब लौटा तो हैरान हो गया और पछताया। वह किसी को भी मुँह दिखाने लायक नहीं रहा था।

भैंस के कानवाला राजा

एक था राजा। नाम था माडकुन। यह सलोना, नवयौवन सम्पन्न और भला था। प्रजा उस पर प्रसन्न थी। वह उसे प्यार से माडकुन राजा कहती थी। उसका मन्त्री बहुत ही दुष्ट और बुरे विचारों का था। वह जनता में राजा के प्रति घृणा फैलाकर स्वयं सिंहासन पर बैठना चाहता था। 'यह कैसे सम्भव होगा' वह सोचने लगा। आखिर में मंत्री के दिमाग में एक बात आ गई। राजा कुँवारा था। मन्त्री ने उसे नाच-गानों में लगाया। मदिरापान और पापकर्मों का अभ्यस्त बना दिया। राजा को यह पापमय जीवन भाने लगा। राजा प्रजा को भूलकर पापकर्मों में ही लगा रहता। देश में अराजकता फैल गई। मन्त्रियों और सभासदों ने जनता पर काफी जुल्म ढाए। जनता राजा के पास दुहाई देने गई पर वह अपने ही ऐशोआराम में मस्त था।

एक दिन राजा शिकार खेलने चल पड़ा और एक जंगल में पहुँच गया। वहाँ उसने एक हिरणी देखी और घोड़ा उसी के पीछे दौड़ा दिया। हिरणी के पीछे घोड़ा दौड़ाते-दौड़ाते वह बहुत दूर निकल गया। शिकार करके जब यह वापस आने लगा तो रास्ता भूल गया। राजा बहुत ही सघन जंगल में पहुँच गया। न आगे बढ़ सकता था न पीछे। जंगली जानवरों की आवाज़ें चारों ओर से आ रही थीं। अँधेरा छाने लगा और राजा भयाक्रान्त होने लगा। दाएँ-बाएँ देखने के बाद उसने दूर एक पहाड़ की चोटी पर प्रकाश की धीमी-सी किरण देखी। उसकी तेज़ धड़कन कुछ शान्त हुई। घोड़ा को वहीं छोड़ वह धीरे-धीरे व डरते-डरते उस स्थान पर पहुँच गया। उसने एक कुटिया में दीया जलते देखा। दम साधा और खाँसने-खूँसने के बाद द्वार पर दस्तक दी। शीघ्र ही एक महिला ने खिड़की से झाँका। राजा ने जब उसे देखा तो मन्त्रमुग्ध-सा देखता ही रह गया! वह जैसे इन्द्र सभा की कोई अप्सरा थी। उसके चेहरे से आभा की किरणें उठ रही थीं। राजा ने कहा, ''मैं एक यात्री हूँ। मुझे रात के लिए शरण चाहिए। इस सुनसान जंगल में रात गुजारने के लिए कोई स्थान नहीं है।''

''जगत् नियन्ता की जगह और भाग्य के दाने— इनकी माँगें नहीं करते। जो कुछ मेरे पास तैयार है वह मैं प्रस्तुत करूँगी। परन्तु रात को मैं कुटिया के अन्दर रख नहीं सकती। मैं इस कुटिया में अकेली हूँ। मेरे पति पूर्णिमा स्नान के लिए कुठियार गए हैं। यदि वे देर से भी आए तो अन्दर रहोगे, यदि वे नहीं आते तो तुम्हें

रात दालान में गुजारनी पड़ेगी।'' राजा इस रति से भी सुन्दर नारी का कथन सुनकर प्रसन्न हुआ। नारी के अकेलेपन ने उसके अन्दर के सुप्त पापी को जगा दिया। पर बाहर से वह साधु बना रहा और दालान में लेट गया। आधी रात हुई, गृहस्वामी भी नहीं लौटा। राजा अपने रंग में आने लगा। उसने द्वार को धक्का मारा। अन्दर से साँकल चढ़ी थी, इसलिए उसके दिमाग में दूसरा विचार आया। वह छत पर चढ़ गया। एक फट्टा उठा कर कमरे में कूद पड़ा। अन्दर वह सलोनी अपनी साधना में लीन थी। कूदने की आवाज़ से उसका ध्यान साधना से हट गया। आँखें खोलीं और यात्री को कमरे में देखकर बोली, ''हे राजा! तुम कितने कुकर्मी हो, जिस वृक्ष ने तुम्हें छाया प्रदान की उसी की जड़ें काटते हो ! होश में आ जाओ ! आगे नहीं बढ़ना !'' पर अन्धा बैल सही रास्ते पर कैसे चले ! राजा ने आव देखा न ताव और उसके पास आकर उसे पकड़ने का यत्न करने लगा। त्यों ही उस महिला के इर्द-गिर्द आग की ज्वालाएँ प्रकट हुईं। राजा मन्त्रकीलित-सा खड़ा रह गया। कुछ क्षणों के बाद वह कमरे से बाहर आया। लपटें तेज़ हुईं और उस सुन्दरी के शरीर को भस्म करने लगीं। राजा भयभीत हो वहाँ से भाग निकला। भागते-भागते उसने ये शब्द सुने, ''जा तुझे इसका फल मिल जाएगा !''

पौ फटने पर राजा अपने शहर के समीप पहुँच गया। वह बहुत थका हुआ था। उसने एक वृक्ष की छाया में विश्राम किया। बैठते ही उसे नींद आ गई और घोड़े बेच कर सो गया। जब उसकी आँख खुली तो दिन काफी ढल चुका था। वह तुरन्त उठ खड़ा हुआ और शहर की ओर चल दिया। जब वह शहर में प्रविष्ट हो गया तो उसकी आँखों तले अँधेरा छाने लगा। समूचा शहर उसके पीछे चलने लगा। कोई कहता था यह कोई प्रेत है, कोई उसे भूत कहता था, कई लोग यह कहते कि शहर में कोई दैत्य आ घुसा है। माताओं ने बच्चों को छिपा के रखना शुरू कर दिया। कुत्तों ने उसे देख रोना प्रारम्भ कर दिया।

राजा इस बात पर चकित था कि मुझे क्या हो गया है! क्या मैं कल का राजा नहीं हूँ ? बाजार में किसी लड़के ने उस पर पत्थर चलाया जिससे उसके चेहरे से खून टपकने लगा। उसने चेहरे को हाथ लगाया और हैरान रह गया। उसके चेहरे की बनावट ही बदल गई थी। चेहरे पर घोड़े के अय्याल सरीखे बाल उग आए थे। एक जगह पहुँच कर उसकी नज़र एक दर्पण पर पड़ी। उसके पैरों तले की मिट्टी खिसक गई। उसने देखा कि उसके कान की जगह भैंस का कान उग आया है और चेहरे पर चितकबरे घोड़े की दुम जैसे लम्बे बाल आ गए हैं। आँखें अन्दर धँस गई हैं और नाक व मुँह बन्दर के मुँह जैसा हो गया है। वह स्वयं को नहीं पहचान पाया। चारों ओर से लोग इकट्ठा होने लगे। इतने में राजा के सिपाही आ गए। उन्होंने उसे रस्सों से बाँध लिया और कारागृह ले गए। दूसरे दिन जब उसे दरबार में लाया

गया तो मन्त्रियों और दरबारियों ने निर्णय दिया कि इस बला ने हमारे राजा को मारा है और उसके वस्त्र स्वयं पहन लिए हैं, इसलिए इसकी हत्या तुरन्त कर देनी चाहिए। राजा ने जब यह निर्णय सुना तो उसे बचने की कोई आशा न रही! अभी भी उसकी ज़िन्दगी के पाँच दिन शेष थे, कारण कि इस देश का यह नियम था कि सज़ा सुनाने के पाँच दिन बाद ही अपराधी को फाँसी पर चढ़ाया जाता था। कैद में राजा बचने की कोई युक्ति सोचने लगा। सोचते-सोचते उसे एक विचार आया। दूसरे दिन जब जेल का एक कर्मचारी उसके लिए भोजन लेकर आया, वह किवाड़ के पीछे छिप गया। ज्यों ही नौकर अन्दर घुसा, राजा उस पर टूट पड़ा। उसका मुँह बन्द कर चित कर दिया और उसे रस्सी से बाँध कर उसके कपड़े उतारे। इन कपड़ों को पहन कर, टोकरी सिर पर उठाकर तथा सिर पर रूमाल बाँधकर बाहर आ गया। किसी को सन्देह न हुआ। भागते-भागते राजा एक जंगल में पहुँच गया। यहाँ वह एक गुफा में छिप गया। दिन के उजाले में गुफा में ही छिपा रहता और रात के अँधेरे में बाहर निकलकर जंगली फल तोड़कर खाता और इसी तरह दिन गुजारता। सख्ती और मुसीबत वह अधिक समय बरदाश्त न कर सका। वह दिन-ब-दिन कमजोर होता गया। आँखों की रोशनी कम होने लगी। जब गुफा में बहुत समय तक रहने से उसके बाल लम्बे हो गए और उसके कान बालों के नीचे छिप गए तब मुँह पर राख मलकर राजा साधु के वेश में गुफा से बाहर आ गया। अब वह गाँवों तथा शहरों में घूमने लगा। कभी कोई दाता उसे खिलाता और कभी वह खाली पेट ही सो जाता। दिन में साधु बनकर घूमता और रात में आँखों से गंगा-जमुना बहाता। एक दिन राजा अपने शहर पहुँचा। अपने महल को जी भर देखा! दिल में कटारें उतरने लगीं! उसाँस भर आगे निकल पड़ा।

आधी रात को राजा आसमान को एकटक देख रहा था। कहीं से एक साधु अपने में मस्त गाना गाता हुआ आया—

भैंस के कान हैं माडकन राजा के
कुठियार वन जब पहुँचेंगे वे
पापी काया को रगड़-रगड़ जब साफ करें
तभी भैंस के कान गाइब हो जाएँगे।

राजा सोच में पड़ गया जैसे उसने कोई आकाशवाणी सुनी हो! उसका मन कुठियार जाने को मचला। अश्रुधार बह निकली। सूर्योदय होने पर यह कुठियार वन की ओर चल पड़ा।

जब राजा अच्छाबल* पहुँचे तो यहाँ से यह घुटनों के बल कुठियार तक आया।

---

* कश्मीर के एक स्थान का नाम।

जंगल में घिसटते-घिसटते राजा का सारा शरीर रक्त-रंजित हो गया। जब राजा कुठियार पहुँचा तो काफी थका था। चश्मे के किनारे पर बैठते ही उसे नींद आ गई। उसने एक सपना देखा। उस तपस्विनी को इसने एक भव्य नौका में देखा। इस नाव को देवता खे रहे थे। इस तपस्विनी की दृष्टि राजा पर गई और उसने नौका को रोकने के लिए कहा। राजा माडकन इसके पास रोते-रोते आया और चीखा, ''देवि! मुझ पर क्षमा कीजिए! मेरे पापों की ओर न देखिए!'' राजा खून के आँसू रोने लगा। इस तपस्विनी ने हाथ में तनिक जल लिया और इसे राजा के चेहरे पर फेंक दिया और इसी के साथ सपना समाप्त हुआ! पानी की छींटों से राजा को जाग आ गई। उसने वृक्ष पर एक घड़ा देखा। इसी में से पानी की एक-एक बूँद उसके चेहरे पर गिर रही थी। इस पानी से उसका मुँह धुल गया था। उसने चेहरा पोंछा। उसका हाथ जब कान की ओर गया तो देखा कि कान उसके अपने कान में परिवर्तित हो गया है। चश्मे के पानी में अपना प्रतिबिम्ब देखा और पाया कि उसकी अपनी शक्ल आ गई है। भगवान के प्रति धन्यवाद ज्ञापन किया और अपने पापों के लिए क्षमा माँगी। मन अपार हर्ष से भर गया। आँसू छलके।

काफी समय बीत जाने पर राजा अपने शहर लौटा। जनता ने जब अपने भूपति को देखा वे फूले न समाये। प्यार-भरा स्वागत दिया। शहर में दीपमाला हुई और राजा फिर सिंहासन पर बैठ गया। सिंहासन पर बैठते ही राजा ने मन्त्री को फाँसी देने की आज्ञा दी।

कर्म या धर्म

एक ब्राह्मण निपूत होने के कारण बहुत ही दुखी था। वह पुत्र-प्राप्ति के लिए रात-दिन भगवान से प्रार्थना करता रहता, काफी दान-पुण्य करता और मन्दिरों में जाकर चढ़ावा चढ़ाता। यह सब वह इस आशा से करता कि उसकी पुत्र-प्राप्ति की इच्छा पूरी होगी। अन्त में भगवद्कृपा से उसकी पत्नी ने एक पुत्र को जन्म दिया। घर में काफी खुशियाँ मनाई गईं और गरीबों को बहुत दान दिया गया।

जब यह लड़का बारह वर्ष का हुआ, तो उसे एक पाठशाला में भर्ती किया गया। इसके बाद उसके पिता का देहान्त हो गया। पिता की मृत्यु के बाद लड़का भी बहुत बीमार पड़ गया, इतना बीमार कि उसके बचने की कोई आशा बाकी न रही। यह समय उसकी माँ के लिए काफी कष्टदायक था। उसके पति का देहान्त अभी-अभी हुआ था और अब उसका इकलौता बेटा मरणासन्न था, ''हे प्रभु, दया कीजिए और मेरे पुत्र को बचाइए।'' वह लगातार प्रभु से विनती करती रही।

उसकी विनती स्वीकार हुई— उसके घर एक जोगी आया और उससे बोला, ''यदि तुम मेरे आदेशानुसार चलोगी तो तुम्हारा पुत्र बच जाएगा। कुछ मछलियाँ लेकर आओ और उन्हें शीघ्रातिशीघ्र पका दो।'' मछलियाँ लाकर, पकाकर उन्हें जोगी के सामने परोस दिया।

''ठीक है।'' जोगी ने कहा। उसने मछलियों को तीन हिस्से में बाँटा। एक हिस्सा स्वयं खाया। दूसरा हिस्सा ब्राह्मणी को दिया और तीसरा हिस्सा अभिमन्त्रित करने रोगी को दिया। मछलियाँ खाने के बाद लड़का स्वस्थ हो गया।

माँ ने लड़के को स्वस्थ होते देखा तो वह जोगी के प्रति अति कृतज्ञ हो जोगी को दण्डवत् प्रणाम किया और प्रार्थना की कि वे उन पर सदा ही ...व दर्शाते रहें। वह श्रद्धाविभोर होकर जोगी से साथ ही रहने की प्रार्थना ...गी। कहने लगी, ''आपको साक्षात् परमेश्वर ने हमारी सहायता को भेजा है। आप हम पर दया करें जिससे हमारी मनोकामनाएँ पूर्ण हों।''

''भय त्यागो, तुम्हारा भविष्य सुन्दर होगा। सारा भय त्याग दो।'' जोगी ने कहा।

कुछ दिनों के पश्चात् जोगी ने लड़का की आँखों पर थोड़ी-सी भभूत मली, लड़का के पंख निकल आए और वह पक्षियों की तरह उड़ने लगा। इसके पश्चात्

जोगी ने लड़का से कहा, "जाओ, राजकोश में खिड़की के रास्ते प्रविष्ट हो जाओ और वहाँ से इतना धन ले आओ, जितना तुम उठा सको।" लड़का ने आज्ञा का पालन किया और इतना धन लाया जितना उनके लिए मृत्युपर्यन्त पर्याप्त था।

जब राजा के अधिकारियों को चोरी का पता चला तो उन्हें बहुत तकलीफ हुई। वे बहुत उदास होकर राजा के पास गए और सारा हाल सुनाया। उन्होंने हर तरीके से चोरी का पता लगाने की कोशिश की पर नाकाम रहे। तब जोगी राजा के पास गया। उसकी अधिकारियों के प्रति अप्रसन्नता तथा राजा का क्रोध देखकर जोगी राजा से कहने लगा, "मैं आपको चोर पकड़ कर दूँगा। आप विश्वास रखिए। केवल आप अमुक स्थान पर अपने लोगों को धुआँ पैदा करने की आज्ञा दीजिए।"

राजा ने नियत स्थान पर धुआँ पैदा करने की अजीब-सी आज्ञा दे दी।

अपने घर के पास ही धुएँ और ज्वालाओं को देखकर लड़का उसके निकट गया और वहाँ कुछ देर खड़ा रहा। धुआँ काफी था, अतः लड़का, अन्य दर्शकों की तरह ही, आँखें मलते हुए कुछ दूरी पर खड़ा रह गया। आँखें मलने से उसकी आँखों पर की भभूत उठ गई। उसके पंख गायब हो गए और पहचाना गया! "वह देखो चोर! वह देखो चोर!" जोगी राजा की ओर देखकर चिल्लाया क्योंकि राजा और जोगी दोनों वहीं पर अन्य लोगों के साथ खड़े थे।

लड़का और उसकी माँ को उनके घर से निकाल दिया गया। वे भीख माँगने पर विवश हो गए। वे गली-गली घर-घर तब तक भीख माँगते रहे जब तक कि एक बनिया ने उन पर तरस खाकर लड़का को अपने यहाँ नौकरी न दे दी।

एक दिन वहाँ के राजा ने अपनी पुत्रियों से प्रश्न किया कि बताओ कर्म बड़ा है कि धर्म ?

राजा की छोटी लड़की ने पहले उत्तर दिया, "कर्म"। बड़ी ने कहा, "धर्म"।

जब राजा ने दोनों के उत्तर सुने तो छोटी लड़की पर इतना नाराज हुआ कि उसकी शादी बनिया के उसी गरीब नौकर के साथ कर दी जिसने उसके खजाने की चोरी की थी। "तुमने उत्तर दिया, अब तुम अपने कहे शब्दों का प्रमाण देख लो।" राजा ने कहा।

राजकुमारी के लिए यह अत्यन्त दुखदायी अनुभव था कि वह दिनभर चर्खा काते और अपनी तथा अपने गरीब पति की तुच्छ कमाई से प्राप्त थोड़े से मोटे अनाज से पेट की आग शान्त करे। किन्तु वह 'कर्म' पर विश्वास करती थी और जानती थी कि एक न एक दिन वह सुखी जीवन व्यतीत करेगी। वह ईश्वर से निरन्तर प्रार्थना करती रही तथा शान्तिपूर्वक प्रतीक्षा करती रही। यह उसके लिए कठोर परीक्षा का समय था।

एक दिन उसका विश्वास और श्रम रंग लाया। उसके देश में एक ऐसा जलाशय

था कि जो भी उसके पास जाता अन्धा हो जाता। एक दिन बनिया इस ब्राह्मण लड़का से किसी बात पर नाराज हो गया और उसे उसी जलाशय से पानी लाने के लिए भेज दिया। लड़का को जलाशय की विशेषता के बारे में मालूम न था। वह जलाशय की ओर बढ़ता गया। ज्यों ही वह जलाशय के निकट पहुँचा उसने एक आवाज़ सुनी—

''अरे बेटे, मुझे तुम पर दया आ रही है! क्या तुम्हें पता नहीं कि जो भी यहाँ आता है, अन्धा हो जाता है ?''

''मुझे मालूम नहीं। मेरे स्वामी ने मुझे यहाँ पानी लाने के लिए भेजा है।'' लड़का ने उत्तर दिया।

''क्रूर आदमी है वह! उसे तुम्हारे प्रति कुछ दया नहीं है। मैं तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा। अपना पात्र भर लो, और वहाँ से थोड़ी रेत उठा कर अपने ओढ़ने के वस्त्र के एक कोने में बाँधो। पर, तब तक उसे खोलना नहीं जब तक कि घर न पहुँचो।'' इतना कहकर आवाज़ रुक गई।

लड़का दुकान पर पहुँचा। उसने जल-भरा पात्र स्वामी को थमाया। स्वामी ने उसे इस सेवा के बदले कुछ पैसे दिए। बनिया ऐसा कभी न करता, पर उसे मालूम था कि कुछ देर बाद ही यह लड़का अन्धा हो जाएगा और ये पैसे उसके काम आ जाएँगे।

रात को लड़का घर गया।

''देखो, बनिया ने मुझे कुछ पैसे दिए हैं। मुझे उसकी इस उदारता का कारण पता नहीं चलता परन्तु मुझे तुम्हें एक अजीब बात बतानी है। जब मैं जलाशय के निकट बनिया के लिए पानी लाने पहुँचा तो मैंने एक आवाज़ सुनी, जिसने मुझे किनारे से थोड़ी रेत उठाने तथा अपने ओढ़ने के वस्त्र के कोने में बाँधने के लिए कहा और साथ ही यह भी कहा कि मैं तब तक इसे न खोलूँ जब तक कि मैं घर न पहुँच जाऊँ।''

यह सुनकर उसकी पत्नी ने रेत को उसके ओढ़ने से खोला। रेत नीचे फर्श पर बिखर गई और अमूल्य पत्थरों में परिवर्तित हो गई!

''कर्म बड़ा है! कर्म बड़ा है! कर्म बड़ा है! मेरा इस पर व्यर्थ का विश्वास नहीं है।'' उसकी पत्नी चिल्ला उठी।

इसके पश्चात् ब्राह्मण-ब्राह्मणी धनवान बन गए। समय आने पर ब्राह्मण ने बनिया की नौकरी छोड़ दी। ब्राह्मण ने उचित समय पर अपने धन-प्राप्ति का रहस्य अन्य लोगों के सामने उद्घाटित किया ताकि उस पर कोई शक न किया जा सके। जब यथा समय उसने देश में एक प्रभावशाली स्थान बना लिया तब उसने नगर के गण्यमान्य व्यक्तियों को खाने पर निमन्त्रित किया। राजा से भी इस अवसर पर

पधारने के लिए प्रार्थना की गई और उन्होंने इस निमन्त्रण को स्वीकार किया। यह एक असाधारण भोज्य था। कई दुर्लभ वस्तुएँ परोसी गईं। अत्यन्त सुगन्धित इत्र छिड़के गए। सभी दिशाओं से अत्यन्त मनोहर संगीत और गायन की ध्वनि प्रसारित की गई। सभी अतिथियों के मनोरंजन और सुविधाओं का ध्यान रखा गया। राजा बहुत ही अच्छी व्यवस्था से काफी प्रभावित एवं प्रसन्न हुआ।

इस भोज में राजा के लिए उसकी लड़की बारी-बारी से खाद्य पदार्थ लाती रही पर राजा अपनी बेटी को पहचान न सके। क्योंकि उसमें विवाह के बाद कई परिवर्तन आए थे और इसके अतिरिक्त जब भी वह राजा के लिए कोई व्यंजन या पकवान लाती तो हर बार अपनी वेशभूषा बदलती।

अन्त में जब राजा जाने को थे वह उनके पास गई और कहा कि वह उनकी छोटी बेटी है जिसका विवाह उसने एक बनिया के गरीब नौकर के साथ किया था। "पिताजी, अब मुझे बताइए कि क्या कर्म धर्म से बड़ा नहीं है ? मेरे पति की धन-सम्पत्ति देखिए। समूचे देश में आपको छोड़कर, इतना धन एवं सम्पत्तिवान कोई नहीं जो मेरे पति की बराबरी कर सके।"

यह सुनकर और बनिया के नौकर की मेहनत का अन्दाजा लगाकर राजा अपनी गलती को मानने पर विवश हुए। उन्होंने अपनी पुत्री को गले से लगाया और वचन दिया कि मैं तुम्हारे पति को अपना समूचा राज्य दे दूँगा क्योंकि तुम लोगों ने कर्म की श्रेष्ठता को अपने अथक कर्मों से सिद्ध कर दिया है।

हियमाल* नागराज

शुप्पयाँ क्षेत्र का एक गाँव। नाम बलावीर। इस गाँव को आजकल कहते हैं बलपूर। इस बलपूर का मन्त्री शीरमाल का रहने वाला था। यह गाँव भी शुप्पयाँ क्षेत्र में ही है। मन्त्री का नाम सदाराम था। धन एवं सम्पत्तिवान थे सदाराम, पर उनकी कोई सन्तान न थी। एक दिन सदाराम राजदरबार से लौट रहे थे कि रास्ते में उसे एक बुढ़िया मिली। ''मैं तुम्हारे घर आ जाऊँ ?'' बुढ़िया ने सदाराम से पूछा। ''तुम हो कौन ?'' सदाराम ने पूछा। ''मैं विपदा हूँ।'' बुढ़िया ने उत्तर दिया। ''मैं घर से अपनी पत्नी से पूछ के आता हूँ। देखें उसकी क्या राय होगी।'' सदाराम ने बुढ़िया से कहा।

सदाराम जब घर पहुँच गया तो उसने अपनी पत्नी से सारी बात कही। सदाराम की पत्नी ने सोच-विचार के पश्चात् कहा, ''आप जाइए और उसे हाँ कर दीजिए।'' सदाराम की पत्नी ने यह सोचकर 'हाँ' कहने के लिए कहा था कि अभी वे युवा हैं, कोई विपदा आती है तो झेल सकेंगे, नहीं तो बुढ़ापा कठिनाई में गुज़ारना पड़ेगा।

सदाराम बुढ़िया के पास गया और उसे घर आने के लिए कहा। जब वह घर लौटा तो उसे घर में हर वस्तु का अभाव दीखा! उसके घर को हर ओर से दरिद्रता ने घेर लिया था।

सूर्य कब का उदित हो चुका था, पर सदाराम अभी सो ही रहा था।

कई दिनों के बाद एक त्योहार आया। इस त्योहार पर मेला लगता था। यात्रा लगती थी। सदाराम से पत्नी कहने लगी, ''सुनिए, क्यों न आप भी इस यात्रा से हो आएँ ? हो सकता है प्रभु हमारा दारिद्र्य दूर कर दें।''

''खाली हाथ कैसे जाऊँ ? क्या करूँ!'' सदाराम ने उत्तर दिया।

''जिस वस्तु की आपको जरूरत हो, वह मैं देती हूँ, आप बस चले जाएँ, चले

---

* अंग्रेजी अनुवादकों ने 'हियमाल' को 'हीमाल' बना दिया है और उन्हीं की देखा-देखी कई हिन्दी अनुवादकों ने भी इसी रूप में स्वीकारा है जो गलत है। 'हिय' कश्मीरी में एक पुण्य विशेष का नाम है और 'माल' माला या हार को कहते हैं। इसी तरह कश्मीरियों में महिलाओं के नाम 'ग्वंगॅमाल' और 'पोशिमाल' आदि नाम होते थे।

ही जाएँ।'' पत्नी ने कहा।

पत्नी ने सदाराम को मुट्ठी भर सत्तू, सेर भर चावल और पाव भर मूँग दे दिया, और सदाराम यात्रा पर निकल पड़ा। चलते-चलते वह तारबल, शुप्पयाँ का एक गाँव, पहुँचा। तारबल पहुँचते ही वर्षा होने लगी। मूसलाधार वर्षा देखकर सदाराम रुआँसा होकर कहने लगा—

''तारबल पहुँचते ही ज़ोरदार वर्षा होने लगी! मेरे प्रभु! चलते-चलते बहुत थक भी गया हूँ! शरीर टूटने लगा है। काँगड़ी* की आग भी अब बुझ गई है, कोई गर्मी नहीं अब काँगडी में, क्या करूँ मैं ? कहाँ जाऊँ ?''

तारबल में ही सदाराम का एक मित्र रहता था। सदाराम ने दिल में ठान लिया कि अब मैं मित्र के घर ही जाऊँगा। इस मित्र का नाम था गोविन्दराम। सदाराम ने गोविन्दराम की समय-असमय सहायता भी की थी। सदाराम मित्र के घर की ओर चल दिया। रास्ते में ही उसने अपने मित्र को देखा। वह उस समय अपने एक खेत में (जो रास्ते के किनारे के साथ ही था) हल जोत रहा था। गोविन्दराम की दृष्टि जब सदाराम पर पड़ी तो वह मन-ही-मन सोचने लगा कि हाय! कहीं मेरे बैल सदाराम को देखकर बिदक न जाएँ— क्योंकि सदाराम फटे हुए चीथड़े पहने हुए था। गोविन्दराम ने बैल दूसरी ओर मोड़ लिए। इसी मध्य उसकी पत्नी उसके लिए भोजन लेकर आ गई। गोविन्द राम सदाराम की ओर अपनी पीठ कर बैठ गया और भात की भरी थाली चट कर गया। उसकी पत्नी अभ्यागत को घूर-घूर के देखने लगी और पहचान ही लिया। ''यह व्यक्ति सदाराम तो नहीं है ?'' उसने पति से पूछा।

''इस व्यक्ति से कोई बात न करना नहीं तो ये बैल मारे डरके भाग खड़े होंगे।'' गोविन्दराम ने कहा।

''क्या आप उन दिनों को भूल गए जब ये हमारी सहायता करते रहे ?'' पत्नी बोली। इधर सदाराम एक-एक पग उनकी ओर बढ़ाता रहा और उनकी सारी बातें स्पष्ट सुनता रहा। उनके बिलकुल निकट पहुँच कर कहने लगा, ''मित्र, गोविन्द-राम! बीती बातें क्यों भूल गए तुम ? वह बीता हुआ समय तुम्हें याद क्यों नहीं ?''

आखिर गोविन्दराम की पत्नी ने सदाराम को बाँह से पकड़कर अपने घर में प्रवेश कराया। इस समय खाने के लिए घर में कुछ भी नहीं था। वह खीर पकाने लग गई। सदाराम एक खम्भे की टेक लगाए बैठा रहा। गोविन्दराम की पत्नी ने

---

* काँगड़ी=एक विशेष प्रकार की परितापनी जिससे कश्मीरी जाड़ों में तापते हैं।
सम्पूर्ण परिचय के लिए लेखक द्वारा रचित एवं यात्री प्रकाशन द्वारा प्रकाशित 'कश्मीरियत : संस्कृति के ताने-बाने' पढ़िए।

अपना मोतियों का हार सदाराम के हाथ में दिया और कहने लगी, ''भाई साहब, तनिक ये हार से टूटे मोती हार के धागे में पिरोइए। जिस खम्भे से सदाराम टेक लगाए था उस पर एक चित्र टँगा था। इसी क्षण चित्र सप्राण हो उठा और मोतियों का हार निगल गया। सदाराम असहाय माथा पीटने लगा। गोविन्दराम की पत्नी खीर को ठण्डा करने के लिए थाली में डालने लगी। इतने में कहीं से एक पक्षी उड़ता हुआ आया और खीर को जूठा कर गया। गृहस्वामिनी ने उस खीर को बाहर फेंक दिया और नई खीर बनाने लगी। जब पतीला चूल्हे पर चढ़ाया तो उसकी दृष्टि सदाराम पर गई जो मुँह लटकाए चिन्ताकुल बैठा अपना माथा पीट रहा था। कारण पूछा। उत्तर मिला, ''भाभी क्या कहूँ! यह चित्र आपका दिया मोतियों का हार निग़ल गया!'' यह सुनकर गृहस्वामिनी मन-ही-मन सोचने लगी, 'बेचारे को विपदा का सामना है। वैसे हम इसके ऋणी हैं। चलो, इसी बहाने कुछ नहीं तो हार ही ले गया।' और सदाराम से कहने लगी, ''बला मारिए जी, इस हार को।''

एक दिन गोविन्दराम की पत्नी सदाराम से कहने लगी, ''देवर जी, जर्रा आप हल-बैल लेकर जाएँ और लौटते समय साग-सब्जी तथा लकड़ियाँ ले आएँ।'' सदाराम ने हामी भरी और हल-बैल लेकर चला गया। गोविन्दराम की पत्नी ने यह सोचकर सदाराम को भेजा था कि बाज़ार में तो इसे साग-सब्जी और लकड़ियाँ मिलेगी ही नहीं और यह डरकर वहीं से भाग जाएगा।

सदाराम जब हल-बैल लेकर चला तो वहाँ दोनों बैल सींग लड़ाने लगे और हल के टुकड़े-टुकड़े हो गए। सदाराम ने ये टुकड़े लकड़ियाँ मानकर इकट्ठी की और लौट आया। गोविन्दराम की पत्नी ने उसे यह कहकर घर लौट जाने को कहा कि वहाँ उसकी पत्नी उसकी प्रतीक्षा में होगी। उसने सदाराम के बाल कटवाए, कपड़े बदलवाए और उसे सत्तू की पोटली देकर विदा किया।

सदाराम वहाँ से चल पड़ा। चलते-चलते वह पोटली से सत्तू निकाल-निकाल कर खाता जाता और रास्ता तय करता जाता। वह घर की तरफ नहीं अपितु किसी दूसरी तरफ चल दिया। चलते-चलते एक स्थान पर पहुँचा। यहाँ एक चश्मा था। चश्मा के साथ ही एक बुइन (चिनार) था। यह चश्मा नाऽग्यराय (नागराज) का था। सदाराम चश्मा के किनारे बुइन के नीचे सुस्ताने के लिए बैठ गया। उसने अपनी थैली एक ओर रख दी और शीघ्र ही उसे नींद पड़ गई। जब आँख खुली तो क्या देखता है कि उसकी थैली में एक साँप घुसता जा रहा है। उसे तुरन्त विचार आया कि मुझे पत्नी हर वक्त परेशान करती रहती है, अब उसे इसी साँप से डसवाता हूँ। साँप जब पूरी तरह से थैली में घुस गया तो सदाराम ने थैली के मुँह को बन्द कर दिया और उसे अपनी लाठी से लटकाकर व लाठी को कन्धे पर रख कर घर की ओर चल पड़ा ? घर के दरवाजे पर पहुँचकर उसने आवाज़ लगाई, ''अरी ओ

भागवान! तनिक शीघ्रता से ठाकुरजी के कमरे को लीप ले, लक्ष्मी आई है लक्ष्मी !'' सदाराम की पत्नी ने जब पति की आवाज़ सुनी तो उसने खिड़की से झाँककर देखा कि सदाराम के कन्धे पर धरी लाठी के साथ भरी थैली है। वह दौड़ती आई और पति से थैली लेकर कमरे में चली गई। जब वह अन्दर चली गई तो सदाराम ने बाहर से कुण्डी लगा दी। सोचा—जब यह थैली खोलेगी, साँप निकलेगा, उसे काटेगा और मैं जन्म-भर की परेशानी से मुक्त हो जाऊँगा! कमरे के अन्दर जब सदाराम की पत्नी ने थैली का मुँह खोला तो थैली में एक राजकुमार था ! सारा कमरा प्रदीप्त हो उठा। सदाराम की पत्नी पति को बुलाने लगी, ''पति देव ! आइए ! घर में लक्ष्मी आई है! वारी जाऊँ मैं इसके! इसे पालने में झुलाऊँगी मैं !''

सदाराम ने उत्तर दिया—''अऽथ्यदाऽर्य बुछनय! म्यानि अऽछ मुं वुछ नय ! (याने नहीं आऊँगा मैं। नाग डसता है तो डसे तुम्हें! मैं एक नज़र भी नहीं देखूँगा तुम्हें!''

कमरा से बच्चा की रोने की आवाज़ आने लगी!

सदाराम आश्चर्यचकित हो उठा! यह शिशु के रोने की आवाज़ कैसी! कमरा खोलकर अन्दर घुसा तो देखा बेतरतीब पड़े बर्तन करीने से रखे हैं! पत्नी अप्सराओं की-सी वेशभूषा में है! उसने शिशु को गोद में उठा लिया। इस सब पर विश्वास ही नहीं आ रहा था उसे! प्रभु ने उस 'नाग'* याने चश्मे के किनारे सदाराम पर दया की थी, अत: शिशु का नाम 'नाऽग्यराय' याने नागराज रखा गया!

कालचक्र घूमता गया। नागराज बढ़ता गया। एक दिन नागराज ने सदाराम से कहा, ''मुँहबोले पिता, दूध दीजिए मुझे।'' सदाराम ने उत्तर दिया, ''मुँह बोला पिता तुम्हारी बलिहारी बेटे! वह भी समय था जब मेरे पास बारह सौ गाएँ थीं, पर आज एक भी नहीं। दूध कहाँ से लाऊँ ?'' नागराज ने कहा—''उठाइए इन बर्तनों के ढक्कन!'' सदाराम ने बर्तनों से ढक्कन हटा दिए तो देखता है कि सभी बर्तन दूध से लबालब भरे हैं! अगले दिन सदाराम को महाराज का बुलावा आ गया। वह राजदरबार चला गया। जब वहाँ से लौटा तो नागराज उससे कहने लगा, ''पिताजी कोई ऐसा चश्मा दिखा दीजिए जहाँ मैं पूजा किया करूँ।''

''बेटे, यहाँ केवल एक ही चश्मा है। वह चश्मा हियमाल का है। हियमाल राजा बलावीर** की ज्येष्ठ पुत्री है। इस चश्मे तक जाने का कोई रास्ता नहीं है।'' नागराज ने चश्मे के निकट तक ले जाने की जिद्द की। सदाराम नागराज को लेकर चल पड़ा। वहाँ तक जाने पर नागराज को चश्मे तक जाने का कोई रास्ता न दिखा।

---

* 'नाग' कश्मीरी शब्द। इस शब्द का अर्थ है चश्मा याने भूमि में से फूटता जल स्रोत।

** राजा बलावीर के नाम पर ही शुप्याँ के इस क्षेत्र का नाम बलावीर पड़ा होगा।

वह चश्मे के इर्द-गिर्द निरीक्षण करने लगा कि कहीं से कोई-न-कोई रास्ता दिखे! अन्त में एक तंग मोरी पर नज़र गई। सोते का पानी वहीं से बहकर बाहर निकल आ रहा था। ''रास्ता मिल गया।'' ऐसा सोचकर नागराज ने पिता को विदा करते हुए कहा, ''मेरे मुँहबोले पिता, अब आप घर लौट जाएँ। मैं स्वयं घर लौट आऊँगा।'' सदाराम घर चला गया।

उधर नागराज ने साँप का रूप धरा और उसी तंग मोरी के रास्ते चश्मे तक जा कर चश्मे में स्नान के लिए उतरा। सारी की सारी पुष्प-वाटिका खिल उठी! चश्मा उफन पड़ा! नहा-धोकर नागराज उसी तंग मोरी के रास्ते बाहर निकल आया। अगले दिन जब हियमाल वाटिका में विहार करने गई तो देखा, चश्मा और भी सुन्दर और आकर्षक लग रहा था! वाटिका खिल-निखर उठी थी! उसने प्रभु से आभार प्रकट किया। मुँह बोली माँ से पूछने लगी, ''माँ वह कहाँ गया ?'' अब दोनों याने मुँहबोली माँ और हियमाल नागराज की ताक में बैठ गईं कि वह कब आता है। दूसरे दिन प्रातः नागराज फिर चश्मे पर चला गया। पानी में उतरा। नहा-धोकर पूजा की, जाप किया और चल दिया। हियमाल की मुँहबोली माँ बिना विलम्ब के उसके पीछे हो ली। इधर हियमाल वास्ता देने लगी। गाने लगी।

हियमाल की मुँहबोली माँ ने जब नागराज का पीछा किया तो उसे पता चला कि नागराज सदाराम के घर में घुस गया है। वह घर का द्वार मुहर बन्द कर के उल्टे पाँव लौट आई। हियमाल के पास पहुँच कर उससे कहने लगी कि नागराज सदाराम के घर में घुस गया है। हियमाल राजा को कहलवाती है कि वह विवाह करना चाहती है। राजा मालूम करता है कि हियमाल को किस घर में जाने की इच्छा है ? हियमाल सदाराम के घर जाने की इच्छा प्रकट करती है। राजा सुनकर हर्षित होता है। वह सोचता है कि चलो इसी बहाने अन्य छह बेटियों का विवाह भी रचा दिया जाएगा। राजा सदाराम को बुलावा भेजता है। सदाराम राजा से मिलने आ जाता है। राजा सदाराम से यह इच्छा प्रकट करता है कि हम एक-दूसरे के सम्बन्धी बन जाएँ। सदाराम कहता है, ''महाराज! न तो मेरा कोई बेटा है और न बेटी ही।'' बस इतना कह सदाराम घर लौट आया! घर में पत्नी को सारी बात सुनाई। नागराज इनकी बातें सुन रहा था, बोला, ''मेरे मुँहबोले पिताजी, मैं आपका पुत्र हूँ। आप क्यों कहते हैं कि आप निःसन्तान हैं ?'' सदाराम संकेत भाँप जाता है। विवाह की तिथि निश्चित हो जाती है। नागराज सदाराम से पूछता है कि क्या वे (सदाराम) विवाह पर किसी को न्योतना चाहते हैं ? सदाराम सोचता है कि यदि किसी को न्योतूँगा तो वही सोचेगा कि यह दरिद्र तो है ही, अब हमें भी वैसा ही करना चाहता है, अतः वह किसी को नहीं न्योतता। शादी का दिन आ गया। शेष छह राजकुमारियों के लिए नाना प्रकार की वस्तुएँ भेंट स्वरूप आती हैं। वे हियमाल को उलाहने देते

हुए कहती हैं, "क्या कर डाला हियमाल! किसके साथ विवाह करने की ठानी ! उस निर्धन से तुम्हें क्या मिलने का ?"

खैर, मेहँदीरात* का दिन आ गया। शेष छह राजकुमारियों को उनके ससुरालों से मेहँदी आ गई पर हियमाल के लिए कोई भी मेहँदी लेकर नहीं आया। एक क्षण के बाद हियमाल के लिए स्वर्ग से मेहँदी आ गई। उसकी बहनों ने जब हियमाल की तेज़ रंगवाली मेहँदी देखी तो दंग रह गईं! अपने-अपने ससुराल से आई मेहँदियों को छोड़ वे हियमाल के लिए आई मेहँदी रचने बैठीं। अगले दिन बारातें आईं। पर, केवल छह ही! सातवीं ? हियमाल का दूल्हा कहीं नज़र नहीं आया। बहनें यह देख उस पर फिर फब्तियाँ कसने लगीं। नागराज ने अपने दो मुँहबोले भाइयों को, यह पता लगाने के लिए कि लोग उसके बारे में क्या कहते हैं, हियमाल के घर भेज दिया। वे रूप बदल कर आ गए और हियमाल की बहनों की फब्तियाँ सुनने लगे, "अरी! वह सदाराम ? वह जो झोंपड़ी में रहता है ? उसी के घर जाना है तुम्हें दुल्हन बनकर ? इत्यादि···।"

मुँहबोले भाई लौटे और नागराज को सभी सुनी हुई बातों के बारे में बताया।

"तुम लोग जाओ और स्वर्ग से बड़े प्रासाद, बर्तन इत्यादि सभी कुछ ले आओ।" नागराज ने निर्देश दिया।

"पहले कुछ खाने को दो, हमें भूख लगी है।"

"तुम दोनों राजा के घर जाओ, वहाँ जो कुछ भी पका होगा खाके आ जाओ।"

राजा के महल में सात बेटियों की बारातों के लिए स्वादिष्ट पकवान बनवाए गए थे। दोनों मुँहबोले भाइयों ने वहाँ जाकर सभी पकवानों को चट कर लिया। राजा को जब इस बात का पता चला तो वह बहुत ही परेशान हो गया, सोचने लगा, "अब क्या किया जाए ?"

नागराज के मुँहबोले भाई स्वर्ग से सभी सामान लेकर आए और सदाराम के घर से बारात चल दी। स्वर्ग के भाण्ड और गायक आगे-आगे! बारात राजमहल पहुँची। सभी लोग ऐसी अपूर्व और अलौकिक बारात देखकर आश्चर्यचकित हो गए! नागराज की सजधज और वेशभूषा के आगे बाकी छह दुल्हे अत्यन्त फीके पड़ गए। उन्होंने उसी का आधिपत्य स्वीकारा! नागराज ने राजा को बुलवाया और कहा, "राजन्, अब से लड़कीवाला मैं हूँ, अत: इन छहों की शादी का प्रबन्ध मैं स्वयं कर लूँगा।" इसके पश्चात् नागराज ने सभी प्रबन्ध कर लिए और छहों बारातों को एक उद्यान में, जो नाना रंगों के कुसुमों से भरा था, भोजन के लिए बिठाया। चिलमची को आज्ञा दी कि वह सभी के हाथ धुलवा दे! चिलमची क्रमश: सभी के सामने

---

* कश्मीरी शादी की एक रस्म जब रात को दूल्हा, दुल्हन के हाथ-पाँव में मेहँदी रचाते हैं।

गई और हाथ धुलवाए। देगची को आज्ञा दी कि वह सब को मनपसन्द पकवान खिला दे! वह सब को मुँह-माँगा पकवान खिलाने लगी। अन्त में सभी बारातियों को खिलाने-पिलाने के पश्चात् विदा किया गया। छहों बहनों के फेरे पड़ गए। दूल्हे-दुल्हनों को विदा करने के बाद नागराज हियमाल के चश्मे के पास एक अलौकिक प्रासाद खड़ा करवा के उसी में रहने लगा।

कहने वाला कहता है कि पाताल लोक में नागराज की सात पत्नियाँ थीं। वे उसे ढूँढ़ रही थीं। उन्हें नागराज का कोई अता-पता ही नहीं लग रहा था। एक दिन नागराज की पटरानी परी भूतल पर आ गई। घूमते-घूमते वह उस प्रासाद के निकट आ गई। प्रासाद को देखकर वह पहचान गई और मन-ही-मन कहने लगी कि हो न हो यह उसी का महल है। इसके तुरन्त बाद वह पाताल-लोक लौट गई और वहाँ से एक पुष्प-गुच्छ लेकर चली आई तथा भवन के आसपास ही टेर लगाने लगी, ''स्वर्ग के फूल ले लो! स्वर्ग के फूल ले लो!'' हियमाल ने जब ये फूल देखे तो उसका मन खिल उठा! वह सोचने लगी कि नागराज जब ये फूल देखेंगे तो बहुत प्रसन्न होंगे। उसने पुष्प-गुच्छ खरीद लिया। नागराज जब दरबार से लौटा तो उसने ये फूल पहचान लिए। पुष्प-गुच्छ को झट से उठा छिन्न-भिन्न कर दिया! हियमाल को हिदायत दी कि दुबारा ऐसे फूल कभी न खरीदना। हियमाल बहुत खिन्न हो गई! अगले दिन नागराज की पटरानी परी प्याले ले कर आई और टेर लगाई, ''स्वर्ग के प्याले ले लो! स्वर्ग के प्याले ले लो!'' प्याले देखकर हियमाल का मन ललचा उठा। न रहा गया उससे! खरीद ही लिए प्याले। नागराज जब लौट आया, प्याले देख सब भाँप गया। उठा लिए एक-एक कर प्याले और ज़मीन पर पटक-पटक कर टुकड़े-टुकड़े कर दिए! बोला, ''मैंने तुम्हें ऐसी चीजें लेने से मना किया था ना ? ऐसी चीजें नहीं लेना!'' हियमाल सुनकर बहुत ही उदास हो गई। अब से वह परी प्रतिदिन आने लगी और हियमाल उसके साथ मीठी-मीठी बातों में मस्त होने लगी। बातों-बातों में हियमाल ने उससे बहुत सारी बातें कह डालीं। अगले दिन परी एक जूती ले आई। एक जोड़ा नहीं केवल एक पैर की जूती! टेर लगाई, ''जूती ले लो! स्वर्ग में बनी जूती ले लो!'' हियमाल बाहर आई और एक ही पैर की जूती देखी। परी ने फटा हुआ फयरन* पहन रखा था। हियमाल ने जब परी से पूछा कि इस जूती का दूसरा पाँव कहाँ है ? तो परी बोली, कि मेरे पिताजी ने जब मेरी शादी रचाई तो मेरे पति को घरजवाँई बना के रखा। उसी ने मेरी यह जूती बनाई है। एक पाँव बनाकर दूसरा बना ही रहा था कि घर से ही भाग

---

* फयरन/फिरन=कश्मीरी शब्द, कश्मीरियों का ढीला-डाला कुर्तानुमा पहनावा। विशेष जानकारी के लिए 'कश्मीरियत-संस्कृति के ताने-बाने' प्रकाशक यात्री प्रकाशन, दिल्ली।

गया। मेरे उस भगोड़े पतिका नाम है 'नागराज' जो वास्तव में 'नानू मोची' है। मेरे गाँव के सभी लोग उसे खोज रहे हैं।

हियमाल ने कहा, "तुम यह क्या कह रही हो! वह तो राजकुमार है, राजा है। वह मेरा पति है।"

"हाय राम! तुमने यह क्या किया है ? किसके साथ अपना पल्लू बाँधा है ? वह नाग जात का है, नागजात का!" परी ने कहा।

"हाय! अब मैं क्या करूँ!" हियमाल परेशान होकर बोली।

"धीरज धर मेरी बहन, वह जब लौटकर आएगा तो उससे कहना कि वह अपनी जात दिखाए। पहले उसे नहलाना-धुलाना फिर दूध-भरे कुण्ड में उतार देना।" परी ने सांत्वना देते हुए सुझाया।

नागराज जब घर लौट आया तो हियमाल ने किवाड़ बन्द कर दिए। "किवाड़ बन्द करने का कारण ?" नागराज ने पूछा।

"मुझे अपनी जात दिखाइए।" हियमाल ने उत्तर दिया। नागराज सब समझ गया, बोला, "री मूर्खा! पहले कुण्डी तो खोल दे।"

"जात दिखाइए मेरे नागराज!" वह बोली! नागराज ने हियमाल को बहुत समझाया पर वह कुछ भी न मानी। आखिर नागराज अपनी जात दिखाने के लिए राज़ी हो गया। हियमाल ने पहले उसे नहलाया-धुलाया फिर दूध के कुण्ड में उतारा। नागराज का कुण्ड में उतरना था कि उसकी पाताल-लोक की रानियों ने उसके पाँव में रस्सी डाल दी और नीचे ही नीचे खींचती गईं। नागराज कुण्ड में ही हियमाल को दुहाइयाँ देने लगा, "हियमाल, मेरे पाँव में रस्सियाँ डाल दी गई हैं! तुम्हारा मीत अब तुमसे नहीं मिल सकेगा।" पर, हियमाल कुछ न मानी। नागराज इतना डूबा कि अब दूध में से उसका सिर ही दिखाई देने लगा। वह दुहाई पर दुहाई देने लगा, "हियमाल री, मेरी मानो अभी समय है! बाद में पछताना पड़ेगा!" हियमाल फिर भी न मानी। वह बस एक ही रट लगाए थी— "जो हो सो, मुझे अपनी जात दिखाइए!" उसने जिद्द न छोड़ी, अड़ी रही। इतने में खामोशी छा गई! हियमाल सोचने लगी, 'यह खामोशी कैसी, भला! नागराज तो अभी बात कर रहे थे ! कहाँ गए!' किन्तु नागराज वहाँ नहीं, कहीं और पहुँच गए थे। "अब मैं क्या करूँ! कहाँ जाऊँ ? किससे कहूँ ?"

हियमाल विलाप करती जा रही थी। हाथ मलते जा रही थी। सोचा, 'अब बहनों के पास चली जाऊँगी।' पर वे फब्तियाँ कसेंगी !

हियमाल के पास जो कुछ भी था। सब दान कर दिया। अन्त में एक बूढ़ा व्यक्ति अपनी बेटी के साथ दान लेने आया। ये लोग दूर से आए थे और रात को चश्मे के निकट ही सोए थे। नागराज ने जो कुछ किया था, वह सब उन्होंने देखा

था। खा-पीकर नागराज थाली भर भात हियमाल के नाम उस चश्मे के किनारे रख जाता था, साथ ही यह शपथ दिलाता था कि जो यह भात खाएगा, वह भात खाकर थाली धो दे और इसी चश्मे में डाल दे।

इधर, जब वह बूढ़ा हियमाल से भिक्षा माँगने गया, तो हियमाल उसे कहने लगी कि बूढ़े, मुझे कोई कहानी सुना दे। ''बेटी, मेरे पास कथा-कहानियाँ सुनाने को कहाँ ?'' बूढ़े ने उत्तर दिया। पर, बूढ़े की बेटी बूढ़े से कहने लगी, ''अब्बा सुनाइए ना इसे वह कल की बात।'' बूढ़ा टालता गया किन्तु बेटी ने उसे सुनाने के लिए विवश कर दिया। बूढ़े ने हियमाल को चश्मे पर घटी सारी घटना सुना दी। सारा किस्सा सुनने के बाद हियमाल बूढ़े को अगले रविवार तक वहीं रोके रखती है। जब रविवार आया तो हियमाल बूढ़े को साथ लेकर चश्मे पर जाती है। किन्तु बूढ़ा उसे समझाता है कि जब वह उसे कहे तभी वह चश्मे के निकट जाए। आखिर निश्चित बेला आ जाती है और बहुत-सा सामान चश्मे से ऊपर आ जाता है। इस सामान के अतिरिक्त गायक तथा खोमचे वाले इत्यादि भी आ जाते हैं। खाने-पीने के पश्चात् गायन की सभा लग जाती है। गायन समाप्त होने पर सभी चश्मे के रास्ते नीचे चले जाते हैं। नागराज उतरने को ही होता है कि वह रोज की भाँति भात की थाली चश्मे के किनारे रख छोड़ता है। बूढ़ा हियमाल को तुरन्त इशारा करता है कि वह जल्दी नागराज को पकड़ ले। हियमाल उसी क्षण नागराज को चुपके से गिरेबान से पकड़ लेती है। नागराज हियमाल से कहता है, ''देव हो, जिन हो कि मनुष्य जात हो! छोड़ दो मुझे! मुझे पाताल-लोक जाना है, देर हुई जा रही है मुझे !''

''मैं देव या जिन नहीं, हियमाल हूँ, हियमाल!'' हियमाल ने कहा। नागराज कहता है, ''मेरी धरोहर तुमारे पास है— रूमाल और अंगूठी! वे दोनों दिखा दो तो मानूँ कि तुम हियमाल ही हो।'' हियमाल ने तुरन्त दोनों चीज़ें दिखा दीं। नागराज विवश हो गया, उसने हियमाल को श्राप से एक कंकरी बना दिया और इस कंकरी को जेब में रख पाताल ले गया।

एक दिन नागराज की परी पत्नियों को मानुष-गन्ध आने लगी। उन्होंने पति से पूछा, ''यह गन्ध तो आप को भी आ रही होगी ?'' नागराज ने इनकार किया। पर, नागराज की रानियाँ, परी पत्नियाँ, कहाँ मानने वाली थीं। उन्होंने पति को वास्तविकता उगलने पर विवश कर दिया। नागराज ने मंत्र फूँका और हियमाल शापमुक्त हो गई। रानियाँ कहने लगीं कि यह भी हमारी तरह काम-काज करें। एक दिन हियमाल की घर का काम-काज करने की बारी थी। उसने खाना पकाया और परियों के बच्चों के लिए दूध गरम किया। दूध ठण्डा होने के लिए उसने एक ओर रखा। इतने में बच्चे आ गए और दूध पीने लगे। दूध गरम था, इस कारण पीते ही जल गए। परियाँ इससे क्रोधित हो गईं और भिड़ों का रूप धर हियमाल को दंशित करने लगीं !

हियमाल से ये दंश सहे न गए। उसने प्राण त्याग दिए! नागराज जब घर लौटा और हियमाल की दशा देखी तो रोने-कलपने लगा। उसने परियों के हाथ जोड़े। परियाँ पसीज गईं और उन्होंने हियमाल का सारा विष वापस चूस लिया। हियमाल जीवित हो उठी! पर उसका शरीर बहुत ही क्षीण एवं निर्बल था। नागराज पुनः हियमाल को पाताल से भूतल पर ले आया और उसे दंडक-वन में एक पंगूड़े में छोड़कर स्वयं वापिस चला गया। परियाँ हियमाल की खोज में लग जाती हैं।

उधर एक राजा आखेट के लिए दंडक वन आता है। जब वह एक ऊँचे देवदारु के समीप पहुँचता है तो वह किसी के कराहने की आवाज़ सुनता है। वह सिपाहियों को आज्ञा देता है कि वे खोज करें कि यह कराहने की आवाज़ कहाँ से आती है और किसकी है। सिपाही उस देवदारु वृक्ष से लटका वह छींका खोलकर ले आते हैं। ज्यों ही राजा की दृष्टि हियमाल पर पड़ती है वह उस पर मोहित हो जाता है और उसके सामने विवाह का प्रस्ताव रखता है। हियमाल कहती है कि यदि बारह वर्षों तक मुझे मेरा स्वामी नहीं मिलेगा तो मैं आपसे विवाह रचूँगी।

उधर नागराज हियमाल को पाने के लिए भरसक प्रयत्न करने लगा है और अन्त में उसे राजा के पास पा लेता है। "क्या मैं अपने रूप में तुम्हारे पास आ जाऊँ या तुम्हारी जात के रूप में ?" नागराज ने हियमाल से पूछा। हियमाल ने सोचा कि यदि कहीं वह मानव-रूप में आया तो आशंका है कि राजा उसे मरवा न डाले, इसलिए अच्छा यही है कि वह सर्प के रूप में ही चला आए, अतः उत्तर देती है, "आप अपने ही रूप में आ जाइए।" राजा ने जब साँप को देखा तो उसे मरवा डाला। हियमाल इस समय सोई थी। वह नींद से स्वतः जाग पड़ी और रोने-बिलखने एवं विलाप करने लगी। राजा ने हियमाल को रोने का कारण पूछा तो हियमाल ने उत्तर दिया, "यह मेरा कन्त, मेरा भाग्यविधाता था।"

"हमें क्या पता कि तुम लोग साँपों से भी विवाह रचाते हो ?" राजा ने कहा।

अगले दिन पौ फूटी ही थी कि हियमाल राजा से बोली, "मुझे चन्दन की लकड़ी लिवा लाइए। मैं इसका दाह संस्कार चन्दन की चिता पर ही करूँगी।"

हियमाल रोते-कलपते विलाप करने लगी, "चन्दन की चिता रचूँगी तेरे लिए, मेरे कन्त! किसने मार डाला तुम्हें ? मेरे सखा, मेरे प्राणप्रिय, मेरा भी कुछ सोचो, तुम्हें किसने मार डाला ? मैं तेरे लिए चन्दन की चिता रचाऊँगी।"

चिता जलने लगी। नागराज के शरीर को लपटों से घिरा देख हियमाल से रहा न गया। वह भी लपटों में कूद पड़ी। भस्म हो गई! राजा राख के ढेर के सामने परेशान होकर रोने लगा। इतने में वहाँ सुधबिलाव और बुधबिलाव आ गए। सुधबिलाव बुधबिलाव से पूछने लगा, "भाई, यह राजा जो इतना रो-कलप रहा है, क्या इसके ऐसा करने से यह जीवित हो सकती है ?"

"चुप रह! तुम्हें इन बातों से क्या लेना-देना ?" बुधबिलाव ने डाँटते हुए कहा।

राजा इनकी बातें सुन रहा था। सुधबिलाव बुधबिलाव से रूठ गया और चुपके से कहीं जाकर छिप गया। बुधबिलाव उससे हाथ जोड़कर कहने लगा, "अरे भाई सूरत तो दिखलाओ! मैं बता रहा हूँ कि यह कैसे जीवित हो जाएगी।" और कहने लगा हियमाल के जीवित हो जाने की विधि— यह राजा कुम्हार के पास जाए और उससे दो नई कलसियाँ ले आए। कलसियों में यह भस्मी भरे और छोड़ आए चिनार वाले चश्मे में, तभी ये दोनों एक-दूसरे का हाथ थामे वहाँ से निकल आएँगे।

राजा कुम्हार के पास गया और दो कलसियाँ ले आया। इन में भस्मी भरी और चल पड़ा इन्हें लेकर चिनार वाले चश्मे की ओर! वहाँ पहुँच कर भस्मी से भरी कलसियाँ चश्मे के जल में डाल दीं। जल से हियमाल और नागराज एक-दूसरे का हाथ थामे मुस्कुराते हुए निकल आए! राजा अत्यन्त प्रसन्न हुआ और अपने महल की तरफ चल पड़ा।

पन-कथा

एक परिवार था। इसमें तीन प्राणी— बूढ़े माँ-बाप तथा एक कन्या थे। यह परिवार काफी धनहीन था। चूँकि बुढ़ापे के कारण पिता श्रम करने में असमर्थ थे, अतः उसकी कन्या पास-पड़ोस के घरों में काम करके साँसों को चालू रखने योग्य धनार्जन करती थी। कई बार, जब कन्या काम करने में असमर्थ हो जाती तो, इनके घर चूल्हा भी नहीं जलता था। कन्या अपनी गरीबी पर बहुत खिन्न थी और उसके माँ-बाप बेटी के हाथ पीले करने की चिन्ता में घुले जा रहे थे।

एक दिन कन्या अपने घर की सबसे ऊपर की मंजिल पर अपनी विपन्नता के बारे में, सिर घुटनों पर टेके, अकेले में सोच रही थी। सोचते-सोचते न जाने कब इसी दशा में उसकी आँख लग गई। सपने में उसने देखा कि बहुत ही सुन्दर परियाँ आकाश से उसके सामने उतरीं। कन्या को देख परियाँ बहुत प्रसन्न हो गईं और उसे अपने हाथों में उठाकर एक दूर के मैदान में ले गईं। इस मैदान के एक कोने में एक अत्यन्त रमणीय महिला पूजा की तैयारी कर रही थी। परियाँ कन्या को इस महिला के पास लायीं और बोलीं, ''हमें भाग्य से यह कन्या मिल गई। आप पूजा आरम्भ कर दें।'' महिला ने बड़ी श्रद्धा से कन्या को नहलाया, नये कपड़े पहनाए और उससे कहा, ''बेटी, यह नया कपास लो और इस चर्खे पर ब्रह्मसूत्र कात लो।'' कन्या ने कपास की पूनी ली और पास पड़े चर्खे पर प्रभुनाम का स्मरण करते हुए एकाग्रता से सूत काता। महिला ने सूत को पास में ही रखे जल से भरे, फूल-माला से सजे तथा मौलि-बन्धे, पूजा के लोटे पर बाँध लिया। इसके पश्चात् शेष बचे सूत को उसने अपने बाएँ कान में धारण कर लिया। तत्पश्चात् थाली में रखे धुले चावलों, जौ, फूलों और दूब को सभी के हाथों में देकर तथा स्वयं भी लेकर उसने पूजा आरम्भ किया। पूजा के अन्त में उसने महागणपति को रोटों का नैवेद्य चढ़ाया। उसने एक रोट पूजा के लोटे पर भी रखा था। अन्त में नैवेद्य समर्पित करने के बाद उस महिला के पश्चात् सबों ने बारी-बारी से अपने हाथों के चावल-जौ-पुष्प-दूब लोटे में श्रद्धापूर्वक डाल दिया। सबसे पहले कन्या को वह रोट जो लोटे पर था और शेष रोटों में से प्रसाद दिया गया। परियों ने कन्या को हाथों पर उठा पुनः अपनी जगह पहुँचाया। कन्या जैसे जाग गई। उसने देखा, उसके तन पर

नए-नए कपड़े हैं और हाथों में रोटों का प्रसाद।

कन्या अतीव प्रसन्नता की अवस्था में दौड़ती हुई अपने माँ-बाप के पास निचली मंजिल में आई और उन्हें समस्त घटना सुनायी। इस घटना ने परिवार पर गहरा प्रभाव डाला और ये लोग भी प्रतिवर्ष भादों शुक्ल पक्ष विनायक चतुर्थी को महागणपति की पूजा इसी रीति से करने लगे। इस पूजा के प्रभाव से उनके दिन अच्छी तरह से गुज़रने लगे।

जिस नगर में यह परिवार रहता था वहाँ के राजा का विवाह योग्य पुत्र पास-पड़ोस की राजकुमारियों से विवाह करने से इन्कार करता रहता था। एक दिन यह राजकुमार अपने मन्त्री के साथ नगर की सैर को निकला। नगर-जन अपने युवराज के स्वागत के लिए सड़कों के दोनों ओर फूल और हार लेकर खड़े हो गए। इस कन्या का घर भी एक सड़क के किनारे पड़ता था। लोग जब युवराज को पुष्पमालाएँ पहना रहे थे और उस पर पुष्प-वर्षा कर रहे थे, तो खिड़की से देख रही इस कन्या के मन में विचार कौंधा कि राजा भगवान का रूप होता है, क्यों न मैं भी युवराज पर फूल चढ़ाऊँ! यदि वह फूल लेने जाती तो उतने समय में युवराज की सवारी आगे निकल जाती, अतः उसने अपनी वेणी में लगा फूल ही राजकुमार पर डाल दिया। यह फूल राजकुमार के माथे पर गिर गया। उसने झट नज़रें ऊपर कीं। कन्या को देखते ही अपने मन में निश्चय किया कि यदि मैं विवाह करूँगा तो इसी कन्या के साथ! राजमहल पहुँचने पर वह उदास रहने लगा। जब राजा ने अपने एक विश्वस्त मन्त्री द्वारा राजकुमार के उदास रहने का कारण जान लिया तो अपने एक मन्त्री को कन्या के माता-पिता के पास विवाह का सन्देश लेकर भेज दिया। माता-पिता इस प्रस्ताव से खुश तो हुए पर सोचने लगे, कहाँ हम दरिद्र और कहाँ राजा! मन्त्री ने उनके मनोभाव पढ़ लिए और कहा, "घर बैठे आपकी कन्या के लिए एक अच्छा वर मिल रहा है अतः आप हाँ कीजिए। बाकी रही खर्चे की समस्या वह सब राजकोष से ही होगा।" कन्या के माँ-बाप ने हामी भरी और विवाह सम्पन्न हो गया।

कन्या रानी बनकर सुख से दिन बिताने लगी। भादों शुक्ल पक्ष का दिन आया और इसी के साथ रानी को विनायक चतुर्थी के दिन गणपति-पूजा की याद आ गई। 'पूजा के विषय में राजा से क्या कहूँ! जाने वे पूजा करने दें या नहीं! पूजा की सामग्री मँगवायें या नहीं।' रानी इसी उधेड़-बुन में थी कि उसके कमरे में राजा ने प्रवेश किया और आते ही रानी से पूछने लगे, "प्रिय! तुम क्या सोच रही हो ?" रानी ने अपने मन की बात बता दी। राजा ने दास-दासियों को बुलवाकर पूजा और नैवेद्य की सामग्री लाने की आज्ञा दी। रानी ने विनायक चतुर्थी रविवार को पूजा करना निश्चित किया। इस दिन कुआँरी कन्या द्वारा नए कपास से धागा तैयार किया जाता है और इस धागे का उपयोग पूजा में किया जाता है, अतः इस पूजा का नाम

'पन' (कश्मीरी शब्द जिसका अर्थ धागा है) पड़ गया। रानी और उसकी दासियों ने पूजा-सामग्री इकट्ठी की, रोट बनवाए। कन्या से सूत कतवा कर पूजा के लोटे पर बाँधा और अपने बाएँ कान में धारण किया। दास-दासियाँ रोट बना रहे थे और रानी उनका निरीक्षण कर रही थी। राजा अपने कक्ष में इस समय निपट अकेला था। रानी की सौतों ने अवसर का लाभ उठाते हुए रानी के विरुद्ध राजा के कान भरे और कहा कि यह जादूगरनी है, इसीलिए इसने अपने कान में कच्चा धागा पहन रखा है। यह कुछ अनुष्ठान कर रही है जिससे न जाने कौन-सा अहित होगा। राजा बातों में आ गया और उसके मन को बुरे विचारों ने घेर लिया। वह उठा और जूते पहन कर ही उस स्थान पर गया जहाँ रोट बन रहे थे। उसने बने तथा बन रहे रोटों को अपने जूतों तले रौंद डाला और पूजा सामग्री तथा पूजा के लोटे को जूतों की ठोकर मारी। रानी यह देख बुरी तरह से रोने लगी। सब कुछ अपवित्र हो गया था। विघ्नहर्ता विनायक अप्रसन्न हो गए !

कुछ समय बीतने पर एक शक्तिशाली शत्रु ने नगर पर आक्रमण किया। राजा की सेना शत्रु-सेना का मुकाबला न कर सकी। राजा और रानी किसी तरह छिपते-छिपाते जान बचाकर भाग गए। जंगलों में छिपते तथा जंगली फलों पर निर्वाह करते। कभी फल भी न मिलते और केवल पानी पर ही गुज़ारा कर लेते और भूख से तड़पते ! एक नदी के किनारे पहुँचने पर एक दिन उन्होंने कुछ मछलियाँ पकड़ लीं। राजा मछलियों को भूनने के लिए लकड़ियाँ लाने गया। रानी ज्यूँ ही मछलियों को साफ करने लगी, मछलियाँ उसके हाथ का स्पर्श पाकर जीवित हो उठीं तथा एक के बाद एक नदी में छलाँगें मारती गईं। राजा जब लकड़ियाँ लेकर आया तो पत्नी ने कहा, "मुझे बहुत भूख लगी थी। मछलियाँ मैंने खा ली। आगे चलें।" एक नगरी में पहुँच गए। राजा को स्मरण हो आया कि मेरी एक बहन इसी नगरी में रहती है। उसके घर की ओर चल दिए और सन्देश भेजा कि आपके भैया-भाभी आए हैं। बहन इस समय महालक्ष्मी की पूजा कर रही थी, अतः भैया-भाभी को बैठने के लिए कहलवाया। पूजा समाप्त हो गई। भैया-भाभी के लिए एक सोने के थाल में नैवेद्य आया। थाल से राजा ने ज्यों ही कपड़ा उठाया, थाली के रोट पत्थर हो गए! राजा पर लक्ष्मी कुपित थी ! राजा बहिन के घर से भूखा-प्यासा ही चल दिया। बहन के घर से निकलते ही उन्होंने पत्थर के रोटों को ज़मीन में दबा दिया।

चलते-चलते वे उस राज्य में पहुँचे, जहाँ का शासक राजा का मित्र था। राजा मित्र के महल में गया। मित्र ने दोनों का हार्दिक स्वागत किया और खिलाया-पिलाया। एक सुसज्जित कमरे में राजा-रानी को ठहराया गया। उस कमरे में एक अमूल्य स्वर्ण-हार खूँटी पर टँगा था। रात को एक पक्षी उड़ता हुआ आया और खूँटी पर टँगा हार अपनी चोंच में ले गया। राजा-रानी दोनों यह देख कर अत्यन्त

चिन्तित हुए क्योंकि उन्हें लगा कि सुबह होते ही वे हार की चोरी के अपराध के सिलसिले में पकड़े जाएँगे और चोर कहलाएँगे। इस भय से रात के अँधेरे में ही वे वहाँ से चल पड़े।

काफी चलने के पश्चात् वे एक घने जंगल में पहुँच गए। कुछ कंदमूल उखाड़ कर खाया और तनिक विश्राम के लिए एक गुफा में प्रविष्ट हुए। कुछ क्षण बाद रानी सो गई पर राजा को नींद न आई। वह सोच रहा था कि मेरे साथ रानी को काफ़ी कष्ट उठाना पड़ रहा है, क्यों न मैं इसे यहीं छोड़ दूँ क्योंकि अकेला होने पर मैं कहीं भी जा सकता हूँ। कुछ भी कर सकता हूँ। इसके बाद वह उठ खड़ा हुआ और रानी को छोड़कर गुफा से निकल कर आगे चलता गया।

सुबह जब रानी जागी तो राजा को कहीं न देख रोने लगी। राजा को ढूँढ़ने वह जंगल-जंगल भटकी। "प्रीतम! प्रीतम!" चिल्लाकर राजा को आवाज़ देती रही। रोती रही और रोती रही! इतना रोई कि उसकी आँखें सूज गईं। इसी दौरान एक शिकारी वहाँ आया और रानी से पूछने लगा, "हे सुन्दरी, तुम कहाँ जा रही हो ? रो क्यों रही हो ?" रानी ने भोलेपन में अपनी पूरी व्यथा-कथा सुना दी। शिकारी के मन में पाप जागा, बोला, "तुम्हारे पति को कोई जंगली पशु खा गया होगा, अब तुम मेरे साथ चलो और मेरे घर की शोभा बढ़ाओ।" शिकारी की बात सुनकर पतिव्रता रानी आग-बबूला हो उठी और घायल शेरनी-सी गरजते हुए बोली, "रे पापी! तेरी आँखें क्यों न फूटीं ? सावधान! जो तू एक कदम भी आगे बढ़ा ?" वह आर्तनाद करते हुए प्रभु को पुकारने लगी। इतने में एक सर्प आया और शिकारी को डस गया। शिकारी कटे पेड़ की तरह धराशायी हो गया। रानी आगे बढ़ी। चलते-चलते उसे रास्ते के किनारे एक पशु की खाल मिली। रानी ने उसे उठाया और पहन लिया। चलते-चलते रानी एक नगर में पहुँच गई। रास्ते के किनारे एक घर था। घर के आँगन में घर के मालिक की लड़की अन्य सहेलियों के साथ खेल रही थी। इस लड़की की नज़र बहुत धीरे-धीरे चल रही रानी पर पड़ी। लड़की ने अपनी सहेलियों को रानी के पास यह मालूम करने के लिए भेजा कि वह पशुचर्म ओढ़े कौन है और लड़खड़ाते हुए क्यों चल रही है ? कुछ देर के बाद सखियाँ रानी को लड़की की माँ के पास ले आईं। लड़की की माँ के पूछने पर रानी ने अपनी सारी गाथा सुनाई। रानी की व्यथाभरी कथा सुनकर लड़की की माँ की आँखें छलछला आईं और उसने रानी से अपने यहाँ रहने का आग्रह किया। रानी ने तीन शर्तों पर वहाँ रहना स्वीकार किया— एक, कि वह किसी पर-पुरुष से बात नहीं करेगी। दो, झूठे बर्तन नहीं धोएगी और तीन, जूठा नहीं खाएगी। लड़की की माँ ने शर्तें स्वीकार कीं और रानी से कहा कि तुम मेरे अन्य कार्यों में हाथ बँटाओगी और हमारे साथ ही रहोगी। रानी राज़ी हो गई।

काल-चक्र घूमता गया और भादों शुक्ल पक्ष विनायक चतुर्थी का दिन आ गया। लड़की की माँ, जो नगर सेठ की पत्नी थी, सुबह से ही घर की सफाई करने लगी। सफाई का काम पूरा होने पर सेठानी रानी से बोली, "बेटी, जा कलसी में नदी से ताजा पानी भर ला। मैं तब तक पूजा की तैयारी करती हूँ।" रानी ने कलसी उठाया और नदी की ओर चल दी। नदी के जल से भरी कलसी उठाने वाली ही थी कि उसे एक व्यक्ति, नदी किनारे-किनारे, उसकी ओर आता दिखाई दिया। जब वह नज़दीक पहुँचा तो दोनों ने एक-दूसरे को पहचान लिया! दोनों खूब रोए। एक-दूसरे से गिले-शिकवे किए। फिर रानी को ध्यान आया कि सेठानी पूजा के लिए जल की प्रतीक्षा कर रही होगी, अतः दोनों सेठ के घर की ओर चल दिए। उधर सेठानी मारे गुस्से के आग-बबूला हो रही थी। रानी को देखते ही बोली, "कहाँ रह गई थी ?..." रानी ने सेठानी के पैर पकड़ अनुनय-विनय किया और कहा, "सेठानी जी मेरी भूल क्षमा करें। नदी तट पर मेरे खोए स्वामी मिल गए थे, इसीलिए देर हो गई।" सेठानी ने सुना तो उसकी भी बाछें खिल गईं, बोली, "जा, उन्हें भीतर ले आ। सभी लोग मिलकर पूजा करेंगे।"

रानी राजा को भीतर ले आई। सभी ने अत्यन्त श्रद्धा-भक्ति से पूजा की। रानी और राजा ने मन-ही-मन बार-बार महागणेश से क्षमा-याचना की और संकल्प लिया कि वे भी विघ्न-विनाशक गणपति तथा लक्ष्मी की पूजा करेंगे। दूसरे ही दिन रानी लोगों के अस्तबलों में जा-जाकर घोड़ों की लीद से गेहूँ के दाने बीन लाई। इन्हें धोया, साफ किया और सेठानी के घर की चक्की में पीसा। सवा पाव आटे के रोट बनाए। श्रद्धा-भक्ति से पूजा की और सभी पड़ोसियों में प्रसाद बाँटा। स्वयं खाया। विघ्नहर्ता और महालक्ष्मी उन पर प्रसन्न हो गए।

राजा को उसके मन्त्रीगण ढूंढ़ रहे थे। वे उन्हें ढूँढ़ते हुए इस नगर में पहुँचे। राजा को पहचाना और लौटने की प्रार्थना की। उन्होंने साथ ही राजा से कहा, "राजन् ! हमने दुष्ट शत्रु तथा उसकी सेना को भगा दिया है। राज्य सिंहासन खाली है, कृपा कर आप चलें और उसकी शोभा बढ़ाएँ।"

रानी ने पशु-खाल उतार दी। सेठानी को धन्यवाद देकर चलने की आज्ञा माँगी। सेठानी ने जब सुना कि ये पड़ोसी राज्य की रानी हैं तो दंग रह गई! सेठानी ने रानी को गले लगाते हुए कहा, "बेटी, मेरे यहाँ रहते हुए तुम्हें बहुत कष्ट हुआ, मुझे क्षमा कर देना।"

राजा-रानी मन्त्रियों के साथ अपने राज्य की ओर चल दिए। रास्ते में मित्र का घर पड़ता था। वहाँ गए। मित्र ने बहुत आवभगत की और अभी बैठे ही थे कि मित्र ने उन्हें सुनाया, "आप लोगों के जाने पर हमारा एक हार खो गया था, पर वह वृक्ष की एक कोटर में मिल गया।" मित्र के यहाँ से चले तो उस नदी के किनारे पहुँचे

(जहाँ मछलियाँ पकड़ी थीं और वे रानी का हाथ लगते ही जिन्दा होकर नदी में कूदी थीं) तो भूनी हुई मछलियाँ मिलीं जो नदी तट पर पड़ी थीं। आगे बढ़े तो उस स्थान पर पहुँचे जहाँ रोट ज़मीन में गाड़े थे। खोदा तो ताज़ा-ताज़ा रोट निकले। सब ने नैवेद्य खाया और आगे चल पड़े। कई दिनों पश्चात् अपनी राजधानी में पहुँचे। प्रजा ने भव्य स्वागत किया। रात को दीपमाला हुई तब से राजा तथा उसकी प्रजा भादों शुक्ल पक्ष विनायक चतुर्थी या भादों शुक्ल पक्ष के किसी शुभ दिन श्रद्धा-भक्ति से विनायक तथा महालक्ष्मी की पूजा करने लगे। राज्य में शान्ति और सुख-चैन का साम्राज्य छा गया। राजा-रानी प्रसन्नतापूर्वक राज करने लगे।

जैसे उनके दिन फिरे वैसे ही हमारे भी दिन फिरें।

पीर बहादुर की रोटी

कथा कहने वाला कहता है कि एक नगर में एक कंजूस व्यापारी रहता था। उसकी पत्नी बिल्कुल भी कंजूस न थी और उसका मन भी साफ था। वह हर वर्ष पाँच मन आटे की घी वाली रोटी बना कर गरीबों में बाँटती थी। इन्हीं को पीर बहादुर की रोटी कहा जाता था। व्यापारी को यह एक व्यर्थ का व्यय लगता था। इसी कारण समय-समय पर उसकी पत्नी के साथ तू-तू मैं-मैं होती रहती थी, पर उसकी पत्नी यह नियाज (दान) बन्द करने की बात नहीं मानती थी। जब बहुत बार व्यापारी ने इस नियाज़ पर एतराज़ किया तो उसकी पत्नी भी पीर बहादुर की रोटी न करने पर विवश हो गई। उसने पति को मनाने का बहुत प्रयत्न किया पर वह टस से मस न हुआ। इस बात को लेकर व्यापारी की पत्नी उदास रहने लगी। उसके मन में पति के प्रति उतनी आदरभावना न रही।

एक दिन व्यापारी अपना माल लेकर दूसरे शहर की ओर नौकरों को साथ लेकर चल पड़ा। उसके घर में अब उसकी पत्नी और बेटी रहने लगीं। उनके लिए उसने वर्ष भर के लिए खाने-पीने और अन्य आवश्यक सामानों की व्यवस्था कर गया था।

यात्रा के दौरान व्यापारी का कारवाँ एक जंगल में पहुँच गया। इस जंगल में इन्हें रातभर के लिए रुकना पड़ा। रात के अन्तिम प्रहर में डाकुओं का एक दल आया और इस कारवाँ को लूट लिया। व्यापारी के सभी नौकरों को डाकुओं ने मार डाला तथा व्यापारी को कैदखाना में कैद रखा। चार-पाँच वर्ष बीत जाने के बाद व्यापारी इस कैदखाना से किसी तरह भाग निकला। भागते-भागते वह समुद्र के किनारे पर पहुँचा जहाँ एक समुद्री जहाज़ किसी शहर की ओर जाने वाला था। व्यापारी ने भी जहाज़ में छलाँग लगा दी। काफी रास्ता तय करने के बाद जहाज़ एक बन्दरगाह पर पहुँच गया।

व्यापारी जहाज़ से निकला। शहर में घुसा और पेट की आग को शान्त करने के लिए मज़दूरी करने लगा। कुछ समय बीत जाने पर यह एक जौहरी के पास नौकरी करने लगा। एक दिन एक व्यक्ति इस जौहरी के पास एक हीरा बेचने के लिए आया। जौहरी ने हीरे की जाँच की और हीरे के मालिक को देने के लिए रुपए

गिनने लगा। नजदीक आकर नौकर ने जल्दी से जौहरी का हाथ पकड़ लिया, कहा, "स्वामी! यह हीरा एक पैसे की कीमत का नहीं क्योंकि इसके अन्दर पानी है।" जौहरी नौकर की बात सुनकर हैरान हो गया और पूछा, "क्या तुम भी हीरा परखना जानते हो ?"

"यदि मैं न जानता तो मुझे कैसे दिखाई देता!"

जौहरी ने यह सुनकर हीरे को छेदा तो उसमें से पानी निकल गया। शाम को जौहरी ने नौकर से पूछा कि तुम वास्तव में कौन हो और क्या काम करते थे ? नौकर ने रोते-रोते अपना सारा वृत्तान्त सुनाया। जौहरी को तरस आया और नौकर से कहा कि तुम चिन्ता न करो, मैं तुम्हें माल और रुपए दे दूँगा। तुम अपने घर जाओ और दुबारा अपना व्यापार शुरू करो। लाभ में से मुझे अपना हिस्सा भेज दिया करो। कई दिनों के बाद जौहरी ने नौकर को माल और रुपए दे दिए। माल जहाज़ में लादकर नौकर घर की ओर चल पड़ा।

उधर व्यापारी की पत्नी और उसकी बेटी बहुत ही परेशान थीं। उनके पास घर में जो कुछ था वह खत्म हो गया। अन्त में जब उन्हें खाने के भी लाले पड़ने लगे तो वे पड़ोसियों के आगे हाथ पसारने पर विवश हो गईं। परेशानी में वे रात-दिन आहें भरती रहतीं और रोती रहतीं। एक दिन व्यापारी की पत्नी एक पड़ोसी के यहाँ अंगारे माँगने गई। वहाँ उसने उन्हें रोटियाँ बनाते हुए देखा। यह देखकर उसे अपने नियाज़ की याद आ गई और उसकी आँखों से अश्रुधाराएँ बह पड़ीं। वह कुछ सोचते हुए घर पहुँच गई। घर पहुँचकर बेटी से बात की और कहा, "बेटी क्यों न हम पीर बहादुर की रोटियाँ बना लें, शायद इससे खुदा हम पर फिर से मेहरबान हो।"

"माँ, इसके लिए सामान कहाँ से आएगा ?" बेटी ने कहा। "जा, बेटी बादशाह के तबेले में जा। वहाँ से तू खच्चरों और कातरों की लीद जमा करके ले आ," माँ ने कहा। यह सुनकर बेटी ने एक बड़ी टोकरी उठाई और तबेले में जाकर टोकरी भर कर लीद ले आई। माँ ने लीद में से मक्की के दाने बीनने आरम्भ किए। तब से वह लड़की रोज़ शाही तबेले में जाती और लीद की टोकरी भर लाती। उसकी माँ ने लीद में से एक-दो सेर मक्की बीन निकाल ली। एक दिन यह मक्की उन्होंने धो-धा कर पीस ली और इसकी रोटियाँ बना डालीं। माँ ने रोते-रोते एक रोटी पक्षियों के आगे को डाल दी, एक माँ-बेटी ने खाई और तीन रोटियाँ अपने पति के लिए रख छोड़ीं। कुछ दिनों के बीत जाने पर व्यापारी अपने घर पहुँच गया। मज़दूर घर में माल लाने लगे। समूचा गाँव मुबारक देने आया। व्यापारी अपने घर और घर वालों को देखकर इतना प्रसन्न हो गया कि वह दीवारों और दरवाजों तक को चूमने लगा।

कुछ पड़ोसियों ने उसे उसकी पत्नी और बेटी के बुरे दिनों का सारा हाल सुना

दिया। व्यापारी ने जब यह हाल सुना तो वह खून के आँसू रोया। इसके बाद व्यापारी ने अपनी बीती सुनाना आरम्भ कर दिया। जब उसने लौटते समय समुद्री रास्ते से आने की बात कही तो बताया कि समुद्र में तीन दिन का तूफान रहा। बचने की कोई आशा न रही। तीसरे दिन जब तूफान अपनी पराकाष्ठा पर था, मैं मूर्च्छित हो गया। इसी अवस्था में मैंने एक सपना देखा कि मेरी पत्नी पीर बहादुर की रोटी बाँट रही है और रोते-रोते पक्षियों को भी डाल रही है। ये रोटियाँ खाकर पक्षी आए और जहाज़ को खेने लगे। मैं जब चेतन हुआ, तूफान थम गया था और जहाज ने बन्दरगाह पर लंगर डाल दिया था। पति की बात सुनकर पत्नी को उसके लिए रखी रोटियों की याद आई। वह शीघ्रता से उठी और कपड़े से ढकी रोटियाँ ले आई। ज्यों ही उसने उनके ऊपर का कपड़ा हटाया, तीनों रोटियाँ चमक रही थीं। उसने उन्हें हाथ में उठाया, तीनों सोने की बन चुकी थीं!

स्वन्य किसुॅर

बात है एक घर-परिवार की। इनके एक बेटा और बेटी थी। लड़की का नाम था स्वन्य किसुॅर। एक दिन भैया पाठशाला से खाना खाने घर आया। भोजन करते समय भात में से बाल निकला। यह बाल सिर का था। बाल उँगलियों पर उठा कर वह कहने लगा—"बाल जिसका यह, वह मेरी जोरू !"

"हाय, हाय, बेटा यह मेरे सिर का बाल हो सकता है ?" माँ ने कहा।

बेटा फिर भी कहता रहा—"बाल जिसका यह, वह मेरी जोरू।"

"भइया यह मेरे सिर का बाल होगा !" बहन स्वन्य किसुॅर ने कहा।

भाई कहता ही गया—"बाल जिसका यह, वह मेरी जोरू।"

इस पर स्वन्य किसुॅर रूठ गई और घर से भाग निकली। भागते-भागते गाँव से दूर आ गई। साँझ घिरने को थी, स्वन्य किसुॅर को डर लगने लगा कि अब वह क्या करे ? कहाँ जाए ?

इतने में वहाँ से एक दरवेश गुज़रा। एक नन्ही-सी प्यारी-सी लड़की को रोते देख, उसने पूछा, "किस कारण रो रही हो बिटिया ?"

"बाबा! मैं घर से भाग आई हूँ। वहाँ भैया ने गालियाँ दीं। मुझसे ये गालियाँ सही न गईं और मैं यहाँ भाग आई। मुझे यहाँ डर लगने लगा है ! मैं क्या करूँ, कहाँ जाऊँ ?" स्वन्य किसुॅर ने कहा।

लड़की की दशा देख दरवेश के मन में दया उपजी। वह जेब से बीज के सात दाने निकालकर स्वन्य किसुॅर से कहने लगा, "ले बेटी, ये बीज बो दे। इनसे सात पेड़ उग आएँगे। तुम इनमें से एक पेड़ की फुनगी पर चढ़ कर बैठ जाना। वहाँ तुम्हें कोई भय या खतरा नहीं।"

स्वन्य किसुॅर ने बीज के सातों दाने लिए और बो दिए। पलक झपकते ही सात पेड़ उग आए और वह एक पेड़ की फुनगी पर चढ़कर बैठ गई। इतने में उसका पिता और भाई उसे तलाशते हुए वहाँ आ गए। जब उन्होंने स्वन्य किसुॅर को पेड़ की फुनगी पर बैठा पाया तो वे उसकी मिन्नतें करने लगे कि वह नीचे आए और उनके साथ घर लौट चले। किन्तु स्वन्य किसुॅर टस से मस न हुई। एक न मानी उनकी ! अब पिता को क्रोध आया। उसने एक कुल्हाड़ा लिया

और लगा उस पेड़ को काटने। पेड़ गिरने को हुआ तो स्वन्य किसुॅर दूसरे पेड़ की फुनगी पर गई। पिता उस पेड़ पर भी कुल्हाड़े के वार करने लगा वह गिरने को हुआ तो स्वन्य किसुॅर तीसरे पर चली गई। पिता ने तीसरे पेड़ को काटना शुरू किया तो स्वन्य किसुॅर चौथे पेड़ पर। इसी तरह जब छह पेड़ कट गए तो स्वन्य किसुॅर सातवें पर गई। उसके पिता ने उस पेड़ पर भी प्रहार किया तो वह बहुत व्याकुल होने लगी, अब वह करे तो क्या करे ! उसने चाँद की बुढ़िया को आवाज़ दी, "माँ ! सीढ़ी लगा दे अपनी ! मैं चली आऊँगी तुम्हारे पास माँ !" चाँद की बुढ़िया ने एक किरण फेंकी और इसी के सहारे स्वन्य किसुॅर उसके पास पहुँची। यह देखकर पिता-पुत्र दोनों खिसियाने से हो गए। कुछ देर ठहरने के बाद वे वहाँ से चले गए।

स्वन्य किसुॅर अब चाँद की बुढ़िया के पास रहने लगी। उसका समय वहाँ चैन और शान्ति से कटने लगा। एक दिन चाँद की बुढ़िया स्वन्य किसुॅर से कहने लगी, "बेटी स्वन्य किसुॅर! जरा मेरे बालों में कंघी कर दे। किन्तु हाँ, ध्यान रहे कि कंघी ज़्यादा ऊपर नहीं ले जाना! मेरे बाल गिरने लगे तो मुझे गुस्सा आ जाएगा।"

"अच्छा अम्मा," कहकर स्वन्य किसुॅर चाँद की बुढ़िया के बालों में कंघी फेरने लगी। कंघी करते स्वन्य किसुॅर से चूक हो ही गई। हाथ ऊपर, सिर की ओर गया और बुढ़िया के बाल गिरने लगे। बुढ़िया को बहुत ही गुस्सा आया। मारे क्रोध के उसने स्वन्य किसुॅर को आसमान से निकाल बाहर किया और धरती पर गिरा दिया! आसमान से गिरते-गिरते स्वन्य किसुॅर एक कौए के घोंसले में जा गिरी। उस घोंसले में एक बूढ़ा कौआ रहता था। वह निःसन्तान था। जब साँझ ढली और बूढ़ा कौआ अपने घोंसले में लौटा तो वहाँ स्वन्य किसुॅर को बैठा पाया!

"तुम कौन हो ? यहाँ कैसे आई हो ?" बूढ़े कौए ने प्रश्न किए। स्वन्य किसुॅर ने बिलखते हुए अपनी सारी व्यथा-कथा सुना दी। उसकी कथा ने बूढ़े कौए का मन पिघला दिया, "अच्छा बिटिया, तुम अब से यहीं रहोगी। मेरे भी कोई सन्तान नहीं है। अब से मैं तुम्हारा पिता और तुम मेरी बेटी हो गई।" कौए ने कहा।

दिन बीतते गए। स्वन्य किसुॅर सुख-शान्ति से कौए के कोटर में रहने लगी। कागा बाबा उसके लिए तरह-तरह की वस्तुएँ लाता। इसी बीच एक दिन स्वन्य किसुॅर को खोजते-खोजते उसकी माँ इस वृक्ष के नीचे आ पहुँची। ज्यों ही माँ ने बेटी को कोटर में देखा, उसकी आँखें छलछला आईं। वह बेटी से अनुनय करने लगी, "आ, नीचे आ बेटी! चल घर चलें।" किन्तु स्वन्य किसुॅर बिलकुल न मानी। माँ आँसुओं से भीग गई और बोली, "आ! आ, स्वन्य किसुॅर बिटिया, तुम्हारी गुड़िया

इन्तज़ार में है। वह जाया हुई जा रही है।''

''माँ, मेरी माँ, मैं नीचे नहीं आने की।'' स्वन्य किसुॅर ने उत्तर दिया।

माँ फिर अनुनय करने लगी ! मिन्नतें करने लगी! हाथ जोड़कर कहने लगी, ''आ, आ, मेरी रानी बिटिया गुड़िया जाया हुई जा रही है। गुड़िया जो तुम्हारी है।'' पर स्वन्य किसुॅर पर कोई असर न हुआ।

शाम हो गई। स्वन्य किसुॅर की माँ थक-हार कर घर लौट गई।

उधर जब कागा बाबा अपने बसेरे में लौटा तो स्वन्य किसुॅर की आँखों से आँसुओं की झड़ी लग गई। कौए ने पूछा, ''बेटी, तुम रो क्यों रही हो ?''

''बाबा! मेरे लिए एक गुड़िया ला दीजिए।'' स्वन्य किसुॅर ने जवाब दिया। कागा बाबा ने ढाढ़स बँधाते हुए कहा—''बाबा तुम्हारे बलिहारी बेटी, कल तुम्हारे लिए गुड़िया आ जाएगी।'' अगले दिन कौआ उसके लिए एक गुड़िया लाया।

दूसरे दिन स्वन्य किसुॅर का पिता अपनी रूठी बेटी को मनाने आ गया। पर स्वन्य किसुॅर नहीं मानी। तब वह मिन्नतें करने लगा, ''आ, आ, प्यारी बेटी, रानी बेटी, विविध रंगों से सजाया तुम्हारा चर्खा घर में पड़ा-पड़ा धूलि-धूसरित होकर खराब हुआ जा रहा है।''

स्वन्य किसुॅर दोटूक बोली, ''नहीं मेरे पिताजी, मैं नहीं जाऊँगी।''

पिता फिर बेटी की मिन्नतें करता, वास्ता देता बोला, ''आ मेरी बेटी। चर्खा घर में पड़ा-पड़ा खराब हुआ जा रहा है।'' स्वन्य किसुॅर के कानों पर जूँ तक नहीं रेंगी।

साँझ घिर आई। स्वन्य किसुॅर का पिता थक-हारकर घर लौट आया। कागा बाबा जब कोटर में लौट आया, स्वन्य किसुॅर फूट-फूट कर रोने लगी। ''काहे को रो रही हो बेटी ?'' कागा बाबा ने पूछा।

''बाबा! मेरे लिए एक रंगीन चर्खा ला दीजिए।'' स्वन्य किसुॅर ने कहा। कागा बाबा ने ढाढ़स बँधाया और कहा, ''बाबा तुम पर वारी बेटी ! कल तुम्हारे लिए रंगीन चर्खा आ जाएगा।'' अगले दिन कागा स्वन्य किसुॅर के लिए खूबसूरत-सा रंगीन चर्खा ले आया।

अगले दिन स्वन्य किसुॅर को मनाने उसका भाई आ गया। हाथ जोड़े, मिन्नतें कीं और कहने लगा, ''मेरी बहना! मेरी अच्छी बहना! आजा, सोने के सभी आभूषण घर में पड़े-पड़े खराब हुए जा रहे हैं।'' पर, स्वन्य किसुॅर टस से मस नहीं हुई, बोली, ''नहीं भैया, मैं नहीं आती।''

भाई फिर अनुनय करने लगा। किन्तु सब निष्फल। दिन ढल गया। भाई निराश होकर घर लौट गया। कागा जब कोटर में आया स्वन्य किसुॅर बेतहाशा

रोने लगी।

"क्या है बेटी, अब काहे को रो रही हो ?" कौए ने पूछा।

"बाबा, मेरे लिए सोने के आभूषण ला दीजिए ना !" स्वन्य किसुॅर बोली।

"बाबा वारी जाए तुम पर बेटी ! बस कल ही तुम्हारे लिए सोने के सुन्दर आभूषण आएँगे, बेटी।"

समय गुज़रता गया। एक दिन स्वन्य किसुॅर सोने के आभूषण पहने दुल्हन-सी लग रही थी और रंगीन चर्खा कात रही थी कि तभी उस देश का राजा उधर से गुज़र रहा था। राजा शिकार खेलने मन्त्रियों के साथ निकला था। राजा जब उस वृक्ष के नीचे से गुजरा तो उसके कानों में चर्खे की आवाज़ आ गई। उसने ऊपर देखा और वहाँ एक सजी-सँवरी अप्सरा-सी युवती को पाया। प्रथम दृष्टि में ही वह उस पर मोहित हो गया! उसने स्वन्य किसुॅर को शपथ देकर कहा, "शपथ है तुम्हें उसकी जिसने तुम्हें भी बनाया और मुझे भी, बता दो कि तुम स्वर्ग की कोई अप्सरा हो या धरती पर की कोई सुन्दरी।"

"शपथपूर्वक कहती हूँ कि मैं मनुष्य हूँ और नाम मेरा है स्वन्य किसुॅर।" स्वन्य किसुॅर ने उत्तर दिया।

"तब तुम्हारा स्थान कौए का घोंसला नहीं! नीचे आ जाओ, मैं तुम्हें अपने महल में ले जाऊँगा।" राजा ने कहा।

"जब तक मेरा बाबा नहीं आता और मैं उससे इज़ाज़त नहीं लेती, तब तक मैं यहाँ से जा नहीं सकती।" स्वन्य किसुॅर ने उत्तर दिया।

"कब आएगा वह ?" राजा ने प्रश्न किया।

"साँझ को।" स्वन्य किसुॅर का उत्तर था।

"मैं उसकी प्रतीक्षा करूँगा।" राजा ने कहा।

"किन्तु महाराज, हमें शाम तक यहाँ रुकना नहीं चाहिए, हमें राजमहल पहुँचने में देर होगी और रास्ता भी बहुत कठिन है।" एक मन्त्री ने सुझाव दिया।

"मन्त्री, तो तुम्हीं बताओ कि हम क्या करें ? हम बिना स्वन्य किसुॅर को संग लिये महल में लौट नहीं सकते।" राजा ने विवशता दिखाते हुए कहा।

"राजन्! यदि स्वन्य किसुॅर स्वयं इस वृक्ष से नीचे नहीं आती तो हम इसे कटवाएँगे। स्वन्य किसुॅर अपने आप आपके चरणों में गिर जाएगी और हम इसे साथ लेकर चलेंगे।" मन्त्री ने उत्तर दिया।

"कुछ अवश्य किया जाना चाहिए। नहीं तो···।" राजा बोला।

मन्त्री स्वन्य किसुॅर को नीचे आने के लिए कहता है। पर वह बाबा की आज्ञा के बिना नीचे आना नहीं चाहती। आखिर, मन्त्री लकड़हारों को बुलाकर वृक्ष काटने के लिए कहता है। लकड़हारे वृक्ष काटने लगते हैं। स्वन्य किसुॅर उन्हें कोसते हुए

कहती है, "युस कावुं बबुंन्य ददुॅर च़टे, तस मख तुं मडकुंच़ हटे प्यन्य ! याने जो कागा बाबा का यह कोटर काटेगा, कुल्हाड़े से उसकी गर्दन कट जाए!" किन्तु लकड़हारे कुछ नहीं मानते। वृक्ष कट कर गिर जाता है और स्वन्य किसुॅर इसी के साथ नीचे आ गिरती है। राजा उसे उठाकर राजमहल ले जाता है।

राजा की पहले से ही छह पत्नियाँ थीं। स्वन्य किसुॅर सातवीं रानी हो गई। एक दिन राजा को ख्याल आया कि क्यों न इन सात रानियों में से किसी एक को, उसके गुणों के आधार पर, पटरानी बना दिया जाए। राजा सातों रानियों को बुलाता है और उन्हें एक निश्चित मात्रा में धान देकर कहता है, "तुम लोगों को समान मात्रा में धान दिया गया, जो जल्दी से कम समय में इसे कूट कर देगी उसे पटरानी बना दिया जाएगा।"

सातों रानियाँ धान लेकर गईं और अपने-अपने महल में कूटने लगीं। किन्तु स्वन्य किसुॅर ने धान को ऐसे ही रख छोड़ा। वह खिड़की पर बैठी रोने लगी कि वह धान को कैसे कूटे क्योंकि वह धान कूटना नहीं जानती थी। इसी समय कागा बाबा उसे ढूँढ़ते हुए वहाँ आ पहुँचा। स्वन्य किसुॅर को देख उसका प्यार उमड़ आया। बेटी को गले लगाया और स्वन्य किसुॅर ने उसे रोते हुए सारा हाल सुनाया। कागा बाबा कहने लगा, "बाबा तुम्हारे वारी बेटी, तुम आँसू क्यों बहाती हो ?" ऐसा कह वह वहाँ से तत्क्षण उड़ा और सभी चिड़ियों को आज्ञा दी कि वे सभी एक क्षण में राजमहल जाएँ और पलक की झपक में स्वन्य किसुॅर के धान का छिलका उतार दें। सब चिड़ियाँ आ गईं। धान का छिलका उतर गया। स्वन्य किसुॅर अत्यन्त हर्षित हुई। चावलों को उठाया और राजा के पास ले गई। जाते हुए अन्य रानियाँ मिलीं। उन्होंने पूछा कि बहन, इतनी जल्दी धान कैसे कूटे, जब कि हम अभी भी कूट ही रही हैं।

"बहनो! क्या बताऊँ, मैंने सारा का सारा धान वितस्ता में डाल दिया और साथ ही ओखली और मूसल भी ! वहाँ से एक क्षणांश में ही धान के चावल बन के आ गए।" स्वन्य किसुॅर बोली।

यह सुनकर सभी रानियों ने अपना-अपना धान, ओखली और मूसल वितस्ता में डाल दिए।

स्वन्य किसुॅर ने चावल राजा के सामने रखे। राजा बहुत प्रसन्न हुआ। अन्य रानियों का हाल बुरा था। कोई भी धान कूट के नहीं लाई, अतः राजा उन पर अप्रसन्न रहा।

अगले दिन राजा ने आज्ञा दी कि सभी रानियाँ अपने-अपने महल को लीप-पोत लें। जो रानी अपने महल को सुन्दर ढंग से लीपेगी, वही पटरानी होगी। सभी रानियाँ अपने-अपने महल को लीपने गईं। स्वन्य किसुॅर भी गई, पर रोने लगी— उसे

लीपने की पहचान ही नहीं थी। वह मुँह लटकाए आँसू बहाती बैठी ही थी कि कागा बाबा आ पहुँचे। स्वन्य किसुॅर ने अपने दुःख का कारण कह सुनाया। कागा बाबा तसल्ली दे गया। उसी समय उड़ान भरी और सभी अबाबीलों व अन्य चिड़ियों को आज्ञा दी कि वे एक क्षण में स्वन्य किसुॅर का महल सजा दें। चिड़ियाँ गईं। महल सज उठा। यह देख स्वन्य किसुॅर फूली न समाई! राजा को बुलावा देने गई। रास्ते में अन्य रानियाँ मिलीं, पूछ बैठीं, ''बहन इतने कम समय में ही महल कैसे सजा चुकीं ?''

''क्या करूँ बहनो, मैं कीचड़, राख आदि लाई और उसी से दीवारें पोत डाली। तभी तो इतनी जल्दी काम हो गया।'' स्वन्य किसुॅर ने जवाब दिया। ये रानियाँ भी कीचड़, राख आदि लाईं और अपने-अपने महल की दीवारों पर पोतने लगीं। राजा रानियों के महल देखने आया। स्वन्य किसुॅर के महल के अलावा सभी महल बहुत ही भद्दे लग रहे थे। हर कमरे से बदबू आ रही थी ! केवल स्वन्य किसुॅर का महल ही ऐसा था जो सजा-सँवरा था और जिसके कमरों से खुशबू आ रही थी। इसे देखकर राजा का मन प्रसन्न हुआ।

अब की बार राजा की आज्ञा थी कि सभी रानियाँ अपने-अपने महल में स्वादिष्ट पकवान बनाएँ। जिस रानी का बनाया पकवान स्वादिष्टतम होगा, वह पटरानी बना दी जाएगी।

सभी रानियाँ अपने-अपने महल में पकवान बनाने लगीं। स्वन्य किसुॅर के लिए यह अवसर भी कठोर परीक्षा का था। वह उदास हो सोचने लगी। उसके भाग्य से कागा बाबा इस समय भी वहाँ आया। उसने स्वन्य किसुॅर से उसकी उदासी का कारण पूछा। उसने उत्तर में कहा, ''बाबा, आज फिर राजा हमारी परीक्षा लेना चाहते हैं, आज्ञा दी है कि हम स्वादिष्ट पकवान बनाएँ। जिसके पकवान अत्यन्त स्वादिष्ट होंगे, वही पटरानी बना दी जाएगी।''

कागा बाबा ढाढ़स बँधाते हुए बोले, ''बाबा तुम्हारे वारी बेटी! काहे को इतना दुखी हो रही हो!'' उसी क्षण बूढ़ा कागा उड़ चला। सभी चिड़ियों को आज्ञा दी कि वे स्वन्य किसुॅर के महल में तरह-तरह के मसाले, घी, केसर और मांस आदि ले आएँ। एक क्षण में सारा प्रबन्ध हुआ और पलक की झपक में ही सभी पकवान तैयार हो गए!

स्वन्य किसुॅर यह देखकर अत्यन्त हर्षित हुई और राजा को न्योतने चली। जा ही रही थी कि रास्ते में अन्य छह रानियाँ मिलीं। पूछने लगीं, ''बहन, इतना सारा काम कैसे इतनी जल्दी निपटा दिया ?''

''क्या करूँ बहनो, मैंने घास-फूस पकाई, पानी के बदले गोमूत्र डाला। इसीलिए जल्दी निपट गई।'' स्वन्य किसुॅर ने जवाब दिया।

छहों रानियाँ गईं और ऐसा ही किया। परिणाम स्पष्ट था। राजा हरेक के महल से नाक-भौं सिकोड़ बाहर चला आया। स्वन्य किसुॅर के महल में उसे नाना प्रकार के स्वादिष्ट पकवान खाने को मिले। अबकी बार राजा स्वन्य किसुॅर पर अत्यन्त प्रसन्न हो गया। बाकी रानियों पर इतना क्रोधित हुआ कि उसी समय उन सब को तलाक दे दिया। स्वन्य किसुॅर को अपनी चहेती पटरानी घोषित किया।

उन दोनों ने लम्बे समय तक राज-पाट का आनन्द भोगा।

ज़ोहरा खोतन और हयाबन्द

बहुत समय पहले की बात है कि मनोरम कश्मीर घाटी में एक धनवान व्यापारी रहता था। उसका एक सलोना पुत्र था जिसका नाम था हयाबन्द।

एक सुबह दो अनाथ बच्चे, जो चीथड़े पहने थे, व्यापारी की दुकान के सामने से गुज़रे। व्यापारी को जब पता चला कि ये बच्चे, जो आपस में भाई लगते थे, अनाथ हैं तो उसने इन पर तरस खाकर अपने घर बुला लिया ताकि ये हयाबन्द के साथी बन कर रहें। ये दोनों लड़के दुकान पर व्यापारी की सहायता करते थे। व्यापारी इन्हें हयाबन्द के साथ पढ़ाता भी था, परन्तु इनका मन पढ़ाई में नहीं लगता था, क्योंकि ये स्वभाव से बहुत ही शरारती और चंचल थे।

हयाबन्द बड़ा होने पर एक परिपक्व पुरुष बनता गया। इसकी मँगनी शहर के एक व्यापारी की लड़की के साथ कर दी गई। दोनों अनाथ भाइयों ने अपने स्वभाव वश असत्य अफवाहें फैलाकर हयाबन्द की मँगनी तोड़नी चाही पर कामयाब न हो सके।

विवाह का दिन आ गया। जब व्यापारी के घर से बारात चली तो इन दो अनाथ भाइयों ने रास्ते में हयाबन्द को कोई नशीली चीज़ खिला दी। जब बरात दुल्हन के घर पहुँची तो लड़कों ने हयाबन्द के ससुर से कहा कि हयाबन्द नितान्त बुद्धिहीन एवं वज्र मूर्ख है। इन शब्दों ने हयाबन्द के ससुर पर अपना प्रभाव डाला क्योंकि हयाबन्द नशे के असर से बुद्धू ही दिख रहा था। बात फैल गई। लड़की वाले हयाबन्द की बारात लौटाने की तैयारी करने लगे। वह बात ज़ोहरा खोतन के कानों तक पहुँची तो उसने जबरदस्त प्रतिवाद किया और कहा कि मैं हयाबन्द को अपना पति मान चुकी हूँ, अतः यह शादी किसी सूरत में भी टूट नहीं सकती, भले ही हयाबन्द देखने में बुद्धू और बेवकूफ लगता हो। थोड़े समय के उपरान्त हयाबन्द पर नशे का असर कम होने लगा और वह वैसा दिखने लगा जैसा था।

हयाबन्द और उसके घर वाले दुल्हन को लेकर चले। ज़ोहरा खोतन के लिए एक सुन्दर-सी डोली लाई गई। डोली ले जाते समय वर पक्ष को रात-भर के लिए एक नदी के किनारे रुकना पड़ा। इसी समय ज़ोहरा खोतन को याद आया कि उसने अपनी सास के लिए कोई भेंट नहीं लिया है। यह सोचकर वह अत्यन्त उदास हो

गई, पर उसे शीघ्र ही नींद भी आ गई क्योंकि दिन-भर के सफर ने उसे काफी थका दिया था। आँख झपकते ही ज़ोहरा ने एक आदमी को सपने में देखा जो उससे कहने लगा, "ज़ोहरा उठो! उदास मत होओ। दरिया के किनारे जाओ। वहाँ तुम्हें एक तैरता शव दिखेगा। तुम उस शव को अपने पास आने के लिए कहना। वह आएगा। उस शव की बाँह में एक रत्न जड़ित चूड़ा होगा, उसे उतारो और वही अपनी सास को भेंट में दो।" ज़ोहरा खोतन का स्वप्न भंग हो गया। वह उठ बैठी। कपड़े पहने और चली दरिया की ओर। वहाँ एक तैरता शव था जो बुलाने पर उसकी ओर आ गया। उसने रत्नजड़ित चूड़ा उतार दिया।

दोनों अनाथ ईर्ष्यालु गरीब भाई, जो हर समय कोई-न-कोई खुराफात करते रहते थे, रात में ज़ोहरा खोतन के पीछे लगे थे। सुबह उन्होंने ज़ोहरा खोतन के ससुर तथा अन्य लोगों से कहा कि ज़ोहरा खोतन एक नरभक्षी जादूगरनी है। वह रात को अपने तम्बू से निकली और एक महिला को मार डाला, उसका खून पिया और उसकी बाँह से चूड़ा उतार लिया। हयाबन्द ने जब यह बात सुनी तो वह बहुत उदास हो गया क्योंकि उसे इस बात पर कतई विश्वास नहीं हो रहा था कि उसकी पत्नी एक जादूगरनी हो सकती है। इस बात ने उसे बहुत परेशान कर दिया। वह कमज़ोर एवं क्षीण होता गया। व्यापारी ने जब अपने पुत्र का यह हाल देखा तो उसने उसे स्वास्थ्य-सुधार के लिए एक व्यापार-यात्रा पर भेज दिया।

इस यात्रा में दोनों अनाथ भाई भी हयाबन्द के साथ हो लिए। रास्ते में हयाबन्द को अचानक याद आया कि वह अपने बही खाते तो ज़ोहरा खोतन के कमरे में ही भूल आया है। वह घर लौट आया। जब वह ज़ोहरा के कमरे में गया तो ज़ोहरा के अपूर्व सौन्दर्य और आकर्षण ने उसे ध्यानरत-सा कर दिया। वह कुछ समय के लिए गुप्त रूप से ज़ोहरा के साथ ही रहा और बाद में दोनों अनाथ भाइयों के साथ व्यापार यात्रा में मिल गया। इन लड़कों को मालूम था कि हयाबन्द इतने समय कहाँ रहा होगा।

इन कुटिल अनाथ भाइयों ने फकीरों का वेश धारण किया और वापस व्यापारी के पास चले गए। वहाँ उन्होंने ज़ोहरा खोतन पर बदचलन औरत होने का इलज़ाम लगाया। व्यापारी एक बार फिर इन दुष्टों के जाल में फँस गया। वह ज़ोहरा खोतन को काज़ी के पास ले गया। काजी साहब ने उसे अपराधी घोषित कर मौत की सज़ा सुनाई।

ज़ोहरा खोतन निश्चित तिथि पर सर कटाने के लिए लाई गई। बधिक ने उसकी गर्दन पर अपनी तलवार से जब वार करने के लिए हाथ ऊपर उठाया तो किसी अदृश्य शक्ति ने उसकी बाँह पकड़ ली! दूसरी बार भी ऐसा ही हुआ और तीसरी बार भी ! सभी आश्चर्यचकित हो उठे और ज़ोहरा खोतन से कहने लगे, "अरी,

तुम कैसी औरत हो ?''

"मैं बेकसूर हूँ।'' वह बोली।

ज़ोहरा खोतन ने बेकसूर होने तथा अपने सतीत्व के बल से पथ के वृक्ष से (जिसकी छाया तले उसे उसके धड़ से सिर अलग करने के लिए लाया गया था।) अपने पति को, जब भी वह वहाँ से गुजरे, उसके जिन्दा होने का सन्देश देने को कहा। वह दूसरे शहर चली गई और वहाँ एक वृद्ध विधवा के साथ रहने लगी। पेट की आग बुझाने तथा अपनी साँसें चालू रखने के लिए वह यहाँ काम भी करने लगी। यहाँ रहते हुए उसने एक सुन्दर-सलोने शिशु को भी जन्म दिया। जब वह काम पर घर से बाहर जाती तो अपने बच्चे को वृद्ध विधवा के पास छोड़ जाती।

इस शहर के राजा की छह पुत्रियाँ थीं। जब रानी एक और सन्तान को जन्म देने वाली थी तो राजा ने उसे सावधान किया था कि यदि उसने पुनः एक और कन्या को जना तो वह उसे मार देगा। दुर्भाग्य ! रानी ने नियत समय पर एक और पुत्री को जन्म दिया। राजा के डर के मारे रानी ने कन्या को अपनी एक विश्वस्त दासी को देकर किसी के नवजात पुत्र से बदलने के लिए भेजा। दासी बूढ़ी विधवा के पास आई और लालची विधवा ने काफी धन के बदले ज़ोहरा खोतन के पुत्र को उसे दे दिया।

अपने पति को याद करते हुए ज़ोहरा खोतन ने बूढ़िया विधवा के साथ दिन गुजारे। इस शहर के एक व्यापारी ने ज़ोहरा खोतन के सौंदर्य और गुणों के बारे में सुना और वह उसे अपनी पत्नी बनाने के लिए लालायित हुआ। व्यापारी ने ज़ोहरा को अपने इरादे से अवगत किया पर ज़ोहरा पर कोई प्रभाव न पड़ा। एक दिन व्यापारी ने अपने दो शक्तिशाली आदमियों को ज़ोहरा को बलपूर्वक लाने के लिए भेजा।

"अपने मालिक से कह दो कि मैं मर गई हूँ।'' ज़ोहरा खोतन ने उन आदमियों से कहा। फिर उसने मिट्टी ली। मिट्टी को पानी से सान दिया। अच्छी तरह से गूँथ कर एक औरत के सिर की मूर्ति बना डाली। हयाबन्द की मँगनी की भगवान से प्रार्थना की जिसके फलस्वरूप मूर्ति ज़ोहरा खोतन के सिर में परिवर्तित हो गई, जिसकी गर्दन से ताज़ा खून टपकता था!''

"यह ले जाओ और अपने मालिक को दे दो!'' उसने उन दोनों से कहा। वे दोनों सिर को लेकर चले गए।

ज़ोहरा खोतन पति के विरह में विधवा के साथ दिन गुजार रही थी। कालान्तर में ज़ोहरा का बालक एक सलोना लड़का बन गया। एक दिन राजकुमार विधवा के घर के समीप से गुजरा। जब उसकी दृष्टि ज़ोहरा खोतन पर पड़ी तो उसके उदास सौन्दर्य ने उसे आकृष्ट कर दिया। उसने मन-ही-मन सोचा कि मैं ज़ोहरा खोतन

को ही अपनी पत्नी बना लूँगा। राजा ने, जो राजकुमार से अत्यन्त प्यार करता था, जब ज़ोहरा खोतन के सौन्दर्य के बारे में सुना तो वह उसे अपनी पुत्र-वधू बनाने के लिए तैयार हो गया। ज़ोहरा खोतन भी इस विवाह के लिए राजी हो गई पर उसने राजा से विनती की कि उनकी शादी छह महीने तक स्थगित रखी जाए क्योंकि उसे अभी भी आशा है कि उसका पति उसे लेने आ जाएगा।

हयाबन्द व्यापार के लिए अनेक शहरों में घूमा। उस वृक्ष ने, जिसके नीचे ज़ोहरा खोतन का वध होना था, हयाबन्द को ज़ोहरा खोतन का सन्देश दिया। हयाबन्द ने हिम्मत से काम लिया और हर जगह ज़ोहरा खोतन की भरसक तलाश की और अन्त में उस शहर में भी पहुँच गया, जहाँ वह थी। जब वह वहाँ पहुँचा उस समय ज़ोहरा खोतन को राजभवन में दुल्हन के रूप में सजाया जा रहा था और सभी लोग इसकी चर्चा कर रहे थे। हयाबन्द ने फौरन अपनी अंगूठी, जिस पर उसकी मुद्रा का निशान था, राजभवन में ज़ोहरा खोतन के पास भिजवा दी। ज्यों ही उसने अपने पति की मुद्रायुक्त अंगूठी देखी, दुल्हन का राजसी परिधान उतार फेंका और अपने पति की ओर बेतहाशा दौड़ पड़ी तथा उसे अपनी बाँहों में ले लिया।

राजकुमार को यह सब देखकर बहुत गुस्सा आया, पर बूढ़ी विधवा ने उसे बता दिया कि वह ज़ोहरा खोतन का ही बेटा है और उसी ने लालच में आकर उसे शैशवावस्था में रानी को दिया था। ज़ोहरा खोतन का मिलन अपने पति और पुत्र से हो गया।

ये तीनों अपने शहर लौट गए और वहाँ सुख-शान्तिपूर्वक रहने लगे।

पठान और पण्डित

एक बार एक पठान, जो अपने को बहुत ही शक्तिशाली होने और कश्मीर के शासक वर्ग के होने पर गर्व करता था, कश्मीर की राजधानी के उस क्षेत्र में चल रहा था जहाँ कश्मीरी पण्डितों की बहुत भीड़ थी। वहाँ उसने एक कश्मीरी पण्डित युवक को देखा जिसने मूँछें उगा रखी थीं। और इन्हें ताव देकर ऊपर की ओर मोड़ दिया था। पठान ने भी अपनी मूँछें इसी तरह रख रखी थीं। जब पठान ने इस युवक को देखा तो उसे लगा कि यह मेरे लिए अनादर की बात है कि पठानों द्वारा शासित एक युवक पठानों की तरह ही बहादुर और निडर दिखे। उसने युवक को रोका और गरज कर कहने लगा, "तुम्हारी मूँछें ऊपर की ओर मुड़ी क्यों हैं ?"

जब बाकी कश्मीरियों ने देखा कि बहादुर पठान उनमें से एक पर नाराज है तो वे सब भाग गए परन्तु मूँछों वाले पण्डित युवक ने उत्तर दिया, "मूँछें मेरी हैं और मैं इन्हें अपनी मर्जी के अनुसार नहीं रख सकता क्या ?"

"नहीं ऐसा नहीं हो सकता।" पठान गुस्से में गरजा। "तुम्हें कोई हक नहीं कि तुम उसी तरह से अपनी मूँछें रखो जिस तरह से तुम पर हकूमत करने वाले बहादुर पठान रखते हैं।"

"क्यों ?" युवा पण्डित ने पूछा।

"तुम क्यों कहते हो ? लोगों को यह नहीं समझना चाहिए कि तुम उतने ही हिम्मती और बहादुर हो जितने कि पठान हैं।" पठान ने भूमि पर पैर पटकते हुए कहा।

"मगर मैं हूँ।" पण्डित युवक ने उसे सुनाया।

युवक के इस कथन ने पठान को बहुत परेशान किया। उसने अपनी तलवार खींची और युवक को द्वंद्वयुद्ध के लिए ललकारते हुए कहा, "आओ देखें कि हम दोनों में कौन बहादुर है।"

पठान की चमकीली तलवार देखते ही युवक कुछ क़दम पीछे हट गया और पठान से कहने लगा, "पठान साहब, मेरे हाथ में कोई तलवार नहीं, और मुझे मालूम है कि इस द्वंद्वयुद्ध में हम में से कोई मरेगा तथा जो बचेगा भी वह अपाहिज हो जाएगा, इसलिए मैं घर जाकर तलवार लाऊँगा। वहाँ अपने सभी परिवार-जनों

को मार डालूँगा ताकि मेरे मरने के बाद मुझे यह चिन्ता न सताए कि उन्हें कमा कर कौन देगा।''

यह सुनकर पठान को भी विचार आया कि यदि वह युद्ध में मरा तो उसके पीछे परिवार का क्या होगा। अतः युवक से कहने लगा, ''हाँ, ठीक है, मैं भी परिवार के सभी सदस्यों को मार के आता हूँ।''

दोनों ने लड़ाई का समय नियत किया और अपने-अपने घर चले गए।

पठान ने वैसा ही किया जैसा कहा था और अपने नन्हे से शिशु को भी न बख्शा।

युवक जब घर गया तो उसने मूँछों को नीचे की ओर मोड़ दिया। अपनी पत्नी और बच्चे से बातचीत की। प्यार किया। वह यह भी भूल गया कि उसे नियत स्थान पर तलवार लेकर जाना है।

पठान पहले ही नियत स्थान पर पहुँच चुका था और अपनी तलवार से खून के दाग साफ कर रहा था।

जब पठान ने देखा कि युवक तलवार लेकर नहीं आया है तो चिल्लाया, ''अरे! अब क्या है पण्डित ? अपनी तलवार क्यों नहीं लाए हो ? तुम्हें पता नहीं कि तुम एक बहादुर पठान के साथ द्वंद्वयुद्ध करने आए हो ?''

पण्डित युवक ने बड़े मीठे लहज़े में जवाब दिया, ''अरे पठान साहब, यह सब किसलिए ? मूँछों के लिए ? मेरी ओर देखिए! मेरी मूँछें अब नीचे की ओर हैं। अब झगड़ा काहे का ?''

बुद्धिमत्ता राजकुमार के मित्र की

कहानी सुनाने वाला कहता है कि एक राजकुमार था जो एक दिन अपने मित्र के साथ हवा खाने के लिए नदी के किनारे-किनारे टहल रहा था। राजकुमार का मित्र उसका लंगोटिया था। बहुत ही बुद्धिमान और चतुर था। वह कठिन-से-कठिन कार्य की जिम्मेदारी लेता और अपनी जान जोखिम में डालकर भी उसे अंजाम देता, इसी कारण राजा का परिवार उसको अपने से कभी भी अलग नहीं होने देता था।

कहने वाला कहता है कि जब ये दोनों एक रमणीय स्थल पर पहुँचे तो वे एक सघन वृक्ष की छाया तले विश्राम के लिए रुक गए। थोड़ी देर बाद दोनों को नींद आ गई। घड़ी-दो घड़ी बाद राजकुमार जाग गया। आँख खुलते ही उसने एक अति सुन्दर अप्सरा-सी राजकुमारी को देखा। वह भी हवा खाने के लिए एक नाव में निकली थी। इस राजकुमारी का सौन्दर्य और हाव-भाव इतना आकर्षक था कि राजकुमार उसे देखते ही उस पर आसक्त हो गया। राजकुमारी के सौन्दर्य की एक झलक दिखाने के लिए राजकुमार ने अपने मित्र को भी जगाने के लिए झिंझोड़ा। पर जितनी देर में वह जागा, राजकुमारी काफी आगे निकल चुकी थी। राजकुमार अत्यन्त बेचैन हो गया और राजकुमारी को पाने के लिए तड़पने लगा।

''वह कौन साक्षात् रति थी कि तुम उसके लिए इतने विह्वल हो उठे हो ?'' मित्र ने पूछा।

''रति से भी सुन्दर थी वह! काश! तुम अपनी आँखों से उसे देख पाते! बिजली से भी अधिक आभामय थी वह!'' राजकुमार ने उत्तर दिया।

कामदेव के बाणों ने निशाने पर लगकर अपना काम कर दिया था जिससे राजकुमार यहाँ से जाने का नाम ही नहीं ले रहा था। मित्र से बोल पड़ा, ''यदि मुझे विवाह करना है तो मैं इसी राजकुमारी से करूँगा।''

''क्या तुम्हें मालूम है कि वह कौन है ? कहाँ की है और उसका नाम क्या है ?'' मित्र ने पूछा।

''मुझे मालूम होता तो क्या मैं यहीं पड़ा होता ?'' राजकुमार ने कहा।

''तो उसका विचार दिल से निकाल दो,'' मित्र ने कहा। यह सुनकर राजकुमार पगला-सा गया और अपने मित्र से कहने लगा, ''यदि तुम मेरे सच्चे मित्र हो तो

जैसे भी हो उसे मेरे लिए ला दो। नहीं तो मैं आत्महत्या कर लूँगा। उसके बिना मेरा जीना दूभर ही नहीं, असम्भव है।''

दोनों राजकुमारी को ढूँढ़ने के लिए दरिया के किनारे-किनारे बहुत दूर तक चले गए पर राजकुमारी न जाने तब तक किस शहर में पहुँच चुकी थी। निराश हो, थके-माँदे दोनों मित्र वापस घर लौट गए। राजकुमार ने खाना-पीना तथा अपना सारा काम छोड़ दिया। काफी ढूँढ़ने पर उन्हें पता चला कि वह अमुक बादशाह की बेटी है। इसके बाद राजकुमार ने अपने मित्र से कहा कि यदि वह उस राजकुमारी के पास नहीं पहुँचा तो उसके जीवित रहने की कोई आशा नहीं है। ''तो कमर कसकर हमें उसे प्राप्त करने के लिए चल देना चाहिए।'' विवश होकर मित्र ने कहा क्योंकि राजकुमारी के रूप-लावण्य ने राजकुमार को पागल बना दिया था। आखिर उन्होंने यात्रा पर जाने का निश्चय किया और दो हफ्ते बाद ये उस नगर में प्रविष्ट हुए जहाँ राजकुमारी रहती थी। यहाँ रहकर उन्होंने उस बुढ़िया के बारे में पता लगाया जो राजकुमारी के लिए नित्य एक पुष्पहार पिरोती थी और इसके बदले एक सोने की मुद्रा प्राप्त करती थी। दोनों मित्र अब इसी बुढ़िया के पास रहने लगे ताकि वे बुढ़िया के द्वारा राजकुमारी तक पहुँच सकें। कई दिन बीत गए। हर दिन की तरह बुढ़िया राजकुमारी के लिए पुष्पहार पिरो रही थी कि राजकुमार के मित्र ने बुढ़िया से कहा, ''माँ! लाओ यह पुष्पहार हम आपको पिरो देते हैं।''

''ठीक है, मुझे कोई आपत्ति नहीं।'' बुढ़िया ने हार थमाते हुए कहा। अब दोनों हार में फूल पिरोने लगे और इसी के साथ राजकुमारी के लिए एक पत्र भी रख दिया। हार बन जाने के पश्चात् बुढ़िया इसे लेकर राजकुमारी को देने के लिए गई। हार लेने के बाद राजकुमारी ने बुढ़िया से कहा, ''अम्मा आज तुम्हारे घर कोई अतिथि आए हैं क्योंकि पुष्पहार पिरोने के ढंग से लगता है कि आज यह हार तुम्हारे हाथों से पिरोया नहीं गया है। उठो, घर जाकर उन अतिथियों में से एक को मेरे पास भेज दो।''

बुढ़िया जब घर पहुँची तो अतिथियों से कहने लगी कि आज राजकुमारी तुम पर बहुत मेहरबान हो गई और तुम में से एक को अपने पास बुला रही है। उठो, एक जना फौरन उसके पास जाओ। यह सुनकर राजकुमार को विश्वास ही न हुआ कि यह सच है या मैं कोई सपना देख रहा हूँ। इसी बीच राजकुमार के मित्र ने राजकुमार से कहा, ''जब तुम राजकुमारी के कमरे में प्रविष्ट करो तो निर्भय होके घुसना। वहाँ सुन्दर-सुन्दर कालीन बिछे होंगे, तुम उनकी परवाह किए बगैर उनके ऊपर से ऐसे चलना जिससे उसे पूरा विश्वास हो जाए कि तुम सचमुच एक राजकुमार हो, पर बातचीत होशयारी से करना।''

राजकुमार तैयार होकर राजकुमारी के पास गया। राजकुमारी ने उसके लिए नाना प्रकार के व्यंजन और पकवान तैयार करवाए थे। आपस की बातचीत के बाद राजकुमार

के लिए भोजन परोसा गया। भोजन करते हुए राजकुमार को अपने मित्र का ध्यान आया। उसने सोचा, क्यों न अपने मित्र के लिए थोड़े से व्यंजन एवं पकवान अपने साथ ले जाऊँ। सोचने के बाद जेब से रूमाल निकाल ली और मुर्गे की एक बोटी इसमें रख दी। यह देखकर राजकुमारी आगबबूला हो उठी। सोचा, यह कोई भुख्खड़ है और उसी समय धक्के दे-देकर उसे अपने महल से निकाल बाहर करवाया। राजकुमार अत्यन्त उदास होकर मित्र के पास पहुँच गया। मित्र ने जब उसके चेहरे पर मातम छाया देखा तो पूछ बैठा, "अरे, यह तुम्हें क्या हो गया है ? रुआँसी सूरत किसलिए बना रखी है ?"

"अरे भाई, सब ठीक-ठाक हो गया था, खाना खाते हुए मुझे तुम्हारा ध्यान आया था और तुम्हारे लिए मैंने रूमाल में मुर्गे की एक बोटी उठाकर रख दी, इसी पर राजकुमारी क्रोधित हुई और मुझे अपमानित करके महल से बाहर निकलवा दिया।" राजकुमार ने उत्तर दिया।

यह सुनकर राजकुमार का मित्र हाथ मलने लगा और कहने लगा, तुमने वहाँ भुख्खड़पन का प्रदर्शन किया है। तुमसे मेरे बारे में सोचने और हमदर्द बनने को किसने कहा था ? बना-बनाया काम बिगाड़ दिया। मित्र की बातें सुनकर राजकुमार और भी दुखी हो गया, दोषी होने का एहसास करते हुए बुझी आवाज़ में कहने लगा, "अब···अब क्या किया जाए!"

"जो होना था, हो गया! अब मैं क्या कर सकूँगा!"

राजकुमार का चेहरा और भी फ़क पड़ गया। उसके इंजर-पिंजर ढीले हो गए। मुर्दों की-सी आवाज़ में बोला, "अगर राजकुमारी मेरी नहीं हो जाती तो मैं ज़िन्दा नहीं रहूँगा। अपने आपको खत्म कर दूँगा।"

बहुत सिर मारने के बाद मित्र ने राजकुमार से कहा, "अब तुम्हें एक दरवेश बनना पड़ेगा और मैं तुम्हारा चेला बनूँगा। बुढ़िया से बात करके रखो कि हमें यह नाटक करना है। तभी तुम्हें राजकुमारी मिल सकती है। लेकिन सावधान, तुम्हें बिलकुल मौन रहना है। तुम्हें केवल दाएँ-बाएँ आगे-पीछे सिर हिलाना है बस।"

राजकुमार ने जब बात मान ली तो वे दोनों फकीरों का वेश धारण कर और चेहरा तनिक बदलकर बुढ़िया के यहाँ से निकलकर शहर के एक एकान्त स्थल में जा बैठे। कई दिनों के बाद यह बात हर ज़बान पर थी कि एक बाक़माल (पहुँचा हुआ) दरवेश शहर के अमुक स्थल पर है और बहुत ही चमत्कारी महापुरुष है। लोगों को सुनना था कि वे जोक-दर-जोक अपनी समस्याएँ लेकर दरवेश के पास आने लगे। दरवेश केवल सिर हिलाता जा रहा था और उसका चेला इशारों से ही लोगों को दरवेश के सिर हिलाने का अर्थ समझाता जा रहा था।

राजकुमार के मित्र और राजकुमार ने बुढ़िया के यहाँ से चलने के पहले उससे

कह रखा था कि वह उनके जाने के कुछ दिन बाद राजकुमारी को दरवेश के चमत्कारों के बारे में कहे ताकि वह भी दरवेश के पास आने के लिए विवश हो जाए। करामाती दरवेश के बारे में सुनने के एक-दो दिन बाद राजकुमारी भी अपनी समस्या लेकर दरवेश के पास आ गई। वह बहुत ही विनम्र होकर दरवेश से पूछने लगी कि उसके भाग्य में क्या लिखा है…? वह अभी कह ही रही थी कि दरवेश के रूप में राजकुमार बोल पड़ा, ''तुम्हारी समस्या शीघ्र ही हल हो जाएगी, तुम मेरे साथ शादी कर लो।''

उसका इतना कहना था कि राजकुमारी का चेहरा तमतमाया और चीख-चीख कर दहाड़ने लगी कि ''यह कौन उठाईगीर कामुक व बदमाश दरवेश बनकर इस शहर में आया है। इसे अभी शहर से निकाल दिया जाना चाहिए।'' राजकुमार का मित्र हाथ मलने लगा कि इस भाग्यहीन के मुँह से यह बात क्यों निकल पड़ी! अब क्या किया जाए ? वह राजकुमार से बोल पड़ा, ''अरे भाई तुमने मुझे भी कहीं का न रहने दिया। अब भाग जाते पर कैसे भागें !'' कुछ क्षणों में ही वे जैसे-तैसे जान हथेली पर लिये उस शहर से भाग निकले।

दूसरी जगह पहुँचकर राजकुमार ने फिर वही रट लगाई, ''यदि मुझे राजकुमारी नहीं मिलती, मैं जिन्दा नहीं रह पाऊँगा। वह नहीं मिलती तो मैं अपने आपको खत्म कर लूँगा।''

''जो भी नाटक हमें करने चाहिए थे, वे किए। पर तुम निरे बुद्धू और बुद्धिहीन निकले। अब क्या हो सकता है! सब कसूर तुम्हारा अपना है। अब मैं क्या कर सकता हूँ।'' मित्र ने कहा। पर राजकुमार वही मुर्गे की एक टाँग कहता रहा। राजकुमार का मित्र फिर सोच में पड़कर अपने आप से कहने लगा कि अब कौन-सी चाल अपना लेनी चाहिए। कुछ क्षण सोचने के बाद उसे एक ख्याल आया और राजकुमार से कहा, ''तुम छह-सात महीनों तक सिर के बाल नहीं कटवाओ, बल्कि इन्हें खूब लम्बे करते जाओ। यह अवधि पूरी होने के बाद मैं तुम्हें बताऊँगा कि क्या करना है।''

राजकुमार ने इस अवधि में सिर के बाल बिलकुल भी नहीं कटवाए और इन महीनों में इसके सिर के बाल इतने लम्बे हो गए जितने कि महिलाओं के होते हैं। आठ-नौ महीनों के बाद इन्होंने सात-आठ गदहे खरीदे और ठेकेदार बनकर फिर से राजकुमारी के शहर की ओर चल दिए। इस शहर में वे एक जगह की मिट्टी दूसरी जगह डलवाने के काम में लग गए। दो-एक महीनों में शहर में यह बात फैल गई कि यह राजकुमार का मित्र एक बहुत बड़ा ठेकेदार है। राजकुमार का मित्र पुरुष-वेश में ही रहा पर राजकुमार स्त्रीवेश धारण कर उसकी पत्नी बन गया।

एक दिन राजकुमार के मित्र ने राजकुमार से कहा कि ''मैं तुम्हें स्त्रीरूप में बादशाह की बेटी के पास पहुँचा दूँगा और तुम्हें वहाँ दो-चार दिन रुकना पड़ेगा।

लेकिन खुदा के वास्ते वहाँ कोई ऐसी बात या हरकत न करना जिससे तुम्हें लेने के देने पड़ जाएँ। अब तो यह तुम्हारी जिन्दगी और मौत का सवाल है। हो सकता है कि राजकुमारी तुम्हें किसी दिन अपने पास सुला ले पर तुम्हें किसी भी कीमत पर उसे यह अभास नहीं देना है कि तुम पुरुष हो। जब तुम्हें राजकुमारी के पास रहते चार-पाँच दिन हो जाएँ तो तुम एक रात, जब घुप अँधेरा हो, उस समय निकल पड़ना जब राजकुमारी घोड़े बेचकर सोई हो, और मेरे पास आ जाना।''

ये बातें समझा कर राजकुमार का मित्र राजकुमार, जो उसकी पत्नी बना था, को लेकर राजकुमारी के पिता के पास पहुँच गया और बादशाह से अर्ज़ करने लगा, ''बादशाह सलामत! मैं आपके इस शहर में ठेकेदारी का काम कर रहा हूँ। मैं बहुत समय से अपने घर नहीं गया हूँ। मुझे कुछ दिनों के लिए घर जाने की मजबूरी है, पर समस्या है कि मैं अपनी पत्नी को कहाँ और किसके पास रखूँ क्योंकि मैं उसे अपने साथ नहीं ले जा सकता। इस शहर में मेरा कोई भी परिचित नहीं है। यदि आप बुरा न मानें तो मेरी पत्नी कुछ दिनों के लिए आपके पास ही रहती।'' बादशाह ने जवाब दिया, ''इसमें बुरा मानने की क्या बात है! कुछ दिनों की ही तो बात है।'' इसके पश्चात् बादशाह ने हुक्म दिया कि ठेकेदार की पत्नी को हमारी बेटी के पास रख दिया जाए। इसी वक्त बादशाह की आज्ञा का पालन हुआ।

अब ठेकेदार की पत्नी (याने राजकुमार) राजकुमारी के सभी रहस्यों से परिचित हो गया। राजकुमारी उसे अपने शयनकक्ष में सुलाने लगी और अपने मन की बातों से भी परिचित कराती रही। पाँच दिन बीतने पर राजकुमार अर्धरात्रि को राजकुमारी के शयन कक्ष से निकला और ठेकेदार द्वारा बताई गई गुप्त जगह पर ठेकेदार के पास पहुँचा। दूसरे दिन ठेकेदार, कोई अच्छी भेंट लेकर, बादशाह के हजूर में पहुँच गया और औपचारिकता निभाने के पश्चात् बादशाह से अपनी अमानत लौटाने के लिए कहा। पर अमानत कहाँ थी ? कहीं नहीं। ठेकेदार की बातों ने बादशाह को बहुत परेशान किया और उसके मुँह से बोल भी नहीं फूटे। ''बादशाह सलामत! मैं क्या अर्ज़ कर रहा हूँ।'' ठेकेदार बादशाह की चुप्पी पर बोल उठा।

पूरे शहर में यह बात फैल गई कि बादशाह ने किसी ठेकेदार की पत्नी को गायब कर दिया है। इसके बाद तुरन्त काजी साहब को फैसले के लिए बुलाया गया। दोनों पक्षों का बयान सुनने के बाद काजी साहब ने निर्णय दिया कि बादशाह या तो ठेकेदार को अपनी पत्नी या अपनी बेटी बदले में दें। चूँकि बेग़म बादशाह के निकाह में थी, अतः उसे कैसे देता ? पर राजकुमारी अभी कुआँरी ही थी इसलिए उसी को ठेकेदार को बहुत मजबूर होकर दिया गया। राजकुमारी ठेकेदार के साथ चल पड़ी और इस तरह अपने मित्र की बुद्धिमत्ता के कारण राजकुमार को राजकुमारी मिल गई।

सच्ची मैत्री

एक था राजकुमार। एक सुनार का बेटा उसका मित्र था। राजकुमार नियमित रूप से हर दिन दुकान पर सुनार के लड़के से बतियाने एवं गप्पें हाँकने के लिए जाता था। इनकी मित्रता की सूचना जब बादशाह को मिली तो वे आगबबूला हो गए। आज्ञा दी कि सुनार के लड़के को फौरन फाँसी दे दी जाए।

बादशाह के दरबार में एक बहुत ही बुद्धिमान मन्त्री था। इस मन्त्री ने बादशाह से विनती की कि ''जहाँपनाह! ऐसा दण्ड देना उचित नहीं रहेगा। यदि ऐसा दण्ड दिया गया तो इसका परिणाम अच्छा नहीं होगा। आपका खानदान ख्वामखाह बदनाम होगा कि एक सुनार के बेटे को राजकुमार के साथ मित्रता करने के लिए फाँसी दी गई। यह किसी मखमल के वस्त्र को टाट का पैबन्द लगाने के समान होगा। हज़ूर गलती हुई है, इससे आपके आँखों के तारे पर भी बुरा असर पड़ेगा। इसके लिए सोच-समझकर बुद्धिमत्तापूर्वक कोई कदम उठाना पड़ेगा जिससे साँप भी मरे और लाठी भी न टूटे।''

यह सुनकर बादशाह ने वजीर से कहा कि ''राय बिलकुल सही है। पर यह भी बताओ कि क्या किया जाना चाहिए ?'' मन्त्री ने उत्तर दिया, ''हज़ूर, यह आप मुझ पर छोड़ दीजिए। मैं विचार कर बता दूँगा।''

कई दिन बीत जाने के पश्चात् बादशाह की ओर से सुनार के लड़के को रात के खाने पर निमन्त्रित किया गया। निमन्त्रण देने स्वयं राजकुमार को उसके पास भेजा गया। दोनों मित्र बहुत खुश हो गए। उन्होंने एक-दूसरे को गले लगाया और आपस में बहुत प्यार जताया। नियत समय पर सुनार का बेटा राजमहल पहुँच गया। बादशाह ने अपने बेटे के मित्र का प्यार-भरा स्वागत किया। रात को भोजन आदि के बाद इधर-उधर की काफी बातें हुईं। काफी रात बीतने के पश्चात् बादशाह ने अपने बेटे से कहा कि अब बहुत देर हो गई है, अतः अब अपने मित्र को विदा कर दो। सुनार का बेटा उठ खड़ा हुआ और सबसे विदा लेकर घर की ओर चलने लगा। औपचारिकता वश वज़ीर राजमहल से कुछ दूर तक सुनार के साथ चला गया और उसे एक घोड़े पर, जो पहले से ही वहाँ तैयार रखा गया था, चढ़ाया। सुनार का लड़का घोड़े पर चढ़ा और घर की ओर चल पड़ा। घोड़ा जब राजमहल

से काफी दूर पहुँचा तो वह बेकाबू होकर सरपट दौड़ने लगा। सुनार का लड़का हजार कोशिश करने पर भी घोड़े पर क़ाबू न पा सका। उसने लगाम पूरे जोर के साथ खींच के रखी पर इस का भी घोड़े पर कोई असर न हुआ। सुनार का बेटा समझ गया कि दाल में कुछ काला है, बादशाह और वज़ीर ने मिलकर मुझे मार डालने का षड्यन्त्र रचा है। मगर सुनार के बेटे ने हिम्मत न छोड़ी। घोड़ा हवा से बातें करता था और सुनार का बेटा जीन से चिपककर मन-ही-मन खुदा से अपनी जान बचाने की प्रार्थना करता रहा।

घोड़ा एक जंगल में घुस गया। यहाँ दाएँ-बाएँ आगे-पीछे वृक्ष ही वृक्ष थे। लड़का ने धीरे-धीरे रकाबों से पैर निकाल दिए और एक जगह एक वृक्ष की टहनी को कस के पकड़ लिया। घोड़ा नीचे से भाग गया और लड़का वृक्ष की टहनी से लटका रहा। टहनी से लटके-लटके ही वह सोचने लगा कि घुप अँधेरी रात है अगर मैं नीचे कूद पड़ा तो जंगली जानवर मुझे खा जाएँगे। अतः टहनी के सहारे बहुत प्रयत्न और सावधानी बरतने के बाद वह एक मोटी डाल पर पहुँच गया। वह डाल के साथ चिपककर बैठ गया। रात के कई पहर गुजरने के बाद वृक्ष के नीचे के जल कुण्ड से एक व्यक्ति निकला और वृक्ष के नीचे झाड़ू मारने लगा। जब वह झाड़ू मार चुका तो एक फर्श बिछाने वाला प्रकट हो गया और उसने वृक्ष के नीचे बहुमूल्य तथा सुन्दरतम बिछावन बिछा दिया। जब ये दोनों लौट गए तो जलकुण्ड से एक दैत्य प्रकट हुआ। जब वह बिछावन पर बैठ गया तो भूकम्प-सा हुआ। सुनार का बेटा यह देखकर बहुत ही भयभीत हो गया। उसकी हालत वैसी ही हो गई जैसे किसी चूजे की गर्दन पर वधिक का चाकू हो। कुछ क्षण बीत जाने के पश्चात् दैत्य ने अपनी जेब से एक डिबिया निकाली। इसका ढक्कन खोला और इसमें से एक ठीकरा निकाला। कई फूँक मारे और देखते-देखते ठीकरा एक सुन्दर और सलोनी परी में बदल गया। उसने आँखें मलीं, इधर-उधर दृष्टि डाली और क्रम से धीमे-धीमे तथा ऊँचे स्वर में गाने लगी। उसके गाना गाने के कुछ समय बाद दैत्य को नींद ने घेर लिया। उसने परी की जंघा पर सिर टिका दिया और सो गया। पौ फटते ही जब मुर्गे ने बाँग दी, दैत्य जाग पड़ा। उसने परी को दो-चार फूँक मार कर फिर ठीकरा बना दिया और डिबिया में रख दिया। इसके पश्चात् दैत्य जलकुण्ड में प्रविष्ट हो गया। यह सब देखकर सुनार का बेटा आश्चर्यचकित हो गया। सूर्योदय होने के बाद वह वृक्ष से उतरा और अपने शहर की ओर चलने लगा। दो-तीन दिन बीत गए। सुनार का बेटा अपने घर पहुँच गया। उसके माँ-बाप उसे देखकर बहुत प्रसन्न हो गए। हमारा लाड़ला बादशाह के घर से लौट आया। वे उसे दुलारने तथा प्यार करने लगे। पर इस लड़के ने यह किसी से नहीं कहा कि उस पर क्या गुजरी।

दूसरे दिन सुनार का बेटा, अभ्यास वश, दुकान पर गया तथा कुछ क्षण बाद राजकुमार भी उसकी दुकान पर पहुँच गया और अपने मित्र को कसकर आलिंगन में जकड़ लिया। राजकुमार उससे बातचीत करता रहा पर सुनार के बेटे ने अपने मित्र को कोई जवाब न दिया। राजकुमार रुँआसा होकर उससे पूछने लगा कि तुम मुझ पर नाराज क्यों हो ? सुनार के बेटे को अब उत्तर देना ही पड़ा और उसने उसे उस रात की सारी दास्तां सुना दी कि किस प्रकार घोड़े को शराब पिलाकर उसे मारने का षड्यन्त्र रचा गया था। जब उसने परी और दैत्य के बारे में राजकुमार को सुनाया तो राजकुमार परी को देखने के लिए बेताब हो उठा। और अपने मित्र से आग्रह करने लगा कि हम एक बार और उस जंगल में उस सलोनी-सुन्दर परी को देखने जाएँगे। वहाँ से लौट कर मैं अपने हाथों वजीर को कत्ल कर दूँगा, जिसने तुम्हें इतना कष्ट पहुँचाया है। सुनार के बेटे ने दुबारा उस जंगल में जाने से इनकार कर दिया। पर राजकुमार ने उससे बहुत अनुनय किया और सुनार का बेटा जंगल जाने के लिए विवश हो गया। वे दोनों इस यात्रा पर चल पड़े। जब वे जंगल में उस वृक्ष के नीचे के जलकुण्ड के पास पहुँचे तो वे एक घनी झाड़ के पीछे छिप गए।

जब आधी रात हुई, बिछावन बिछाने वाले ने बिछावन बिछा दिया और कुण्ड में से दैत्य प्रकट हुआ। उसने जेब में से डिबिया निकाली, ठीकरा को फूँक मारी और एक सब्ज परी उपस्थित हो गई। राजकुमार ने ज्यों ही उस परी को देखा वह उस पर मोहित हो गया। उसका रूप-लावण्य उसकी आँखों में बस गया। वह मित्र से कहने लगा कि ''यदि तुम मेरे सच्चे मित्र हो तो मेरी भेंट इस परी से कराओ।'' ''तुम पागल तो नहीं हुए हो ?'' सुनार के बेटे ने कहा। ''अगर तुम्हें अपनी जान प्यारी नहीं तो वैसा ही करेंगे।'' पर राजकुमार अपनी जिद पर अड़ा रहा। वह आँखों से गंगा-जमुना बहाने लगा। सुनार का बेटा राजकुमार की दशा देखकर पिघल गया और उससे कहने लगा, ''अच्छा, मुझे कोई तरकीब सोचने दो।''

दैत्य जब सो गया, सुनार का बेटा उठा और परी के पास चल दिया। उसने इशारे से सुनार के बेटे को कहा कि यहाँ से भाग जाओ वरना तुम मारे जाओगे। वह कहाँ भागता, उसने भी इशारे से बता दिया कि मुझे तुम से कुछ बात करनी है। परी ने सिर हिलाकर उसे अपने नजदीक आने को कहा। जब वह परी के पास पहुँचा तो उससे कहा, ''मुझ पर दया कर मेरे मित्र के साथ बात करो, वह तुम्हारे लिए पागल हो गया है ?''

परी बोली, ''ऐ आदमज़ाद यह कैसे हो सकता है ? इस दैत्य का भारी सिर मेरी जंघा पर है। यदि मैं खड़ी हो जाऊँ तो यह जाग पड़ेगा फिर न तुम जिन्दा रहोगे और न मैं।''

''तुम धीरे-धीरे अपनी जंघा इसके सिर से निकाल दो, तुम्हारे बदले मैं अपनी

जंघा इसके सिर के नीचे रखूँगा। तुम मेरे दोस्त और अपने आशिक से बात करके आ जाओ।'' सुनार के बेटे ने कहा। आखिर सुनार के बेटे ने दैत्य के सिर के नीचे अपनी जंघा रख दी और परी राजकुमार के पास चली गई। जब काफी समय तक परी नहीं लौटी तो सुनार का बेटा बहुत बेकरार हो गया। मुर्गे ने भी बाँग दी और दैत्य जाग पड़ा। उसने जब परी की जगह एक मनुष्य को देखा तो वह क्रोध से काँपने लगा। दैत्य सुनार के बेटे की ओर देख कर दहाड़ा, ''परी कहाँ है ?''

''हे पाताल के सरदार! मैं यहाँ से चल रहा था, मैंने देखा कि परी की जंघा सुन्न पड़ गई है। उसने मुझसे विनती की कि तुम थोड़ी देर मेरी जगह रहो ताकि मैं थोड़ा चलकर अपनी जंघा को ठीक कर लूँ।'' सुनार के बेटे ने कहा।

''ऐ मानवजाये! तुम झूठ बोल रहे हो।'' दैत्य फिर दहाड़ा। ऐसा कहते हुए उसने अपने सिर का एक बाल उखाड़ लिया, उसके चार हिस्से कर दिए। और चारों दिशाओं की ओर फेंक दिए। इतने में राजकुमार और परी दोनों दैत्य के सामने पहुँच गए। उसने ठठा कर राक्षसी ठहाके मारे और तीनों को बन्धनों में बन्द कर स्वयं कुण्ड में छलाँग लगा दी। और पलक झपकते ही एक पक्षी को हाथ में उठा कर ऊपर ले आया। उसके दाँत कटार जैसे थे। उसने जब मानवजायों को देखा, वह भयानक ध्वनि करता हुआ मनुष्य-मांस खाने के लिए उतावला हो गया। दैत्य ने तीनों बन्धकों को मरने के लिए तैयार रहने को कहा और चेतावनी दी कि यह पक्षी अभी तुम्हारे शरीरों से बोटी-बोटी भर मांस उखाड़ कर खा लेगा। सुनार के पुत्र ने कहा, ''हे पाताल के सरदार! तुम्हें हजरत सुलेमान की अंगूठी की कसम, मेरे इस यार को न मरवा देना। यह बिलकुल बेकसूर है। वास्तव में मैंने इसे यहाँ आने के लिए प्रेरित किया। यह हमारे बादशाह का इकलौता राजकुमार है। इसके बदले अगर मुझे मारोगे तो कोई चिन्ता नहीं।'' सुनार-पुत्र की विनय सुनकर दैत्य का दिल पसीज उठा और कहा, ''मुझे इसी को दण्ड देना था। तुम निर्दोष हो। तुम्हारी मित्रता देखकर मैं बहुत प्रसन्न हो गया। इसके पिता और मंत्री ने तुम्हें मरवाने में कोई कसर न उठा रखी थी। अतः तुम तीनों को मैं क्षमा करता हूँ। इस परी ने अब मानवजाये को देखा है, अतः यह यहाँ रहने के योग्य नहीं रह गई है। इसलिए यह भी राजकुमार की ही हो गई।'' यह कहते हुए दैत्य गायब हो गया और राजकुमार तथा उसका मित्र पाताल की परी को लेकर घर आ गए। घर पहुँच कर राजकुमार ने पूरा वृत्तान्त बादशाह को सुनाया और राजकुमार के हाथों से मन्त्री को फाँसी दिलाई गई।

ताऽज़्य बठ का तुक्का

कहने वाला कहता है कि पुराने समय में एक राजा की रानी के पास मोतियों का एक ऐसा हार था जो अमूल्य था। रानी विशेष अवसरों पर ही इस हार को पहनती थी। एक दिन रानी राजा के साथ कहीं सैर के लिए गई थी। जब लौटी तो अपने स्नान-गृह में स्नान के लिए प्रविष्ट हुई। मोतियों के हार को उतार कर स्नान करने लगी। स्नान से निपट कर उसे हार पहनना याद नहीं रहा और मोतियों का हार स्नान-गृह में ही रह गया। रात को जब राजा ने रानी के गले में मोतियों का हार न देखा तो पूछने लगा, ''मोतियों का हार कहाँ है ?'' राजा की बात सुनकर रानी को हार की याद आ गई। वह उठी और तेज़ी से कदम बढ़ाती स्नान-गृह में गई; पर वहाँ हार नहीं था। उसकी साँस रुक-सी गई। स्नान-गृह से आकर राजा से कहने लगी कि ''मोतियों का हार किसी ने चुरा लिया है।'' यह सुनकर राजा बहुत ही अशान्त हो गया और रानी के होंठ सूख गए। वह केवल हाथ मलने लगी। इसके पश्चात् राजमहल के सभी दास-दासियों तथा अन्य सभी कर्मचारियों की तलाशी ली गई। महल का एक-एक कोना छान मारा गया पर मुक्ताहार का कहीं भी पता न चला। दूसरे दिन राजा के कारिन्दे दोबारा मुक्ताहार ढूँढ़ने लगे पर किसी ने इसकी चोरी का जिम्मा नहीं लिया। दो-चार दिन और ढूँढ़ने पर भी रानी का यह हार कहीं न मिला। रानी ने इस गम में खाना-पीना त्याग दिया। उसने खाट पकड़ ली। अन्त में मन्त्रियों और दरबारियों से सोच-विचार करने के बाद पूरे राज्य, विशेषकर राजधानी में घोषणा करवाई गई कि जो मुक्ताहार का पता लगा के देगा या ला के देगा उसे मालामाल किया जाएगा और खलतिशाही भी दिया जाएगा। इससे भी रानी के मुक्ताहार का कहीं पता न चला। राजा के हरकारे, सज़ावुल, पुलिस के अधिकारी और गुप्तचर मुक्ताहार को बरामद करने के लिए जी-जान लगा रहे थे पर सब व्यर्थ!

कहने वाला कहता है कि इसी नगर में ताऽज़्य बठ नाम का एक गरीब आदमी रहता था। वह बहुत मेहनत-मशक्कत करता था पर फिर भी अपने परिवार के लिए दो जून की रोटी नहीं जुटा पाता था। वह बच्चों को न पूरा खाना ही खिला सकता था और न तन ढाँपने के लिए पूरे वस्त्र ही जुटा पाता था। अभाव ही उस गरीब का भाग्य बन गया था जिससे वह बहुत तंग आ चुका था और अब किसी-

न-किसी बहाने शरीर त्याग देना चाहता था। उसने भी रानी के हार और पुरस्कार मिलने सम्बन्धी घोषणा सुनी थी। उसे लगा कि जीवन से मुक्ति पाने का यह अचूक अवसर है।

राजा द्वारा करवाई गई घोषणा के फलस्वरूप कोई भी सामने नहीं आया कि वह हार ढूँढ़ निकालेगा। एक-दो दिन बीत जाने के बाद ताऽज़्य बठ बिना पत्नी से कहे राजा के दरबार की ओर चल पड़ा। महल के पास द्वारपालों ने उसे रोका पर ताऽज़्य बठ ने उन्हें कहा कि वह राजा को रानी का हार ढूँढ़ के देने के लिए राजा से मिलना चाहता है। राजा तक सूचना पहुँचाई गई। उन्होंने आज्ञा दी कि इस व्यक्ति को तुरन्त मेरे सामने उपस्थित किया जाए। राजा के सामने लाए जाने के बाद उसने हाथ जोड़कर अर्ज़ किया कि मैं आपकी घोषणा सुनने के बाद यहाँ आया हूँ, मैं वायदा करता हूँ कि रानी का हार ढूँढ़ दूँगा। राजा यह सुनकर हर्षित हुआ और कहा फिर देर किस बात की ? दासियों ने यह शुभ सूचना रानी तक पहुँचाई। ताऽज़्य बठ से पूछा गया कि यदि वह हार ढूँढ़ने में असमर्थ रहा तो उसके साथ क्या सलूक किया जाए ? वह जिन्दगी से बहुत तंग आ चुका था, अतः उसने राजदरबार में यह स्वीकार किया कि यदि वह सात दिन के अन्दर मुक्ताहार न ढूँढ़ सका तो उसका सिर काट दिया जाए।

घर आकर उसने पूरी कहानी अपनी पत्नी से कही। उसने पति से कहा, ''अरे अकल के दुश्मन, तुमने भाँग तो नहीं खा रखी! इन बच्चों का क्या होगा! जब राजा के हरकारों और सज़ावुलों को हार नहीं मिला तो तुम भाग्यहीन को कहाँ से मिलेगा ? शायद तुम्हें यमराज नचा रहा है। चढ़ो, अब फाँसी पर चढ़ना ही होगा। अब ये बच्चे बेचारे किसके सहारे जिएँगे!''

अपनी पत्नी की बातें सुनने के बाद ताऽज़्य बठ की समझ में आ गया कि उसने सोच-विचार से काम नहीं लिया है। वह सोचने लगा कि अब इससे बचने का भी कोई उपाय नहीं। वह हाथ मलने और उसाँसें भरने लगा। खाने-पीने का अभाव तो था पर अब वह भी भूल गया। बहुत उदास होकर निष्प्राण डग भरते एक मसजिद के अन्दर घुस गया और वहीं ज़ार-ज़ार रोने लगा। दो-चार दिन ऐसे ही बीत गए। जितना-जितना वायदे का समय नजदीक आ रहा था, ताऽज़्य बठ के प्राण सूखते जा रहे थे। अब उसे दो दिन के पश्चात् राजा के दरबार में पहुँचना और सूली चढ़ना था। इसी भय से वह बेतहाशा बोलता गया, ''हतय ज़्येव्य च्रुंनय फऽरिथ गुछ्ॖहख पगाह कति लगॖहख फहि।'' (अरी ज़बान तुम हिलती नहीं तो कल फाँसी पर नहीं चढ़ती।) इसी एक वाक्य को ताऽज़्य बठ बार-बार दुहराता और ज़ार-ज़ार रोता जाता। मसजिद के बाहर चलने वाले भी इसके ये विलाप सुनते। अब मुक्ताहार ढूँढ़ के निकालने और उसे राजा तक पहुँचाने में एक ही दिन शेष रह गया। ताऽज़्य

बठ केवल इसी एक वाक्य का जाप करता जा रहा था, ''हतय ज़्येव्य चुंनय फऽरिथ गछुँहख पगाह कति लगुँहख फहि।''

खुदा की करनी वहाँ से एक महिला चली जा रही थी। वह प्रतिदिन महल में जाकर झाड़-पोंछा करती थी। उसने मसजिद के अन्दर से ताऽज़्य बठ का 'जाप' सुना तो वह रुक गई। उसने मसजिद के अन्दर से आने वाली आवाज़ को कान लगाकर तथा ध्यान से सुना। 'जाप' सुन के उसके पैरों तले की ज़मीन खिसकने लगी और पसीने से पूरा शरीर तर-ब-तर हो गया। सोचा, मेरे बारे में किसी को पता चल चुका है! ताऽज़्य बठ के इस वाक्य की आवृत्ति सुनकर डरते-डरते मसजिद के अन्दर गई। वहाँ एक व्यक्ति को बैठे और कहते पाया—''हतय ज़्येव्य, चु नय फरिथ गछुँहख पगाह कति लगुँहख फहि।'' वह एकदम उसके पैरों में गिर पड़ी। कहा, ''श्रीमान खुदा के वास्ते मेरा नाम न लीजिए, मैं सदके जाऊँ! मुझे सूली पर न चढ़वा दीजिए। मैं रानी का हार चुपचाप यहीं लाके दूँगी। आप किसी से भी न कहिएगा कि ज़्यव ने इस हार की चोरी की थी।''

ताऽज़्य बठ आँखें बन्द किए-किए ही यह सब सुनता रहा। उसकी जान में जान आ गई। वह गुस्से में बोला, ''चलो तुरन्त दफा हो जाओ और फौरन मोतियों का हार ला के दे दो, नहीं तो मैं कल तुम्हें फाँसी पर लटकवा दूँगा।''

''अरे, खुदा के लिए आप चुप हो जाइए। मैं इसी क्षण मुक्ताहार ला के दे दूँगी।'' ज़्यव ने आँसू बहाते हुए कहा।

यह कहकर वह हवा की गति से घर की ओर लपकी और रानी का हार ताऽज़्य बठ के सामने रख दिया। ताऽज़्य बठ ने हार उठा कर जेब में रख लिया और इस ज़्यव नामक महिला से पूछा कि ''तुमने इस हार की चोरी कैसे की ?'' वह बोली, ''श्रीमान क्या कहूँ, मन में कुभावना आ गई। मैंने रानी के कमरे में झाड़-पोंछा किया और उसके पश्चात् उनके स्नान-गृह को साफ करने गई। वहीं इस हार को खूँटी पर टँगा पाया। मेरा मन ललचाया और शैतान मेरे अन्दर घुस गया। मैंने हार को खूँटी से उठा कर अपनी जेब के हवाले कर दिया। पर आपके सिवा इस चोरी का किसी को पता नहीं।'' ''अच्छा, तुम अब यहाँ से चली जाओ। अब मुझे तुम्हें बचाने के लिए राजा से झूठ बोलना पड़ेगा।''

ज़्यव के घर की ओर जाने के बाद ताऽज़्य बठ को विश्वास ही नहीं आ रहा था कि मुझे रानी का वह मुक्ताहर मिल गया जो राजा के सज़ावुल भी ढूँढ़ न सके। मसजिद से बाहर आकर वह घर गया और बाहर से ही ऊँची आवाज़ में पत्नी से कहने लगा, ''अरी, खाने के लिए कुछ तैयार किया है कि नहीं ? भूख के मारे मेरा बुरा हाल हो रहा है।'' वह बोली, ''हाँ, कल तुम्हें सूली चढ़ना है ना इसीलिए भूख ज़्यादा है। अरे, कलमुँहे तुमने इन बच्चों की खातिर भी कुछ न सोचा !''

ताऽज़्य बठ ने कहा, "अरी आज ताऽज़्य बठ का तुक्का लग गया। देखो, मेरे हाथ में क्या है! यही है रानी का मुक्ताहार!" जब उसकी पत्नी ने उसके हाथ में दिपता मुक्ताहार देखा तो उसे विश्वास ही नहीं हुआ कि यह सचमुच ही रानी का वही हार है और क्या इसे मेरे पति ने ही खोजा है! वह फूलकर कुप्पा हो गई। ताऽज़्य बठ ने कहा, "अब हमारे दिन फिरे।"

अगले दिन ताऽज़्य बठ कमर में तलवार बाँधकर राजा के दरबार में हाजिर हो गया। राजा के सामने आकर अर्ज़ करने लगा— "राजन्, रानी का हार वास्तव में किसी मनुष्य ने नहीं उठाया था बल्कि एक कौए ने स्नान-गृह के गवाक्ष से उठाकर ले लिया था। यह नहीं पूछिए कि मैंने यह हार कागा से कैसे प्राप्त किया।" राजा ने जब मुक्ताहार देखा तो उसकी बाँछें खिल गईं।

ताऽज़्य बठ को घोषणा के अनुसार पुरस्कार और शाही खिल्लत ही नहीं दिया गया अपितु उसे दरबार में एक ऊँचा मनसब भी दिया गया।

सातवीं राजकुमारी

कहते हैं एक देश में एक राजा राज करता था। उसकी छह बेटियाँ थीं, पर बेटा कोई न था जिसका उसे बहुत दुःख था। वह प्रायः सोचा करता था कि मेरे पश्चात् इस राज्य को कौन सँभालेगा। बहुत प्रार्थनाएँ करता रहा। पीरों और फकीरों के पास बेटा प्राप्त करने के लिए जाता रहा और दीनों-दुखियों को भी इसी बात के लिए मुँहमाँगा दान देता रहा। पर उसकी लड़कियाँ ही होती थीं। तंग आकर उसने आज्ञा दी की अगर अब की बार भी रानी ने लड़की जनी तो उसे उसी समय कत्ल कर दिया जाए।

बादशाह की आज्ञा थी, उसे कौन टाल सकता था। दाई को बुलाया गया और उसे कहा गया कि अगर रानी ने अबकी भी पुत्री जनी तो उसे मार दिया जाए। अगर तुम इस आज्ञा की अवहेलना करोगी तो तुम्हें जिन्दा ही कोल्हू में निचोड़ा जाएगा। दाई ने यह सुनकर प्रार्थना की कि राजन, जो आपकी आज्ञा होगी उस पर अक्षरशः अमल किया जाएगा। राजा के हुकुम के बारे में जब रानी ने सुना तो वह सहम गई और उसका शरीर सूखने लगा। पर करती भी क्या ? उसे मालूम था कि राजा जो कहता है, वह करता भी है। उसके प्रसव का समय जितना नजदीक आता जा रहा था, उसकी परेशानी उतनी ही बढ़ती जाती थी। दिन-भर वह अपनी प्राणरक्षा के लिए प्रार्थनाएँ करती, पर होनी किसने टाली है। प्रभु की करनी, अबके भी उसके बेटी ही हुई।

यह लड़की इतने सुन्दर नैन-नक्श वाली थी कि दाई भी इसे देखकर हैरान हो गई क्योंकि उसने भी इस वक्त तक ऐसी सुन्दर-सलोनी लड़की नहीं देखी थी। उसके दिल ने इस बच्ची को मारना स्वीकार नहीं किया। पर ख्याल आया कि अगर मैं इस बच्ची को न मारूँ तो मुझे कोल्हू में जिन्दा निचोड़ा जाएगा। यह ख्याल आने पर जब वह बच्ची का गला घोंटने लगी तो बच्ची हँसने लगी और इसी हँसी के साथ उसके मुख से दो सुन्दर फूल झड़ गए। यह देख कर दाई आश्चर्यचकित हो गई। ऐसी घटना न तो देखी थी और न ही सुनी थी। बच्ची को हथेलियों पर उठाया और उसकी माँ को दिखा दिया। अपनी माँ को देखकर वह बच्ची फिर हँसी और पुनः दो ताज़े फूल उसके मुँह से झड़ पड़े। रानी भी यह अभूतपूर्व चमत्कार

देखकर हैरान हो गई। उसकी ममता और वात्सल्य उमड़ पड़ा और दाई से विनती करने लगी कि इस बच्ची को न मारा जाए। साथ ही उसने उसे वचन दिया कि मैं तुम्हें बहुत-सा पुरस्कार दूँगी। राजा को कहना कि बच्ची का वध कर दिया गया है। दाई को दया आ गई। उसने दो कपड़ों को भेड़ के खून से लथपथ करके राजा को उनकी सातवीं लड़की के मारने का प्रमाण दिखा दिया। इसके बाद यह शिशु को महल के तलघर में छिपाकर रख दिया गया और इसी दाई को इसके पालन-पोषण और बाद में शिक्षण के लिए नियत किया गया। इस सब की किसी को कानोकान खबर न हुई।

दिन-पर-दिन बीते। बच्ची खड़ी होकर ठुमक-ठुमक कर चलने की कोशिश करने लगी। जब उसने पहला कदम बढ़ाया तो दाई और रानी यह देखकर दंग रह गईं कि राजकुमारी के दाहिने पैर के नीचे से एक सोने की ईंट पैदा हो गई और बाएँ पैर के नीचे से चाँदी की। इसके बाद जब भी राजकुमारी चलती, उसके दाहिने पैर के नीचे सोने की ईंट होती और बाएँ पैर के नीचे चाँदी की। जब भी वह हँसती उसके मुख से कुसुम झड़ते। रानी इन कुसमों, सोने और चाँदी की ईंटों को देख-देख हर्षित हो जाती। पर उसकी खुशी इसी तलघर तक ही सीमित थी क्योंकि इसके बारे में वह किसी से भी कुछ नहीं कह सकती थी। कभी उसे भय लगता कि यदि बादशाह को इसका पता चले तो हम तीनों का न जाने क्या हाल होगा! जब शहज़ादी बड़ी हो गई तो वह इस तलघर के सन्नाटे से डरने लगी और एक दिन माँ से कहा कि मेरे लिए एक अलग महल बनाया जाना चाहिए। यह सुन कर रानी ने राजा से कहे बगैर एक छोटा महल बनवाया। इस महल में राजकुमारी की सेवा के लिए दासियाँ नियुक्त की गईं। उन्हें इस शर्त पर धन और रत्न दिए जाने लगे कि वे इस बात को अपने तक ही रखें और यह रहस्य रहस्य ही रखा जाए, बाहर किसी को कानोकान खबर न हो। इस महल में दो-चार भण्डार घर भी बनवाए गए जिनमें राजकुमारी के कुसुम तथा सोने और चाँदी की ईंटें रखी जाने लगीं।

समय-चक्र इतना घूमा कि राजकुमारी वयस्क हो गई। प्रभु की इच्छा कि राज्य में अचानक जबरदस्त अकाल पड़ गया। लोग बहुत दुखी होने लगे। खाने के लिए सत्तू मिलना भी कठिन हो गया। अकाल पर काबू पाने के लिए राजा के खजानों के द्वार भी खुले छोड़ दिए गए। पर कई दिन बीतने के बाद वे भी समाप्त हो गए। यह देखकर बादशाह बहुत परेशान हो गया। उसे यही आशंका खाए जा रही थी कि कहीं राज्य हाथों से खिसक न जाए। उसे आठों पहर यही गम खाए जा रहा था।

एक दिन राजा इसी चिन्ता में डूबा था कि रानी ने उससे कहा, "बादशाह सलामत! क्या बात है कि कुछ समय से आप उदास और काफी चिन्तित रहते

हैं ?'' यह सुनकर बादशाह ने कहा कि देश में बहुत अकाल पड़ा है। जनता खाना न मिलने के कारण मर रही है। शाही खजाने भी खाली हो चुके हैं। राज्य का काम चलाने के लिए धन चाहिए। यदि यह धन न मिलेगा तो जनता के विद्रोह करने का डर है और इस तरह राज मेरे ही हाथों खिसक जाएगा। धन कहाँ से प्राप्त किया जाए इस कारण मैं चिन्तित हूँ। मुझे नहीं लगता कि धन कहीं से प्राप्त हो सकेगा।

यह सुनकर रानी गहरे सोच में पड़ गई। वह राजा की सहायता कर सकती थी। दौलत भी दे सकती थी पर वह यह कैसे बताती कि यह दौलत कहाँ से आ गई है। यदि धन न दूँ तो राज जाने का खतरा है, यदि सब कुछ सच-सच बता दूँ तो हो सकता है कि ये हम तीनों को मरवा दें। अन्त में काफी सोच-विचार और हिम्मत के बाद राजा से कहने लगी, ''आलम पनाह, यदि जान बख्श दी जाए तो मैं कुछ अर्ज़ करूँ।'' ''इसमें जान बख्शी की क्या बात है ? कहो क्या कहना है।'' राजा ने कहा। रानी ने कहा, ''मैं आपकी परेशानी दूर कर सकती हूँ। दौलत भी दे सकती हूँ, पर आप को वचन देना होगा कि आप मुझे मरवा डालने का कोई कदम नहीं उठाएँगे।'' बादशाह ने जवाब में कहा कि ''मैं तुम्हें जान बख्शी का वचन देता हूँ। कहो, तुम्हें क्या कहना है ?''

रानी ने कहा, ''जिले इलाही! मेरे पास सोने तथा चाँदी की असंख्य ईंटें हैं।''

''क्या कहा! सोने और चाँदी की असंख्य ईंटें!'' चकित होकर बादशाह रानी की ओर टकटकी लगा कर देखने लगा।

''हाँ, सोने-चाँदी की ईंटें, असंख्य ईंटें!'' रानी ने कहा।

''पर, ये तुम्हें मिलीं कैसे ?'' बादशाह ने प्रश्न किया।

''जहाँपनाह, छोटी राजकुमारी, जिसके लिए आपने आज्ञा दी थी कि इसे मारा जाए, जब चलती है तो उसके दाहिने पैर के नीचे सोने की ईंट होती है और बाएँ पैर के नीचे चाँदी की। जब हँसती है तो मुख से कुसुम झड़ते हैं। यही सोने-चाँदी की बेशुमार ईंटें मैंने जमा कर रखी हैं।'' रानी ने उत्तर दिया। बादशाह को अपनी बेगम की बातों पर विश्वास नहीं हो रहा था। वह सोचने लगा कि किसी इनसान के कदमों के नीचे से सोने और चाँदी की ईंटें कैसे निकल सकती हैं! हैरान होकर रानी से पूछने लगा, ''यह कैसे सम्भव हो सकता है ?'' रानी ने कहा, ''यदि आप आज्ञा दें तो छोटी राजकुमारी आपके सम्मुख लाई जाएगी और आप स्वयं देखें कि मैं झूठ तो नहीं बोल रही।''

बादशाह ने छोटी राजकुमारी को प्रस्तुत करने की आज्ञा दी और राजकुमारी बादशाह के सामने लाई गई। बादशाह ने अपनी आँखों से रानी के कथन की सच्चाई को देखा। जब राजकुमारी ने पहली बार अपने पिता को देखा तो उसने हँसते-हँसते उन्हें सलाम किया और इसी के साथ उसके मुख से दो-चार कुसुम भी झड़ गए!

यह देखकर बादशाह की खुशी का ठिकाना न रहा और साथ ही शर्म भी महसूस हुई कि उसने ऐसी लड़की को मारने की आज्ञा दाई को दी थी, जो इस समय उसके राज को बचाने और जनता की भूख को मिटाने का कारण बनी। इसके लिए राजा ने रानी और अपनी इस लाड़ली बिटिया से क्षमा माँगी और राजा के सारे खजाने फिर से भर गए।

अब बादशाह अपनी सबसे छोटी बेटी को बहुत लाड़-प्यार करने लगा। बाकी छह बहनों को बादशाह का यह व्यवहार अच्छा नहीं लगा। इसका परिणाम यह हुआ कि वे अन्दर-ही-अन्दर छोटी बहन से ईर्ष्या तथा षड्यन्त्र करने लगीं। यह देखकर बादशाह ने इस लाड़ली बिटिया के लिए एक नए महल का निर्माण कराया ताकि उसे बाकी बहनें तंग न करें और कोई तकलीफ न पहुँचा सकें। इससे भी बाकी बहनों की ईर्ष्याग्नि बुझ न सकी।

एक दिन बादशाह को एक दूसरे देश में जाना था। वह सभी बेटियों से विदा लेने तथा यह पूछने के लिए गया कि वह लौटने पर उनके लिए क्या भेंट लाए। किसी बेटी ने एक किस्म की चीज लाने को कहा और दूसरी ने दूसरे किस्म की। समय बीत रहा था। यात्रा का समय बहुत नजदीक आ गया था, इसलिए बादशाह सातवीं और छोटी बेटी के पास स्वयं न जा सका और अपनी एक दासी को उसके पास यह पूछने के लिए भेज दिया कि उसके लिए क्या लाया जाए। जब दासी उसके कमरे में प्रविष्ट हुई, उस समय राजकुमारी खुदा की इबादत में लगी थी। इस दासी ने जब उसे बादशाह का पैगाम दिया तो राजकुमारी ने उसे कहा कि सब्र करो याने ठहरो, मुझे इबादत से फ़ारिग होने दो। दासी यह सुनकर फौरन बादशाह के पास गई और उससे कहा कि छोटी राजकुमारी ने 'सब्र' लाने को कहा है।

बादशाह जब इस यात्रा से लौटे तो वह सभी बेटियों के लिए नाना प्रकार की वस्तुएँ लाए थे और छोटी बेटी के लिए एक डिब्बा लाए थे। दासियों ने यह डिब्बा छोटी राजकुमारी के पास पहुँचाया और कहा, बादशाह सलामत आपके लिए यह 'सब्र' लाए हैं। उसने अन्दर-ही-अन्दर महसूस किया कि बड़ी बहनों के लिए बादशाह नाना प्रकार की और रंग-बिरंगी वस्तुएँ लाए हैं, क्या मेरे लिए इस डिब्बे के सिवा और कुछ नहीं था! डिब्बा लिया और इसे एक कोने में फेंक दिया। कई दिनों के बाद वह अपने दरीचे में बैठी थी। यहाँ उसे बहुत गर्मी लगी। इधर-उधर देखा वहाँ कोई दासी नज़र न आई। स्वयं उठी और पंखी ढूँढ़ने लगी। पंखी मिली नहीं। उसकी दृष्टि उस डिब्बे पर पड़ी जो बादशाह सफर से लौटते समय उसके लिए लाए थे। सोचा, क्यों न डिब्बे के ढक्कन से फिलहाल पंखी का काम लिया जाए। ज्यों ही उसने डिब्बे का ढक्कन हटाया, उसने डिब्बे के अन्दर एक सुन्दर-सी प्यारी-सी पंखी देखी। पंखी देखकर वह खुश हो गई और उससे अपनी हवा करने लगी।

पंखी से ज्यों ही उसने हवा करना शुरू किया त्यों ही उसके सामने एक सलोना-सजीला राजकुमार प्रकट हो गया। इतना सलोना युवक उसने इस समय तक कभी नहीं देखा था। पर यह अजीब घटना देखकर वह मूर्च्छित हो गई। यह देखकर राजकुमार शीघ्रता से उसके निकट आ गया और उसे पानी की छींटे देने लगा। जब राजकुमारी होश में आ गई तो राजकुमार ने उससे कहा, "डरो मत, मैं भी एक देश का राजकुमार हूँ और मैं यहाँ तुम्हें पंखा झुलाने के लिए आ गया हूँ। यह सुनकर राजकुमारी उसे टुकुर-टुकुर निहारने लगी।"

"यह सब्र करने की पंखी है और इसी की हवा से मैं यहाँ आ गया हूँ।" राजकुमार ने कहा। इसके बाद राजकुमारी के दिल से डर उठ गया और ये दोनों आपस में बातें करने लगे।

उक्त घटना के बाद जब भी राजकुमारी अकेलापन महसूस करती, वह पंखी निकालकर हवा करने लगती और राजकुमार फौरन प्रकट हो जाता। फिर ये दोनों घंटों बातें करते और हँसते-खेलते। इस प्रकार वे प्रतिदिन मिलने लगे। जब राजकुमार को जाना होता, उस समय राजकुमारी फिर पंखी उठा डुलाने लगती और राजकुमार गायब हो जाता। धीरे-धीरे इनमें प्रेम होने लगा। ये नहीं चाहते थे कि इनके प्रेम के बारे में किसी को पता चले; पर इनका प्रेम अधिक देर के लिए छिप न सका।

महल की कई कनीजों और दासियों को इसका पता चला और होते-होते राजकुमारी की बहनों को इसका पता चल गया। उन्होंने जब यह सुना कि कोई अत्यन्त सलोना राजकुमार छोटी राजकुमारी का प्रेमी बन चोरी-छिपे उसके पास आता जाता है, वे ईर्ष्या की आग में कुछ ज़्यादा ही जलने लगीं। अब वे इन प्रेमी-प्रेमिका के बीच दूरी पैदा करने की सोचने लगीं। इसके बाद उसकी बहनें उसके पास आ गईं और कहने लगीं, हम यह सुनकर अत्यन्त हर्षित हो गईं कि तुम्हें कोई राजकुमार चाहता है और तुम भी उस पर प्राण न्योछावर करती हो। इस तरीके से उन्होंने उसे अपनी ओर आकृष्ट किया और उसके पास आती-जाती रहीं। एक दिन ये छहों बहनें उससे कहने लगीं कि बहना, हमें भी अपने राजकुमार से मिला दो, हम भी देखें वह कितना सलोना है। आखिर जब तुम्हारी बहनें तुम्हारे प्यार से खुश न हों तो कौन होगा! छोटी बहन बोली, कल दिखा दूँगी, पर वचन दो कि यह रहस्य अपने तक ही सीमित रखोगी। सभी बहनें कहने लगीं कि हम यह रहस्य अवश्य रहस्य ही रखेंगी। दूसरे दिन जब छहों बहनें उसके पास आ गईं तो कहा कि हम अपने हाथों तुम्हारे राजकुमार के लिए बिछावन बिछाना चाहती हैं। छोटी राजकुमारी खुश थी कि उसकी दीदियाँ उससे प्यार करने लगी हैं। उसे क्या पता था कि प्यार के पर्दे के पीछे उसकी दीदियाँ उससे दुश्मनी कर रही हैं। जब वे राजकुमार के लिए बिछावन बिछाने लगीं तो उस पर शीशे की छोटी-छोटी नुकीली किरचें ऐसे बिखेर दीं कि

देखने वाले को जरा भी पता न चले। इन चुभने वाली किरचों पर महीन मलमल की चादर बिछा दी। इसके बाद वे बहन के पास दूसरे कमरे में गईं और कहा, हमने राजकुमार के लिए बिस्तर बिछा दिया, अब उसे बुलाओ।

राजकुमारी ने डिब्बे में से पंखी निकाली और हवा करने लगी। अभी वह पंखी को हिला ही रही थी कि राजकुमार प्रकट हो गया। जब ज्यों ही बहनों ने शाहजादे को देखा उनके चेहरों के तोते उड़ गए। ''इतना सलोना, समुचित कद वाला, आकृष्ट करने वाला राजकुमार हमने आज तक नहीं देखा है।'' सभी बहनों ने एक साथ कहा। ईर्ष्या की आग ने उन्हें अन्दर-ही-अन्दर कोयला बना दिया। वे बेमन ही राजकुमार से बातें करने लगीं। उसके पश्चात् कहा, आप थके होंगे। हम जा रही हैं और आप बिस्तर पर लेट कर आराम कीजिए। उनके चले जाने के बाद ज्यों ही राजकुमार बिस्तर पर लेटा, सारी नुकीली किरचें उसके शरीर में चुभ गईं और खून के फव्वारे निकल पड़े। इसी के साथ राजकुमार भी बिस्तर से गायब हो गया! यह देखकर राजकुमारी बहुत ही हैरान हुई और जल्दी-जल्दी पंखी को हिलाने लगी। राजकुमार प्रकट नहीं हुआ। वह बेचारा खून से लथपथ था। राजकुमारी विलाप करने और हृदय पीटने लगी। वह अब समझ गई कि मेरी बहनों ने मुझसे झूठा प्यार जता कर दुश्मनी की। इसके बाद वह प्रतिदिन पंखी निकालकर डुलाती और राजकुमार के लिए तरसती। राजकुमार के विरह ने उसे बेहाल कर दिया। अब न उसके मुख से कुसुम झड़ते और न कदमों के नीचे से सोने-चाँदी की ईंटें ही पैदा होतीं। सभी चकित थे कि यह क्या हुआ! किसी की समझ में न आता कि यह कौन-सा कहर बरपा हो गया! विरह व्यथा की सीमा पार होने पर उसने निर्णय लिया कि मैं स्वयं राजकुमार को ढूँढ़ने चल पड़ूँगी और अपनी बहनों की ओर से क्षमा-याचना करूँगी। मुश्किल यह थी कि उसे राजकुमार के देश का कोई पता न था। वह कहाँ-कहाँ उसे ढूँढ़ती फिरती! आखिर एक रात मर्दाना वेश में कमर बाँधकर वह किसी से कुछ कहे बिना ही राजकुमार की खोज में महल से चल दी।

कई दिनों तक राजकुमारी एक जंगल से निकल दूसरे जंगल में प्रवेश करती रही; एक बस्ती से दूसरी बस्ती में अपने राजकुमार की खोज करती रही। इस यात्रा में जब उसे भूख सताती तो जंगली वृक्षों के फल खाकर गुजारा करती और आगे कदम बढ़ाती। उसे यह मालूम न होता कि वह किस दिशा की ओर जा रही है। एक दिन वह एक सघन जंगल में प्रविष्ट हुई। चलते-चलते उसका शरीर चूर-चूर हो गया था। पैरों में छाले पड़ गए थे। फूल-सा बदन कुम्हला गया था। वह एक सघन छाया वाले पेड़ तले बैठ गई। थकावट के कारण उसे झपकियाँ आने लगीं।

इसी पेड़ पर एक तोता और मैना थे। मैना ने तोते से कोई कहानी सुनाने के लिए कहा ताकि समय कट जाए। तोते ने जवाब में कहा, ''अरी मैना तू ही इस

समय कुछ सुना दे।'' ''मैं क्या सुनाऊँ, मुझे इस कन्या पर बहुत ही दया आ रही है जो इस वृक्ष के नीचे मर्दाना वेश में बैठी जम्हाइयाँ ले रही है और थकावट के कारण इसकी पलकें भारी हो रही हैं। वह बेचारी एक देश की राजकुमारी है और अपनी बहनों की दुश्मनी और ईर्ष्या से अपने प्रेमी से बिछुड़ गई है, इसीलिए अब उस राजकुमार की खोज में निकली है।'' इसके बाद मैना ने तोते से कहा कि ''यह भाग्यहीन राजकुमारी इन जंगलों में मारी-मारी भटक रही है और इसका प्रेमी राजकुमार अपने देश में मारे घावों की पीड़ा से कराह रहा है।''

यह सुनकर तोते ने कहा, ''इसमें जान देने की क्या बात है ? यदि यह राजकुमारी हमारी बीटें एकत्र करे, उन्हें सुखाकर महीन चूर्ण बनाकर राजकुमार के घावों पर लगा दे तो वह ठीक हो जाएगा !'' ''यह बेचारी राजकुमार तक कैसे पहुँच सकती है। क्योंकि इसे वहाँ का रास्ता मालूम ही नहीं है।'' मैना ने कहा। तोते ने कहा, ''यह क्या मुश्किल है! यह राजकुमार का नाम जानती ही है और उसका देश यहाँ से बहुत नजदीक है। यदि यह पश्चिम दिशा से सीधी चली जाए तो यह राजकुमार के शहर पहुँच जाएगी।'' यह कहकर तोता और मैना इस वृक्ष से उड़कर किसी और दिशा में चले गए।

इनकी बातें राजकुमारी ने सुन ली थीं। उसने इस वृक्ष के नीचे पड़ी तोते और मैना की बीटें इकट्ठा कीं और तोते द्वारा बताई गई दिशा में सीधे चलने लगी। कई दिनों की यात्रा के पश्चात् वह राजकुमार के शहर में पहुँची। वहाँ उसने लोगों की जबानी सुना कि राजकुमार बहुत ही घायल हो गया है। उसका इलाज करने वालों से कहा गया है कि यदि उनके इलाज से राजकुमार ठीक न हुआ तो इलाज करने वालों का सिर काट दिया जाएगा। इस कथन के अनुसार अभी तक कई इलाज करने वालों के सिर काट दिए गए हैं। यह सुनकर राजकुमारी महल की ओर चल दी और वहाँ सिंहद्वार पर रखे नगाड़े पर आघात किया। शाही चाकरों ने उसे बादशाह के पास पहुँचा दिया। उस समय भी वह मर्दाना वेश में थी और किसी को यह पता न चला कि यह एक महिला है। ''तुम कौन हो और क्या चाहते हो ?'' बादशाह ने प्रश्न किया।

''जहाँपनाह! मैं एक हकीम हूँ! मैं राजकुमार का इलाज करने के लिए यहाँ आया हूँ।'' राजकुमारी बोली।

''राजकुमार के इलाज में आज तक बहुत से नामी हकीम असफल हो गए, तुम क्या कर सकते हो ?'' बादशाह ने कहा।

''बादशाह सलामत! मैं आपके शाहजादे को कुछ दिनों में ठीक कर दूँगा।'' राजकुमारी ने कहा।

बादशाह ने कहा, ''अच्छा तुम्हें अवसर दिया जाता है, पर याद रखो अगर राजकुमार ठीक नहीं हुआ तो तुम्हारा सिर धड़ से अलग कर दिया जाएगा।'' राजकुमारी

ने इस शर्त को स्वीकार कर लिया।

शाही नौकरों ने राजकुमारी को राजकुमार के पास पहुँचा दिया और उसने इलाज आरम्भ कर दिया। राजकुमारी ने तोते के कथनानुसार इलाज किया। राजकुमार राजकुमारी को पहचान न सका। कई दिनों में ही राजकुमार के घाव भर गए और वह ठीक हो गया। बादशाह ने जब अपने बेटे के स्वस्थ होने का समाचार सुना तो वह बहुत खुश हो गया। आज्ञा दी कि हकीम को दरबार में इनाम देने के लिए लाया जाए। जब हकीम वेशधारी राजकुमारी को बादशाह के सामने प्रस्तुत किया गया तो बादशाह ने कहा, ''हकीम साहब! हम यह सुनकर खुश हो गए कि आपने हमारे शाहजादे को स्वास्थ्य लाभ कराया, कहिए हम आपकी क्या सेवा करें।'' राजकुमारी ने राजकुमार पर, जो बादशाह के पास बैठा था, नज़र डाली और बादशाह से कहने लगी, ''बादशाह सलामत मेरे पास खुदा का दिया सब कुछ है। मुझे इससे अधिक क्या चाहिए कि मेरे हाथों राजकुमार ठीक हो गया।'' बादशाह ने फिर कहा, ''नहीं, हम तुम्हें पुरस्कार देना चाहते हैं। आप जो भी माँगो, दिया जाएगा।'' राजकुमारी ने वही वाक्य दुहराया कि ''मेरे पास खुदा का और आपका दिया बहुत कुछ है।'' बादशाह ने कहा, ''मैं तुम्हें तीसरी और आखिरी बार कहता हूँ कि जो तुम माँगोगे वही दिया जाएगा।'' राजकुमारी ने कहा, ''बादशाह साहब देने से पहले मेरे साथ एक वायदा कीजिए।'' बादशाह इस समय अति प्रसन्न था और कहा, ''हम तुम्हें वचन देते हैं, माँगो जो माँगना चाहते हो।'' राजकुमारी ने कहा, ''बादशाह सलामत! तो मुझे यही राजकुमार दीजिए।'' यह सुनकर बादशाह बहुत परेशान हो गया। पर वचन दिया था, मुकर कैसे जाता! राजकुमार भी हैरान था कि यह हकीम क्या कहता है! दरबारी भी इस बात को सुनकर हक्के-बक्के रह गए। वे एक-दूसरे की ओर ताकते हुए सोच रहे थे कि यह अजीब फरमाइश है। इसके बाद राजकुमारी उठ खड़ी हुई तनिक बादशाह के निकट जाकर मर्दाना लिबास उतारा। उसे देखकर बादशाह अब देखता रह गया कि ''इलाही! हकीम के मर्दाना लिबास में यह सलोनी सुन्दरी!'' राजकुमार भी यह देखकर हैरान रह गया।

इसके पश्चात् राजकुमारी बादशाह से कहने लगी कि ''महाराज ! मैं भी एक देश की राजकुमारी हूँ। मैं आपके इस शाहजादे से प्रेम करती हूँ। इसका विरह मुझसे सहा न गया और मैं इसे खोजने अपने देश से चल पड़ी। जंगलों, बीहड़ों और वीरानों से गुजर कर मैं यहाँ पहुँच गई। एक वृक्ष पर एक तोता और मैना आपस में बातें कर रहे थे। इनकी बातें सुनकर इनकी बींटें जमा कीं और इन्हीं से शाहजादे का इलाज किया। अब मैं आपके सामने हूँ।'' राजकुमारी की बातें सुनकर बादशाह प्रसन्न हो गया और राजकुमारी को अपने आसन पर अपने साथ बिठाया। उसके पिता के पास सन्देश वाहक भिजवाया। राजकुमार और राजकुमारी को विवाह-बन्धन में बाँध दिया गया।

तीन अन्धे

कहते हैं एक अन्धा एक मसजिद की नींव के पास बैठा था। वहाँ से एक चालाक आदमी गुजरने लगा। अन्धे ने खड़ाऊँ की आवाज़ सुनी और इस आदमी से कातर स्वर में कहने लगा, ''खुदा के लिए मुझे कुछ दे दो! अरे, सौभाग्यशाली! दो दिन से भूखा हूँ! दाता! जेब में हाथ डाल दो और मुझे कुछ पैसे दान दो!'' वह आदमी अन्धे के कातर वचनों से द्रवित हो उठा और जेब से एक रुपया निकालकर अन्धे को देने लगा और साथ ही कहने लगा कि ''बारह आने वापस करो।'' अन्धे ने जवाब में कहा, ''कहीं यह रुपया खोटा तो नहीं ? मैं पहले इसकी जाँच करूँगा।''

''अरे तुम कैसे इसे जाँचोगे ?'' उस आदमी ने कहा।

''तुम्हें इससे क्या ? यह मेरा काम है।''

अन्धे ने रुपया हाथ में लिया और हथेली पर उसका भार परखा। ऐसा करते समय पूरा रुपया रखने को उसका मन ललचा गया। जब उस आदमी ने बाकी छुट्टा माँगा तो वह अन्धा हाय-तौबा मचाते हुए कहने लगा, ''अरे लोगो! यह आदमी मुझे लूट रहा है।'' अन्धे की हाय-तौबा से बहुत से लोग इकट्ठे हो गए और उस आदमी को दुत्कारने लगे। वह आदमी काफी परेशान हो गया। वह जब अपनी सफाई में मुँह खोलना चाहता था त्यों ही उसे लोग कुछ भी कहने नहीं देते थे, उल्टे उसी से उपदेश के लहजे में समझाते, ''अरे, तुम्हें क्या हुआ! इस बेचारे अन्धे को लूट रहे हो।''

वह आदमी शर्मिन्दा होकर दूर जाकर तमाशा देखने लगा। सभी लोग चले गए। अन्धे को लगा कि अब मेरे आसपास कोई नहीं है। और अपने आप से ही कहने लगा, 'इस ऐसे-तैसे को पता था कि मैं बारह आने वापस लूँगा, पर उसे मालूम नहीं कि मैं उसे छोड़ने के लिए कुछ और भी ले लेता।' वह आदमी सब सुन रहा था। अन्दर ही अन्दर जल-भुन भी रहा था। पर करता क्या ? वह बिलकुल मौन रहा और इस अन्धे की बातें सुनता रहा।

अन्धा अपने आप से कहने लगा, 'दो सौ एक पहले का है, यह एक रुपया मिला कर दो सौ दो हो जाएँगे।' और अपने लत्ते को इधर-उधर टटोलने लगा तथा यह रुपया भी पहले रखे रुपयों के साथ रख दिया। वह आदमी यह सब देख रहा

था। उसने सोचा, अब इसकी ऐसी-तैसी करना सरल हो गया है। यह सोचते हुए वह घर की ओर चल दिया। घर पहुँचकर उसने मधुमक्खियों को एक कलसी में बन्द कर दिया और इसके ढक्कन में थोड़ा-सा शहद रख दिया। जब सुबह पौ फटी, उसने कलसी उठाई और चल दिया। मसजिद के कोने पर उसी अन्धे को देखा। इधर-उधर दृष्टि डालने के पश्चात् अन्धे से कहने लगा, "अरे भाई, यह कलसी तुम्हें सौंप रहा हूँ। इसे तब तक अपने पास रखो जब तक मैं मसजिद के अन्दर जाकर मुँह धोकर आ जाऊँ, और हाँ, इसका ढक्कन नहीं उठाना, इसमें मैं पीर (गुरु) के लिए शहद लाया हूँ। अगर तुम्हें खाना हो तो ढक्कन में से ही जरा-सा ले लेना।" अन्धे ने हामी भरी और वह आदमी तनिक दूर जाकर उस पर दृष्टि रखे रहा।

अन्धे ने अपने हाथ की एक उँगली ढक्कन में रखे शहद में डाल दी और चाटने लगा। उसे बहुत स्वाद आया और अपने-आप से कहने लगा, 'छोड़ो पीर को, इस ढक्कन में रखे शहद का यह हाल है, कलसी में रखा शहद इससे भी बढ़िया होगा।' ऐसा कह उसने कलसी का ढक्कन हटाया। ढक्कन हटाने की देर थी कि मधुमक्खियाँ एक साथ निकलीं और अन्धे को काटने लगीं। अन्धे को अपना लत्ता उतारने और उसे दूर फेंकने के बिना और कुछ न सूझा। वह चिल्लाने लगा, "हाय खुदाया! मुझे काट खाया।" वह आदमी तुरन्त आया और उस लत्ते को समेट अपने फिरन के अन्दर बगल में दबाया और घर की ओर चल दिया। अन्धे के इर्द-गिर्द काफी आदमी एकत्रित हो गए और उससे चिल्लाने का कारण पूछने लगे। उसने उनसे केवल यही कहा कि "मुझे मधुमक्खियों ने डस लिया, जरा देखिए, कहाँ है मेरा लत्ता।" इधर-उधर ढूँढ़ने पर किसी को लत्ता नहीं मिला। बेचारा अन्धा हाथ मलने लगा।

वह आदमी जब घर पहुँचा तो उसने लत्ते से दो सौ दो रुपए निकाल लिए और अपने से कहने लगा, 'आज अन्धे की समझ में आएगा कि यहाँ भी आदमी रहते हैं।' इसके बाद वह यह देखने के लिए चल दिया कि अन्धा क्या कर रहा है। इधर-उधर ढूँढ़ने पर उसे अन्धा जब कहीं नहीं मिला तो वह आदमी हमाम के अन्दर चला गया। वहाँ उसने और दो अन्धे उसे बुरा-भला कहते दिखे, "अरे, तुम्हें पैसा सँभाल के रखने का कोई ढंग नहीं आता! क्या हुआ तुम्हें, तुम्हारी अक्ल घास चरने गई थी क्या ?" जब उस आदमी ने हमाम का दरवाजा बन्द कर दिया तो अन्धे चुप हो गए। जब उस आदमी ने यहाँ तीन अन्धों को मीटिंग करते देखा तो वह हैरान हो गया। उसने सोचा, उनके पास भी कहीं-न-कहीं पैसा होगा, इसीलिए ये आपस में मीटिंग कर रहे हैं। उस आदमी ने वैसे ही ऊँची आवाज़ में कहा, "अरे यहाँ ग्राम-प्रधान तो नहीं ?" अन्धों ने कहा, "यहाँ वे कहाँ! बस यहाँ तो केवल

हम ही हैं।'' उस आदमी ने उन्हें विश्वास दिलाने के लिए कहा, ''अच्छा तो मैं चला।'' और दरवाजा खटाख के साथ बन्द कर दिया। ,

पर यह जाता कहाँ, उसे तो अन्धों का धन टटोलना था। अन्धों को लगा कि वह आदमी चला गया पर अपने विश्वास को पक्का करने के लिए उन्होंने कहा, ''अरे कौन है ?'' वहाँ से जब कोई आवाज़ नहीं आई तो उन्होंने अपनी बातचीत जारी रखी। दूसरा अन्धा फिर कहने लगा, ''अरे सुना तुम्हें पैसे सँभाल के रखने की कोई तमीज नहीं है। मेरे पास यह लाठी है। मैं इसी के खोखल में हर रोज जितने भी पैसे मिलें, डालता हूँ। यह सदा मेरे हाथ में रहती है, इसलिए इसकी चोरी नहीं हो सकती और किसी को शक भी नहीं हो सकता कि इसमें रुपए हो सकते हैं।''

वह आदमी सब सुन रहा था और मन-ही-मन कह रहा था कि दूसरा शिकार भी मिल गया। अब यह लाठी हासिल करनी है। द्वार खुलने की आवाज़ हुई और अन्धे चुप हो गए, फिर पूछा, ''अबे, कौन है ?''

एक जवान की आवाज़ आई, ''अबे सूरदासो! किसी को मुँह भी धोने नहीं दोगे क्या ?'' उस आदमी को बाहर जाने का मौका हाथ लगा। बाहर जाकर वह सीधे ही बढ़ई के पास गया और कहा, ''मुझे अभी तुरन्त एक लाठी बना के दे दो।'' लाठी हाथ में ली और चलता बना। चलते-चलते हमाम में पहुँच गया और प्रतीक्षा करने लगा कि कब अन्धा मुँह धोने के लिए उठे ताकि मैं उसकी लाठी ले सकूँ और उसके बदले यह लाठी वहाँ रख दूँ। जब उसे डंडा उठाने का कोई अवसर न मिला तो अन्धों से कहने लगा, ''अरे मित्रो! हमाम बन्द न रखा करो। या निमाज़ पढ़ो या हमें निमाज़ पढ़ने दिया करो। फ़जूल में बकवास करते हो और दिमाग चाटते रहते हो।'' अन्धे एक साथ बोल पड़े, ''अरे! हम भी तो निमाज़ पढ़ रहे हैं।'' इस आदमी ने कहा, ''मैंने तुम्हें कभी चुल्लूभर पानी भी चेहरे पर डालते हुए नहीं देखा।'' एक अन्धे ने दूसरे से कहा, ''अरे मुझे मुँह धोना है और निमाज़ पढ़नी है।''

इन तीनों अन्धों में से लाठी वाला अन्धा उठ खड़ा हुआ, लाठी दरवाजे की चौखट के सहारे टिका ली और मुँह धोने लगा। लाठी रखने की ही देर थी कि उस आदमी ने लाठी उठा ली और इसके बदले अपने साथ लाई हुई लाठी रख दी। और तेज-तेज कदम बढ़ाते हुए घर की ओर चल दिया।

अन्धे ने मुँह धोकर अपनी लाठी टटोली। दरवाजे से टिकी लाठी उठा ली। उठाते ही उसे इसका वजन कम लगा। चिल्लाया, ''हाय मेरे मौला मेरी सोटी कोई उठा के ले भागा!'' कहते हुए सिर पीटने लगा। लोग जमा हो गए और अन्धे को बुरा-भला कहते हुए बोले, ''अरे भाई तुम्हारी लाठी तो तुम्हारे हाथ में है फिर क्यों

चिल्लाते हो कि मेरी लाठी कोई ले गया! वह कौन बेवकूफ होगा जो तुम्हारी लाठी ले भागेगा।'' अन्धा ज्यों ही बात करने के लिए मुँह खोलता है त्यों ही कोई- न-कोई उसे बात करने नहीं देता। जब तीनों अन्धों ने अधिक बकवास करना शुरू किया तो लोगों ने उन्हें गाँव के बाहर कर दिया।

वह आदमी जब घर पहुँचा और लाठी के हत्थे को खोला तो लाठी के खोखल में से तीन सौ इकतालीस रुपए निकले। वह रुपए देखकर बहुत प्रसन्न हो गया और साथ ही तीसरे अन्धे को लूटने की योजना बनाने लगा।

कुछ समय बीतने पर अन्धे हमाम में दुबारा आ गए। कुछ और समय बीतने पर एक दिन वह आदमी मसजिद में बहुत देर तक यह सोचते बैठा रहा कि तीसरे अन्धे को कैसे लूटा जाए। कुदरत की करनी, दरवाजा खोलने की आवाज़ हुई। वह आदमी चुपचाप बेहरकत बैठा रहा। अन्धों ने आवाज़ लगाई, ''कौन है रे ?'' जब किसी ने जवाब नहीं दिया तो तीसरा अन्धा बाकी दो से कहने लगा, ''अरे भाइयो! मैं पहले इन दिनों की कमाई अपने खजाने में रखता हूँ फिर मुझे शान्ति मिलेगी।'' साथ ही उसने इधर-उधर सिर घुमाते हुए आवाज़ दी, ''अरे कोई है ?'' जब कहीं से कोई आवाज़ न आई तो वह निश्चिन्त होकर चुपचाप बीच के आले के पास गया। वहाँ फटी-पुरानी चटाई को हटाकर फर्श के घड़े से छोटी-सी कलसी को निकाला। ढक्कन हटाया और इसमें अपनी कमाई डाल दी। पैसे डालते हुए स्वयं से कहने लगा, 'तीन सौ पन्द्रह और यह हुए ग्यारह रुपए।'' फिर उँगलियों के पोरों पर गिनती करने के पश्चात् बोला, ''तो हुए तीन सौ छब्बीस रुपए।'' कलसी को फिर अपनी जगह रख कर हमाम में लौटा और बाकी अन्धों से इधर-उधर की बातें करने लगा। बीच में बाकी दो को ताना देने के लहजे में बोल पड़ा, ''अगर तुम नादान न होते तो कमाया कभी न खोते। मैंने ही अच्छा किया। मैंने फर्श में घड़ा खोद उसमें एक छोटी कलसी रखी है और रोज उसी में अपनी कमाई डालता हूँ। उसकी रखवाली खुदा करते हैं।'' वह आदमी कान लगाकर ये बातें सुन रहा था। अन्धे आपस की बातचीत में मस्त थे।

वह आदमी धीरे-धीरे उस जगह गया जहाँ कलसी थी। उसने कलसी निकाली और खिड़की के रास्ते से निकलकर घर पहुँच गया। पत्नी से कहने लगा, ''आज मैं घोड़े बेच कर सो जाऊँगा।''

''क्या शिकार हो गया ?'' पत्नी ने पूछा।

''फिर क्या मेरे हाथ से निकल सकता था।'' उसने उत्तर दिया और कलसी का ढक्कन उठाकर रुपए गिनने लगा। बराबर तीन सौ छब्बीस रुपए थे। ''अब सब कुछ ठीक हुआ, एक काम करोगे ?'' पत्नी ने कहा।

''कौन-सा काम ?'' वह बोला।

''इन अन्धों को खाने पर निमन्त्रित कर लो ताकि हम इनसे परोक्ष में क्षमा माँग लें।''

रात बीत जाने पर यह आदमी, यह देखने के लिए कि अन्धे क्या कर रहे हैं, पौ फटते ही मसजिद की ओर चल दिया।

हमाम में पहुँच कर इसने चोरी के बारे में कुछ भी चर्चा होते न सुनी और घर लौट आया। नाश्ता करके फिर मसजिद गया। इस समय हमाम से तीनों अन्धे निकल चुके थे। बाहर से उसे कुछ शोर सुनाई दिया। वह तुरन्त बाहर आया। वहाँ अन्धे आपस में झगड़ रहे थे। ''क्या हुआ तुम लोगों को ?'' उसने उन्हें डाँटा।

''अरे यार, गज़ब हो गया! यह अन्धा कहता है कि तुम लोगों ने मेरे रुपयों से भरी कलसी चुरा ली है।''

''इनके बग़ैर मेरी कलसी कोई नहीं चुरा सकता।'' उस अन्धे ने कहा।

अन्त में ये इस नतीजे पर पहुँचे कि इन्हें कोई लूट रहा है। यह आदमी बिलकुल बेखबर और भोला बना रहा, पूछा, ''अरे भाइयो, तुम्हारे साथ क्या बीती है ?'' इन तीनों अन्धों ने क्रमशः अपने रुपए चोरी होने की बात कही। इनका पूरा किस्सा सुनने बाद उसने कहा, ''अच्छा, उसका भी चैन लुट जाए जिसने तुम लोगों को लूट लिया है।'' बहुत हमदर्दी जतलाते हुए कहने लगा, ''तुम लोग मुसीबत के मारे हो, अब एक काम करो कि शाम को मेरे साथ भोजन करो।''

''हमें और क्या मिलेगा ?'' अन्धे एक साथ बोल पड़े। ''एक-एक रुपया।'' उसने उत्तर दिया। अन्धों को लगा कि ठीक है, एक तो भर पेट भोजन और साथ में एक-एक रुपया! उन्होंने खुशी-खुशी आने के लिए हामी भरी।

रात जब होने को आई यह आदमी अन्धों को बुलाने चल पड़ा और अन्धों को अपने साथ घर ले आया। खूब खिलाया-पिलाया और एक-एक रुपया भी दे दिया। अन्धे प्रसन्न हो गए। अन्त में इस आदमी ने उनसे कहा, ''अच्छा भाइयो, सब ठीक हो गया, अब रात भी यहीं गुजार दो।''

''फिर कहाँ जाएँगे!'' अन्धों का उत्तर था।

''अब मुझे कृपा कर क्षमा करना।'' उसने कहा।

''एक तो खिलाया-पिलाया और क्षमा करने को कहते हो!''

उसने चालाकी-भरे शब्दों में कहा, ''अरे दोस्तो, तुम्हें यहाँ आने में बहुत तकलीफ हुई।''

''हमने सच्चे मन से क्षमा की।'' अन्धे एक साथ बोल पड़े।

''अच्छा उठो अब आराम से लेट जाओ।'' उसने कहा।

तीनों के लिए आराम देह बिस्तरे बिछाए गए और ये आराम से लेट गए।

आधी रात को दो अन्धे कुछ खुसुर-फुसुर करने लगे। ''क्या यही अच्छा हो

कि हम इस अन्धे को मार डालें ताकि हमें डेढ़-डेढ़ रुपया हिस्सा मिले। आखिर में उन दोनों ने सोए अन्धे का गला घोंट दिया। कुछ समय बीतने पर दो अन्धों में से एक को नींद ने घेर लिया। जागा हुआ अन्धा सोचने लगा, यदि मैं इसे मारूँ तो तीनों रुपए मुझे मिलेंगे। यह अन्धा एकदम उठ खड़ा हुआ और सोए अन्धे के गले पर अपना पैर कस कर रख दिया और इसे दम घोंट कर मार डाला। कुछ समय बाद यह अन्धा अपनी करनी से भयभीत हो गया। इसमें इतना डर समा गया कि इसने भी जान दे दी।

सुबह जब वह चालाक आदमी इन अन्धों को जगाने लगा, उसके पैरों तले की जमीन खिसकने लगी और बहुत परेशान हो गया। कुछ क्षण बाद वह अपनी पत्नी के पास गया और उससे कहने लगा, "मैं अमुक स्थान पर अपने खेत में काम करने जा रहा हूँ, तुम मेरे लिए नाश्ता वहीं ले आना।" इसकी पत्नी तीक्ष्ण बुद्धि की थी। उसे दाल में कुछ काला होने का सन्देह हो गया। जब इसका पति खेत में काम करने के बहाने चला गया तो वह अन्धों के लिए नाश्ता लेकर उस कमरे में गई जहाँ ये सोए थे। कमरे में घुसकर उसने देखा कि तीनों मृत पड़े हैं। यह देखकर वह बहुत परेशान हो गई। अब क्या करती! उसने चाय से भरा समावार* अपने सिर पर उठा लिया और खेत की ओर चल दी। खेत पर पहुँचकर उसने वहाँ अपने पति को नहीं पाया। वह मेंड़ पर बैठ गई और चाय पीने लगी। समावार को खाली कर वह उठी और घर आ गई। यहाँ एक कमरे में बैठ कर सोचने लगी कि अब क्या किया जाए!

चालाक आदमी का मकान बाकी मकानों से दूरी पर ही था और इस मकान के पड़ोस में चर्स पीने वालों का एक अड्डा था। चर्सी रातभर चर्स पीते रहते और नशे में धुत बेसिर-पैर की हाँकते रहते! रात हो जाने पर इस औरत ने भोजन किया। थोड़ा सुस्ताई भी और बाद में बहुत शोर मचाना आरम्भ किया कि उसका पति मर गया। इन चर्सियों ने जब शोर सुना तो वे तुरन्त महिला के पास आ गए और कहा, "अरी, चिल्लाओ नहीं, हमें बता दो कि क्या हुआ ?"

"मेरा पति मर गया है।" उसने उत्तर दिया।

एक चर्सी ने दूसरे से कहा, "यह औरत रातभर चिल्लाकर हमारी नींद हराम कर देगी क्यों न इसके पति को ले जाकर दफन किया जाए।" "हाँ, यह ठीक रहेगा।" बाक़ी चर्सियों ने हामी भरी। इस औरत ने एक अन्धे को कमरे से निकाल लिया। चर्सियों ने शव को कन्धे पर उठाया और ले गए। अभी चर्सी इस शव को दफन कर लौट ही आए थे और चिलम को सुलगाने ही लगे थे कि वह औरत फिर

---

* एक विशेष पात्र जिसमें कश्मीरी चाय बनाते हैं।

चिल्ला-चिल्ला कर कहने लगी, "या मेरे खुदा! यह लौट आया!" चर्सियों ने ज्यों ही आवाज़ सुनी वे कहने लगे कि "यह औरत हमें चैन से बैठने नहीं देगी। अब इस ऐसी-तैसी को क्या हुआ ?" यह कहते हुए वे औरत के घर की तरफ दौड़ पड़े। इन्हें आया देख वह औरत कहने लगी, "अरे भाइयो! यह वापस आ गया!" चर्सियों ने आव देखा न ताव शव को कन्धों पर उठा कर ले गए। अभी चर्सियों को मुश्किल से एक घंटा ही लौटे हुआ होगा कि फिर चिल्लाने की आवाज़ आई, "या मेरे खुदा यह वहाँ से भाग कर आता है!" चर्सियों को क्रोध आया और इस औरत के पास आ गए और ऊँची आवाज़ में कहने लगे, "अरी ओ बेशर्म तुम हमें बहुत तंग क्यों कर रही हो ? कहाँ है वह ? अबकी हम इसे दिखा देंगे कि लौट के आना क्या होता है।" औरत ने तीसरे अन्धे को घसीट कर बाहर निकाला और कहा, "मैं तुम्हारे सदक़े इसे वहाँ पर ले जाना जहाँ से यह लौट ही न सके।" इन्होंने शव को अच्छी तरह बाँधा और कुछ क्षण सोचने के बाद कहा, "अबकी बार इसे पुल पर से नदी की गहराई में फेंक देंगे।"

इस समय पौ फटने वाली थी। जिस समय इन चर्सियों ने अन्धे के शव को नदी में फेंक दिया, उस समय एक बटुं* (कश्मीरी पण्डित) नदी किनारे पूजा (संध्योपासना) कर रहा था। जब शव को नदी में फेंकने पर आवाज़ हुई तो बटुं इस भयानक आवाज़ को सुनकर भयभीत हुआ और भागने लगा। चर्सियों की नज़र इस पर पड़ी और कहा कि वह औरत ठीक ही कहती थी शव तो सचमुच ही भागकर लौट आता है। चर्सी इसका पीछा करने लगे और कहा, "अबकी हम तुम्हें छोड़ने वाले नहीं। तुम लौट-लौट आते हो। तुमने हमारे तलवों पर छाले पड़वा दिए।" फिर इस बटुं को पकड़ कर बाँध लिया और नदी में फेंक दिया। लौटकर उस औरत से कहने लगे, "तुम सच कहती थी, वह फिर लौट रहा था, पर हम उसे कहाँ छोड़ने वाले थे!"

यह औरत मन-ही-मन हँसी और सोचा, न जाने कौन इन तीन अन्धों की बलि चढ़ गया! दूसरे दिन जब इस औरत का पति घर लौटा तो पत्नी ने उसे सारा हाल सुना दिया। वह बहुत प्रसन्न हुआ और उस धन को निडर होकर खर्चने लगा।

---

* कश्मीरी में कश्मीरी पण्डित को 'बटुं' कहा जाता है।

पोशिमाल*

एक था सौदागर। उसकी तीन बेटियाँ थीं। जब-जब सौदागर दूसरे देशों में माल लेकर जाता वह वहाँ से अपनी बेटियों के लिए कुछ-न-कुछ भेंट ले आता। बड़ी दो बेटियों के लिए वही लाता जो वे कहतीं परन्तु सबसे छोटी, जिसका नाम पोशिमाल था, कभी उसे कुछ लाने के लिए नहीं कहती।

पोशिमाल तीनों बहनों में सबसे सुन्दर, सलोनी और आकर्षक थी। इतना ही नहीं उसमें इतनी हिम्मत थी जितनी प्रायः महिलाओं में नहीं होती। सौदागर को भी वह सबसे प्यारी थी। इतनी प्यारी कि उसके प्राण उसी में बसते थे।

एक साल सौदागर ने बहुत-सा माल एकत्र किया और उसे लेकर एक बड़े काफिले के साथ तिब्बत की ओर चल पड़ा। यात्रा पर जाते समय उसने अपनी बेटियों से पूछा कि वह उनके लिए क्या लेकर आए ? दो बड़ी लड़कियों ने अपनी-अपनी पसन्द बता दी, पर पोशिमाल ने कहा, "आप ठीक-ठाक और लाभ कमाकर लौट आएँ वही मेरे लिए अच्छा है।" पर पिता न माना। उसने उसे शपथ दी और विवश होकर पोशिमाल ने कहा, "मेरे लिए एक गुलाब लेते आइए।"

सौदागर यह सुनकर चकित हो गया कि उसकी लाडली बेटी ने किस चीज़ की फरमाइश की!

लम्बी और श्रमसाध्य यात्रा कर सौदागर तिब्बत पहुँचा। वहाँ अपना माल बेचा और कश्मीर में बेचने के लिए कुछ माल खरीदा। दोनों बेटियों के लिए दो वस्तुएँ खरीदीं पर गुलाब नहीं मिला। यह शरद्काल था, शरद्काल में गुलाब कहाँ खिलते हैं! उसकी लाडली बेटी ने पहली बार फरमाइश की थी, वह इसे पूरा न कर सका जिसका उसे बहुत दुःख था।

कारवाँ लौटने लगा मगर सौदागर का मन जैसे रो रहा था। कारवाँ चलता जा रहा था और बीच में उन्हें प्रभंजन ने घेर लिया। क़ाफिले को खतरा महसूस हुआ, अतः उन्होंने एक जगह तम्बू गाड़ने आरम्भ कर दिए। वे तम्बू गाड़ ही रहे थे कि तूफान तेज़ हो गया। चारों ओर अँधेरा छा गया। आँधी ने सारे तम्बू उखाड़ दिए,

---

* कश्मीरी में 'पोशिमाल' शब्द का अर्थ फूलों का हार है।

उड़ा दिए। घोड़ों ने त्रास खाया और लगामें तोड़कर भाग निकले। इसी बीच सौदागर सब कुछ छोड़कर भागते-भागते किसी अज्ञात जगह पहुँच गया। वह कोई आश्रम स्थल खोजने लगा पर इस तूफान और घटाटोप में उसे कहीं कुछ दीख नहीं रहा था।

धीरे-धीरे अन्धकार छँटने लगा। सौदागर इधर-उधर देखने लगा। उसे दूर एक श्वेत चमकीला भवन दिखाई दिया। इस भवन की ओर उसके कदम अपने आप चलने लगे। चलते-चलते रात हो गई। सौदागर ने पुनः भवन की ओर देखा। उसकी खिड़कियों से प्रकाश-किरणें बाहर आ रही थीं। सौदागर चलता गया और न जाने कितने समय बाद वह वहाँ पहुँचा। द्वार पर कुछ देर तक प्रतीक्षा करता रहा, पर अन्दर से कोई न आया। सौदागर का अंग-अंग ढीला हो गया था और उसके पेट में भूख के मारे चूहे दौड़ रहे थे। वह अन्दर घुस गया। वहाँ भी कोई न था। भवन के अन्दर घुसते ही उसकी नजर स्नानगृह पर पड़ी। वहाँ गरम पानी काफी मात्रा में मौजूद था। उसने स्नान किया और स्नान-गृह में पहले से ही विद्यमान कपड़े पहन लिए। स्नान-गृह से निकलकर उसने एक कमरे में दस्तर खान बिछा पाया जिस पर तरह-तरह के पकवान और व्यंजन थे। वह बहुत हैरान हो गया— इतने बड़े भवन में कहीं कोई नज़र नहीं आ रहा था, पर सब कुछ पहले से ही तैयार रखा गया था। उसने निश्शंक हो पेट भर कर खाना खाया। इतने में अपने आप बिस्तर बिछ गया और उसने अपने आपको प्रभु के हवाले कर बिस्तर पर पसार दिया। थोड़ी देर बाद ही वह गहरी नींद सो गया।

जब वह सुबह जागा तो यहाँ से निकल जाने की तैयारी में लग गया। तैयारी करते हुए उसकी दृष्टि बाहर बाग की ओर गई और वह बहुत प्रसन्न हो गया। इस बाग के तिनके तक सूख गए थे परन्तु एक गुलाब की झाड़ में अनेक गुलाब खिले हुए थे। गुलाबों की पंखड़ियों पर ओस-बिन्दु थे। इन ओसीले गुलाबों को देखते ही उसे अपनी बेटी पोशिमाल की याद आ गई जिसने उसे गुलाब लाने को कहा था। उसने एक गुलाब तोड़ा। इसी के साथ बादल के गरजने की-सी विकट ध्वनि हुई और गुलाब की झाड़ से एक जिन प्रकट हो गया। यह जिन बहुत ही कुरूप और भयावह था। इसे देखकर सौदागर हक्का-बक्का रह गया। जिन ने उसे कहा, "एक तो खाया-पिया, आराम भी किया। मैंने कुछ भी नहीं कहा, पर तुमने यह गुलाब क्यों तोड़ा ? अब मैं छोड़ूँगा नहीं। तुझे खा जाऊँगा।"

सौदागर थरथराने लगा। उसके बोल न फूट सके। अत्यन्त कठिनाई से कहा, "मुझ पर दया कीजिए। जो आप चाहेंगे वह चीज़ मैं आपको दे दूँगा। मैंने यह गुलाब पोशिमाल के लिए तोड़ा था।"

"कौन है यह पोशिमाल ?" जिन ने पूछा।

"मेरी तीन बेटियाँ हैं। एक का नाम पोशिमाल है। यह गुलाब उसी के लिए था।"

"मैं तुम्हें एक शर्त पर छोड़ सकता हूँ। तुम घर पहुँच कर तीन बेटियों में से एक को तीन दिन के अन्दर मेरे पास भेज देना। अगर नहीं भेज दोगे तो मैं तुम्हें और तुम्हारे पूरे परिवार को खा जाऊँगा।" जिन ने कहा और इसी के साथ गायब हो गया।

सौदागर गुलाब लेकर घर की ओर चल दिया। जिस समय वह घर पहुँचा हर ओर बर्फ के ढेर नजर आते थे। उसने पोशिमाल को गुलाब थमा दिया। यह ताज़ा और ओसिल गुलाब देखकर मारे खुशी के पोशिमाल का दिल एक क्षणांश के लिए बैठ-सा गया। जब सौदागर ने सारी कहानी अपने परिवार के सदस्यों को सुनाई तो मातम-सा छा गया।

"तुम हर समय ऐसी ही हो! देखो, पूरा घर-परिवार किस मुसीबत में फँसवा दिया!" बहनों ने ग्लानि में डूबे पोशिमाल से कहा। 'किस बेटी को जिन के पास भेज दूँ' सौदागर सोच ही न पा रहा था। दूसरे दिन पोशिमाल ने पिता के पास स्वयं जाकर कहा कि "मैं जिन के पास जाऊँगी।" पिता रोते-बिलखते पोशिमाल को साथ लेकर जिन के पास पहुँच गया। इस समय गुलाब की झाड़ में पहले से अधिक गुलाब खिले थे। सौदागर ने एक गुलाब तोड़ा और जिन प्रकट हो गया। पोशिमाल को देखकर जिन बहुत प्रसन्न हो गया और पोशिमाल से कहने लगा, "मैं खुश हूँ कि तुम्हारे फूल जैसे नाज़ुक क़दम यहाँ पड़े। तुम सचमुच नन्दन कानन के पुष्पों का हार हो। तुम यहाँ आराम से रहो। तुम्हारा पिता भी यहाँ तीन दिन रह सकता है। इन तीन दिनों में तुम भी यहाँ के वातावरण से परिचित हो जाओगी। जो तुम चाहोगी वह तुम्हारे सामने आ जाएगा। तुम्हें यहाँ कोई कष्ट नहीं होगा।" इतना कह कर जिन गायब हो गया।

तीन दिन बीत जाने पर सौदागर रोते-रोते घर की ओर चल दिया। पोशिमाल भी बिलखने लगी। कितनी देर तक रोती रहती! शनैः-शनैः वह इस वातावरण की अभ्यस्त हो गई। जिस किसी भी वस्तु की उसे इच्छा होती, वह उसके सामने प्रकट हो जाती। यहाँ केवल एक चीज़ की कमी थी, वह यह कि पोशिमाल के साथ बात करने के लिए कोई न था। जिन को भी उसने दुबारा नहीं देखा। वह सोच रही थी कि जिन ने मुझे यहाँ क्यों बुलाया है ? जिन ही यहाँ होता तो कम से कम वह उसी से बात तो कर सकती थी। उसने एक गुलाब तोड़ा। जिन प्रकट हो गया। वह बहुत खुश था। "तुमने मुझे किसलिए बुलाया है यहाँ ?" पोशिमाल ने प्रश्न किया। जिन मौन रहा।

"मैं यहाँ बहुत दु:खी हो गई हूँ। यहाँ मेरे साथ बात करने को भी कोई नहीं है।"

''मैं हूँ ना !'' जिन ने कहा।

''तुम! तुम जिन हो! हट्टे-कट्टे बैल सरीखे। कुरूप और नरभक्षी! तुम मुझे खा डालो, बस!''

यह सुनकर जिन की आँखों से अश्रुधारा बह निकली और वह गायब हो गया। अब पोशिमाल जिन के बारे में नये कोण से सोचने लगी। जिन ने उसकी प्रत्येक आवश्यकता पूरी की थी पर वह उसके साथ कभी बदतमीजी से पेश नहीं आया था। जिन के प्रति पोशिमाल के मन में धीरे-धीरे हमदर्दी का भाव जागने लगा। इसके बाद वह कभी-कभी जिन के साथ बातचीत करने लगी। इससे उसका सारा भय दूर हो गया।

जिन के भवन में रहते अब पोशिमाल को बहुत समय हो गया। उसे पिता का प्यार सताने लगा। उनकी याद बहुत सताने लगी। पोशिमाल ने जिन से कहा कि वह पिता के पास जाना चाहती है। जिन ने कहा कि तुम जा सकती हो। परन्तु चौथे दिन लौट के आना है, यदि नहीं लौटीं तो हालात क्या मोड़ लेंगे उसकी वह स्वयं जिम्मेदार होगी। इसके बाद जिन ने उसे पिता के पास भेज दिया। तीन दिन पिता के पास रुकने पर भी उसके पिता का मन नहीं भरा और पिता के आग्रह से ही पोशिमाल चौथे दिन भी रुक गई।

वह जिन के पास नियत समय से एक दिन देर से पहुँची। भवन-परिसर में प्रविष्ट होकर उसने देखा कि गुलाबों की झाड़ सूख गई है। उसने एक कुम्हलाया गुलाब तोड़ा पर जिन प्रकट न हुआ। समूचे भवन पर मातम-सा छा गया था तथा स्फटिक की जगमग आभा बिलकुल समाप्त हो गई थी।

वह जिन की खोज कैसे करती! वह पछता रही थी कि वह विलम्ब से क्यों आ गई। वह ऊँचे स्वर में विलाप करने लगी। राम जाने कि कितनी देर तक वह रोती-कलपती रही। इसी बीच उसने 'हाय' की सी आवाज़ सुनी। वह इसी आवाज़ की दिशा में सीधे ही बाग में गई। वह बाग के तालाब के किनारे पहुँची और वहाँ जिन को तालाब के पानी में ऊब-डूब करते देखा। उसके शरीर के किसी अंग में शक्ति नहीं थी और वह जीवन की अन्तिम साँसें ले रहा था।

यह देखकर पोशिमाल बेतहाशा रो पड़ी और तालाब में कूद पड़ी। जिन ने जब उसे देखा, वह हाथ-पैर हिलाने तथा किनारे तक आने की कोशिश करने लगा। वह पोशिमाल से कहने लगा, ''तुमने आने में देर कर दी और मैं मौत के कगार तक पहुँच गया। यदि तुम दो-तीन क्षण देर से आती तो मुझे मरा पाती।'' पोशिमाल ने कोई उत्तर न दिया। उसने उसकी बाँहें पकड़कर घसीट लिया और किनारे पर ले आयी··पर क्या ? पोशिमाल जैसे गूँगी हो गई। उसके सामने अब जिन नहीं अपितु एक सलोना राजकुमार था। पोशिमाल ने आँखें मलीं। उँगली दाँतों तले दबाई। वह

बिलकुल सही देख रही थी। सोई नहीं थी वह। राजकुमार ने मधुर मुस्कान के साथ उससे कहा, ''प्रिये! सुनो। अब मैं तुम्हें सारा हाल बताता हूँ। मैं इस इलाके का राजकुमार हूँ। मैं इस सुन्दर भवन में प्रायः आता रहता था परन्तु यहाँ किसी को भी रहने नहीं देता था। मैंने कभी भी किसी को दान नहीं दिया और सब को नफ़रत की नजर से देखा। एक दिन मैं इसी भवन में था और एक देवता एक वृद्ध के रूप में मेरे पास आए। उन्होंने मेरे आगे हाथ पसारे। कुछ देने की बजाय मैंने उसे डाँटा और उन्होंने मुझे शाप दे दिया, 'जा तू जिन बन जा! उतना कुरूप हो जा जितना तू सलोना है!' मैंने उसके पैर पकड़े, गिड़गिड़ाया तब उसने शापमोचन का उपाय बताया—

'' 'यदि कोई लड़की तुम्हें मोहित करे और तुम्हारा हाल जाने बिना ही तुम से प्रेम करने लगे और तुम्हें अपने हाथों से छू ले तभी तुम पहली जैसी आकृति के हो जाओगे।'

'' तुम्हें देखकर मुझे लगा कि तुम मुझे इस भयानक कष्ट से मुक्ति दिलाओगी। चलो अब हम अपना राज सँभाल लें। मैं तुम्हारे पिता को सन्देश भिजवा दूँगा। तुम्हारी दोनों बहनें और पिता हमारे पास पहुँच जाएँगे।''

पोशिमाल के चेहरे पर एक जबरदस्त नशे की ज़बरदस्त खुमारी-सी छा गई। एक-दूसरे का हाथ पकड़ वे आगे चलते गए।

गुलाब की झाड़ में सैकड़ों गुलाब खिल गए थे और ओस भीगे गुलाब पोशिमाल और उनके प्रियतम पर अपने को वार रहे थे।

पागल कुतिया शीतल चिनार

एक लड़का था। उसके माता-पिता छुटपन में ही मर गए थे और उसे गाँव के अध्यापक ने पाला-पोसा था। अध्यापक इस लड़के से अपने गाय-बैल तथा भेड़ चरवाता था। लड़का तनिक चालाक था— जिस समय अध्यापक गाँव के बच्चों को पढ़ाता वह लड़का भी दूर से कान लगाकर सुनता रहता था। गाँव के बड़े जागीरदार की लड़की भी यहाँ पढ़ने आती थी और उस लड़के को उससे प्रेम हो गया। यह प्रेम एक ओर से ही था— लड़की लड़का से प्रेम नहीं करती थी क्योंकि लड़का उसे आँखें फाड़े देखता रहता था। इसी बीच अध्यापक भी मर गया और लड़के की यह जगह भी छिन गई। अब वह लड़का कभी किसी का और कभी किसी का काम करने लगा। काम के बदले उसे कभी मोटे अनाज का दलिया खिलाया जाता और कभी कुछ भी नहीं। लड़का किसी की शिकायत नहीं करता बल्कि सब की मदद कर हाथ बँटाता। ऐसे ही वह लड़का जवान हो गया और जागीरदार के लड़के का प्रेम उसके मन में घना होता गया।

ऐसे ही उसके दिन बीत रहे थे कि एक दिन गाँव में एक फ़कीर आया। लड़के ने उस फ़कीर की खूब सेवा की और फ़कीर भी उससे काफी स्नेह करने लगा। फ़कीर ने लड़के का नाम नुन्दुँ रखा और अब वह इसी नाम से पुकारा जाने लगा।

नुन्दुँ ने काफी समय तक फ़कीर की सेवा की। एक दिन फ़कीर बीमार पड़ गया। उसने नुन्दुँ को अपने पास बुलवाया और कुछ माँगने को कहा।

"मुझे वही चाहिए जो आपको अच्छा लगे।" नुन्दुँ ने उत्तर दिया।

फ़कीर थोड़ी देर के लिए सोच में पड़ गया, उसके बाद कहा, "जा, आज से तू हरेक जानवर की बोली समझ लेगा, पर एक बात याद रखना यदि इस रहस्य के बारे में किसी से भी कुछ कहा तो उसी समय मर जाओगे।" यह कहकर फ़कीर के प्राण-पखेरू उड़ गए।

नुन्दुँ आठ-आठ आँसू रोया। गाँव के लोगों को यह मनहूस सूचना दी। गाँव के लोग इकट्ठे हुए। कफन-दफन का प्रबन्ध किया और सबने मिलकर फातिहा पढ़ा।

एक दिन नुन्दुँ ईंधन लाने जंगल गया था कि उसने दो साँपों की बातचीत सुनी।

एक कह रहा था, "देखो यह नुन्दुॅ कितना भला है, पर इसके पास न खाने को दाना और न पहनने को लत्ता है।" यह सुनकर दूसरा नाग बोला, "जहाँ यह इस समय है वहाँ एक बड़ा भूमिगत खजाना है, पर इसे इसकी सूचना कौन दे!"

नुन्दुॅ ने ये सर्प-वचन सुने और फटाफट अपनी कुल्हाड़ी से भूमि खोदने लगा। उसे खज़ाना नज़र आया।

उसने इस धन से सबसे पहले अपने गुरु का मकबरा बनवाया। गुरु की कब्र पर स्फटिक का पत्थर लगवाया। इर्द-गिर्द फूलों के पौधे और कोमल दूब लगाई। इसके बाद उसने राजा के मिस्त्री और बढ़ई को बुलावा भेजा और उनके हाथों अपने मकान की नींव डलवा दी। उसका मकान राजा के भवन से बड़ा और नयनाभिराम बन गया।

एक दिन नुन्दुॅ अपने भवन में बैठा एक नृत्यांगना का नृत्य देख रहा था कि बाहर से उसने एक चूज़े की दयनीय आवाज़ सुनी जिसे एक चील अपनी चोंच में ले जा रही थी। उसने अपना तीर-कमान उठाया और चील को लक्ष्य बनाया। चील तड़पते हुए नीचे गिर गई। नुन्दुॅ ने चूज़े को उठाया, पानी पिलाया, दवा-दारू की और चूज़ा शनैः-शनैः ठीक होने लगा।

समूचे देश में नुन्दुॅ की भलमानसाहत और अमीरी के चर्चे होने लगे। राजा ने उसे बुलावा भेजा कि नुन्दुॅ राजकुमारी से विवाह-बन्धन में बँध जाए, परन्तु नुन्दुॅ के ह्रदय में लड़कपन से जो अग्नि जल रही थी वह उसे राजद्वार के पार कैसे होने देता! उसने गाँव के बिचौलिए के द्वारा जागीरदार को सन्देसा भेजा और विवाह तय हुआ।

नुन्दुॅ दूल्हा बनकर घोड़ी चढ़ा। घोड़ी ने अपने आपसे कहा कि मैं अपने मालिक से कैसे कहूँ कि जिस महिला के साथ उसकी शादी हो रही है वह एक डाइन है।

उसने घोड़ी को पीटा और दूसरी घोड़ी मँगवाई।

शादी के पश्चात् उसका कुछ समय ठीक-ठाक बीता। मगर नुन्दुॅ की समझ में जल्दी आ गया कि उसकी पत्नी उन औरतों में से है जो पतियों को इजाजत के बिना खाँसने भी नहीं देती है। परन्तु वह सोच रहा था कि पहली बुराई दूसरी अच्छाई के बराबर होती है। इसलिए वह सब बरदाश्त कर रहा था। उसने पत्नी को संसार का व्यवहार सिखाने की अनथक कोशिश की, पर स्वभाव आसानी से कहीं बदलता है ?

एक दिन वे दोनों घोड़ों पर सवार होकर कहीं जाने के लिए निकल पड़े। घोड़ा बढ़िया चाल से चला पर घोड़ी बहुत ही धीमे चल रही थी। इस कारण घोड़े ने घोड़ी से कहा, "अरी, तुम्हें किस बात पर अहंकार है! कहीं तुम मुझे मालिक-सा तो नहीं समझतीं, इसीलिए नखरे करते हुए चलती हो।"

यह सुनकर नुन्दुँ को हँसी आ गई और उसकी पत्नी की उस पर नज़र पड़ गई और बोली, ''तुम किस कारण अपने आप से हँस रहे हो ?''

''कुछ नहीं···वैसे ही हँस रहा था।''

''मैं कहूँगी।'' घोड़ी ने घोड़े से कहा, ''मुझ पर मालकिन सवार है। यह इतनी भारी है जैसे मेरे कमर के ऊपर पहाड़ हो। यह सम्भवतः इसके पापों का भार है।''

यह सुनकर नुन्दुँ को फिर हँसी आ गई। उसकी पत्नी की पुनः उस पर नज़र पड़ी और कहा, ''तुम यह क्यों नहीं बताते कि तुम क्यों हँस रहे हो ?''

''क्या कहूँ मुझे एक बात याद आ गई।''

''कौन-सी बात ?''

''वह तुम्हारे सुनने लायक नहीं।''

''मेरे लायक कैसे होगी। न जाने किस रंडी से चोरी-छिपे गाँठ लगी है और मुझे बेवकूफ समझ रहे हो !''

''वैसी कोई बात नहीं। यह एक रहस्य है जो मैं किसी को बता नहीं सकता। इस रहस्य के बारे में यदि मैं कहूँ तो मैं जिन्दा नहीं रह सकता।''

''क्या बकवास करते हो! क्या तुम मुझे दूधपीती बच्ची समझ रहे हो ? अगर मुझे नहीं बताते तो मैं तुम्हारा फेफड़ा निकालकर खा जाऊँगी।''

''मैं तुम्हें बता नहीं सकता चाहे तुम कुछ भी कहो।''

''कहोगे कैसे, मेरे पिता की मत मारी गई थी जिसने मुझे इस मुसीबत में डाला।'' ऐसा कह कर वह रोने लगी। राहगीरों ने जब उसे रोते देखा तो वे इनके इर्द-गिर्द जमा हो गए। अब नुन्दुँ पत्नी को मनाने लगा पर वह रोती ही गई। घर पहुँच कर नुन्दुँ ने उसे शपथ लेकर कहा कि यदि यह राज मैं किसी के सामने खोलूँगा तो मैं जिन्दा नहीं रह सकता। पर उसकी पत्नी ने नहीं माना। बहुत दिनों तक इनके घर में यही क्लेश रहा और नुन्दुँ को लगा कि इस प्रकार के जीने से मर जाना ही अच्छा है। उसने पत्नी को अपना रहस्य बताना स्वीकार किया।

नुन्दुँ ने मृत्यु के बाद का सारा प्रबन्ध किया। वह आधी रात को उठा और अपने को शव-स्नान करा दिया। इसके बाद कफ़न पहनकर पत्नी से बोला, ''अरी मैं अभी कहता हूँ जिद न करो, मैं नहीं रहूँगा।''

''देखो यह मरदूद मुर्दा क्या कहता है! मरोगे तो मरो! मैं भी इस कष्ट से आज़ाद हो जाऊँगी।''

वह अत्यन्त कातर दृष्टि से पत्नी की ओर देखने लगा और कहा, ''अच्छा सूर्योदय के बाद बता दूँगा तब मैं ताबूत भी मँगवा लूँगा।''

इसी समय मुर्गा बोला और बोलता ही रहा। कुत्ते को यह बहुत नागवार गुजरा

और मुर्गे से कहने लगा, ''अरे कमीने मुर्गे! तुम वह समय भूल गए जब तुम्हें चील ने चोंच में दबोचा था। तुम देख नहीं रहे कि हमारा स्वामी मौत के कगार पर खड़ा है और तुम राग पर राग अलापते जा रहे हो!''

''अरे कुत्ते! वास्तव में तुम बेवकूफ हो। मैं मालिक की मूर्खता पर ही हँस रहा हूँ। देखो बीवी से कितना दबता है।''

''नहीं,'' कुत्ते ने कहा, ''औरत ऐसी ही होती है। मैं मालिक के बिना जी नहीं सकूँगा। मैं वफादार हूँ और तू मालिक की गलतियाँ ढूँढ़ता रहता है और नसीहत करता है।''

''और क्या करूँ।'' मुर्गे ने ऊँची आवाज़ में कहा, ''मेरे आगे-पीछे सैकड़ों मुर्गियाँ होती हैं, पर क्या मजाल कि वे मेरी आज्ञा के बगैर एक दाने को भी छुएँ। वह नर, नर नहीं जो मादा को सिर पर सवार होने दे। मालिक को अपनी पत्नी को वश में रखना चाहिए था। मुर्गों के कौम में यह रिवायत है कि जब मुर्गी मुर्गे से ऊँची आवाज़ में कुटकुटाने लगे तो चारों ओर हाहाकार मच जाता है।''

यह सुनकर नुन्दुँ को जोश आ गया। उसने कफ़न फाड़ डाला, चाबुक उठाया और पत्नी के टेढ़े दिमाग को सीधा करने लगा।

कहते हैं कि इसके बाद यह पागल कुतिया शीतल बुइन (चिनार) बन गई।

दिलाराम

एक था बादशाह। बहुत ही भला और सत्कर्मी। प्रजा बादशाह के न्याय तथा न्यायप्रियता से बहुत प्रसन्न थी। देश में शान्ति व्याप्त थी। सुख और समृद्धि का चहुँ ओर बोलबाला था।

बादशाह को एक गम अन्दर-ही-अन्दर खाए जा रहा था। उसकी कोई सन्तान न थी। यह रात-दिन खुदा से औलाद पाने के लिए प्रार्थना करता था, पर खुदा के दरबार में उसकी प्रार्थना स्वीकार नहीं होती थी। पति-पत्नी ने आस्तानों पर जाकर मन्नते माँगीं, पीरों और फ़कीरों के चरण गहे पर निरर्थ। हर जगह मायूस हुए।

एक रात को, सन्तानाभाव से बहुत उदास होकर बादशाह कब्रिस्तान की ओर चल पड़ा। रास्ते में बादशाह ने एक जगह एक वृक्ष के नीचे एक दीप्तिमान साधु, जिसने पूरे शरीर पर भस्म मला था, देखा। बादशाह साधु के सामने गया और उसके पैरों के नीचे बैठ गया। काफी समय के बाद साधु ने आँखें खोलीं और बादशाह से कहने लगा, "जिसकी खोज तुम कर रहे हो, वह तुम्हारे भाग्य में नहीं है।" बादशाह की आँखों से अश्रुधाराएँ फूटीं। वह साधु के पैरों पर गिर गया, कब्रों की खाक चेहरे पर मली। रात-भर साधु से विनती करता रहा। बादशाह का यह हाल देखकर साधु को दया आ गई। पौ फटने को थी। साधु ने एक सेब बादशाह को दिया और कहा कि "जा इसे अपनी बेगम को सूर्योदय से पहले खाने को दे। मैं भगवान से प्रार्थना करूँगा और तुम्हारी साध पूरी होगी।" यह कहकर साधु अन्तर्धान हो गए।

बादशाह हैरान था कि साधु कहाँ चले गए। इधर-उधर ढूँढ़ा पर कहीं न मिला। अन्त में बादशाह महल में पहुँचा। सेब मलिका को खाने को दिया। खुदा को मंजूर था। नौ महीने बीत जाने पर बेगम ने एक सुन्दर बेटा को जन्म दिया। पूरे देश में खुशियाँ मनाई गईं। खजानों के ताले खोल दिए गए। गरीबों और अभावग्रस्तों के आँचल मुहरों और हीरों से भर दिए गए।

खुशियाँ मनाने के पश्चात् बादशाह ने ज्योतिषियों को दावत पर बुलाया। उन्होंने राजकुमार का नाम दिलाराम रखा। बादशाह ने उनकी जेबें रत्नों और हीरों से भर दीं। समय चक्र घूमता गया और राजकुमार तोतली बोली बोलने लगा। बादशाह और बेगम दिलाराम को देख-देखकर फूलकर कुप्पा होते और माँ बेटे को गोद में

भर-भर अंग लगाती चूमती और खिलाती-पिलाती। दासियाँ कन्धों पर बिठा घुमातीं व शैयाओं पर नर्म गुदगुदे बिस्तर पर सुलातीं।

एक दिन बेगम टहलने के लिए बाग में चली गई। दिलाराम उसकी गोद में था। आगे-पीछे दासियाँ थीं। बेगम एक पेड़ के नीचे हरी मखमल सरीखी दूब पर बैठ गई। फूलों की एक झाड़ी से साँप निकला और बेगम को काट लिया। तड़प-तड़प कर बेगम वहीं पर ढेर हो गई। यह खबर जब बादशाह तक पहुँची उसने गरेबान चाक कर दिया। मन्त्रियों और दरबारियों ने सीने पीटे। समूचे देश में अँधेरा छा गया। हर आँख नम हुई। हर ओर रोने-सिसकने की आवाज़ आई। हँसता-खेलता शहर मातम सराय बन गया। मातम करते चालीस दिन बीत गए। चहलम की रस्म के बाद बादशाह दरबार गए पर अपनी पत्नी का वियोग उनके होंठों पर उसाँसें बन कर रहा। कहावत है, समय गुजरने के साथ हर घाव भर जाता है। बादशाह का दुःख भी तनिक कम हुआ और देश के प्रबन्ध और समस्याओं की ओर अधिक ध्यान देने लगा।

दिलाराम की खातिर वह दूसरी शादी नहीं करेगा। लेकिन बादशाह का यह निर्णय अधिक समय तक कायम नहीं रहा। दिलाराम के लड़कपन में पैर रखने तक बादशाह ने वजीरों के कहने पर एक सुन्दर परी जैसी स्त्री के साथ विवाह कर लिया। बादशाह इस स्त्री के प्रेमपाश में जकड़ गया और पिछली सारी बातें एकदम भूल गया। कुछ समय बाद इस दूसरी बेगम ने भी एक सुन्दर लड़का को जन्म दिया। अब उसका सारा ध्यान अपने बच्चे की ओर ही लगा रहा। दिलाराम का होना उसे अखरने लगा क्योंकि वह उसके बच्चे के तख्त का शरीक जो था। बेगम अहोरात्र दिलाराम को मारने की युक्तियाँ सोचने लगी। उसने बादशाह के दिल में दिलाराम के प्रति घृणा उत्पन्न की। चौबीसों घंटे वह दिलाराम की चुगली कर बादशाह के कान भरती रहती। दिलाराम यह सब देखता और अविरल अश्रुधाराएँ बहाता। पिता को विमाता के अत्याचारों के बारे में कहता पर उसके कान पहले ही भरे गए थे और दिलाराम के प्रति नफ़रत पैदा की गई थी।

एक दिन बादशाह दरबार में था। एक बुढ़िया फरियाद लेकर बादशाह के पास आई। वह रोती और सिर पीटती थी। बादशाह ने उसे कहा कि "तुम पर किसने अत्याचार किया है ? जल्दी कहो। अत्याचारी को मैं कठोर दण्ड दूँगा।" बुढ़िया ने कहा, "बादशाह! मैं न्याय चाहती हूँ। मेरी इकलौती बेटी को वह ले भागा।"

"किस दुष्ट ने तुम्हारी बेटी को भगाया ? जल्दी बताओ।"

"बादशाह! मैं हकला जाती हूँ कि मैं क्या कहूँ।"

"कोई डर मन में न रख, निर्भय होकर बोल।"

"सरकार! राजकुमार ने भगाई है।"

बादशाह ने दिलाराम को बुलावा भेजा लेकिन वह शिकार खेलने गया था। लड़की की खोज करवाई गई और वह दिलाराम के कमरे से बरामद हुई! उसे वहाँ पर रस्सियों से बाँधकर रखा गया था। लड़की को बुढ़िया को सौंपा गया। बादशाह ने घोषणा करवाई कि कल राजकुमार को दण्ड देने का निर्णय किया जाएगा। शाम को राजकुमार लौटा, बुढ़िया की कहानी सुनी और हैरान हो गया। उसने विचार किया और शीघ्र ही उसकी समझ में आया कि क्या माजरा है। उसे बहुत अफसोस हुआ। आँखों से नदियाँ बहने लगीं। रोते-रोते ही उसे नींद आ गई। आधी रात के समय उसने अपनी माँ को सिरहानी की ओर बैठी अपना माथा सहलाते देखा। वह भी जार-जार रो रही थी। दिलाराम ने ज्यों ही माँ को देखा वह रो पड़ा। उसने माँ का हाथ पकड़ना चाहा। उसकी नींद टूट गई। उसने देखा कि कोई उसके हाथ-पैर बाँध रहा है। उसने चिल्लाना चाहा, पर उसका मुँह बन्द कर दिया गया। उसकी आँखों पर पट्टी बाँधी गई तथा एक बोरे में भरकर उसे एक पुल पर ले जाया गया। वहाँ उसे बीच धारा में फेंक दिया गया। नदी में एक मछुवारे ने जाल फेंका था। उसने बोरी देखी, पास गया और उसे नदी से निकाला।

दिलाराम ने जब आँखें खोलीं तो उसने अपने आपको एक झोंपड़ी में पाया। उसने पानी माँगा। एक बुढ़िया उठ खड़ी हुई और उसे पानी का एक प्याला दिया। दिलाराम ने बुढ़िया से मालूम किया कि यह कौन-सा स्थान है ? मैं यहाँ कैसे पहुँचा ? इसी समय झोंपड़ी में मछुवारा प्रविष्ट हुआ। उसने जब दिलाराम को बातें करते सुना तो उसी समय सिर से टोपी उतार दी और खुदा का शुक्र अदा करने लगा। फिर मछवारिन ने दिलाराम को सब कुछ सुनाया कि बोरी को नदी से कैसे निकाला गया और हम शहर छोड़कर कैसे भाग गए। सात दिन और सात रात दिलाराम मूर्च्छित रहा। अब उन्होंने इसी जंगल में रहने का फैसला किया और मेहनत-मजदूरी करके दिन गुजारने का फैसला किया। उन्होंने लकड़ियाँ बेचने का काम आरम्भ कर दिया। मछेरे और मछेरिन जंगल से लकड़ियों का गट्ठा लाते और दिलाराम उसे शहर ले जाकर बेच आता। यह जंगली पथ बादशाह के महल से गुजरते हुए शहर पहुँचता।

एक दिन प्रातः बादशाह की बेटी सैर के लिए बाग में निकली थी। लकड़ी बेचने वाले पर उसकी नज़र पड़ी। पहली ही नज़र में वह लकड़ी बेचने वाले के प्रति आकर्षित हुई। उसे लगा जैसे साक्षात् कामदेव रास्ते पर चल रहा है। वह उसे फटे-पुराने कपड़ों में भी सूर्य-सा दीप्तिवान लगा। वह अपने दिल की तेज धड़कनों पर हैरान रह गई क्योंकि वह एक मज़दूर था और वह एक शाहज़ादी! जितना-जितना उसने अपने दिल को समझाने की कोशिश की, उतनी ही उसकी धड़कनों में इजाफा होता गया। बात यहाँ तक पहुँची कि जब तक राजकुमारी इस लक्कड़-

मजदूर को न देखती उसे चैन न आता। कुछ काल के पश्चात् दिलाराम को भी लगा कि राजकुमारी की बड़ी-बड़ी आँखें उसे एकटक देखती रहती हैं, पर साथ ही उसे अपने भाग्य का खेल भी याद आया।

धारासार वर्षा हो रही थी। दिलाराम लकड़ियों का गट्ठा पीठ पर उठाये आ गया। राजकुमारी ने अपनी दासी से कहला भेजा कि आज लकड़ियों का गट्ठा हमें दे दो क्योंकि बहुत बारिश हो रही है। हम तुम्हें इस गट्ठे की कीमत दे देंगे। दिलाराम को इस मूसलाधार बारिश में बीच रास्ते में ही गाहक मिलना अच्छा लगा। वह राजकुमारी के पास पैसे लेने गया। जब दोनों की आँखें चार हुईं तो दोनों ने अपनी-अपनी सुध खो दी। दोनों एक-दूसरे की ओर खिंचते गए। दोनों के हृदयों में प्रेम की अग्नि धधकने लगी। राजकुमारी उसके साथ तनिक बतियाई। उसे अपने साथ खिलाया-पिलाया और बाद में उसे एक हीरा देकर विदा किया। इनकी ये चोरी-छिपे मुलाकातें बढ़ने लगीं।

मन्त्री को इनके प्रेम-सम्बन्ध का पता चला। वह आगबबूला हो उठा क्योंकि वह राजकुमारी का विवाह अपने बेटे के साथ करना चाहता था। मन्त्री ने राजकुमारी के प्रेम-सम्बन्ध का हाल बादशाह को सुनाया। बादशाह ने जब सुना, उसके पैरों तले की धरती खिसक गई। बादशाह और वजीर ने दोनों के पीछे अपने जासूस लगा दिए। एक दिन प्रेमी-प्रेमिका पुष्प-वाटिका में चश्मे के किनारे प्यार-भरी बातों में मस्त थे। इसी बीच वजीर और बादशाह आ गए। बादशाह अपनी लड़की को देखकर बहुत क्रोधित हुआ। दिलाराम को पकड़कर कैद किया गया और फाँसी की सज़ा सुनाई गई। बादशाह ने तलवार म्यान से निकाली और बेटी की गर्दन पर वार करने लगा। पर वजीर ने बादशाह को ऐसा करने से रोका। अन्त में जब बादशाह का क्रोध शान्त हुआ तो उसने प्यारी बिटिया को समझाना शुरू किया, "बेटी क्या यह अच्छी बात है कि एक भिखमंगा शाही तख्त का हकदार बने। यह कितनी बेइज़्ज़ती है एक बादशाह के लिए।" राजकुमारी ने रोते-रोते पिता को दिलाराम का सारा हाल सुनाया और यह भी कहा कि मैं उसके बिना जीवित नहीं रह सकूँगी। बादशाह ने विश्वस्त सूत्रों से दिलाराम का सारा हाल मालूम करवाया और जो कुछ बेटी ने कहा था वह सारा सच निकला। बादशाह बहुत खुश हुआ और अपनी भूल पर पछताया। बादशाह ने अपनी इकलौती बेटी की शादी दिलाराम से कराई। कुछ काल के उपरान्त बादशाह मर गया और दिलाराम इस राज्य का बादशाह बन गया। उसने मछेरे और उसकी पत्नी को महल में अपने पास बुलवाया।

एक दिन बादशाह दरबार लगाए हुए था। द्वारपाल एक बूढ़े को हथकड़ियों में जकड़ लाया। दिलाराम ने जब इस बूढ़े को देखा, उसे ज़मीन-आसमान घूमते हुए आभासित हुए। यह बूढ़ा उसका पिता था जो अब कुबड़ा हो गया था। इसकी दाढ़ी

सफेद, चेहरा और माथा झुर्रियों से भरा और वस्त्र मैले-कुचैले थे। दिलाराम ने द्वारपाल से इस बूढ़े के अपराध के बारे में पूछा। द्वारपाल ने उत्तर दिया कि इसने कहीं किसी शाही खज़ाने को लूटा है। दिलाराम ने द्वारपाल को बूढ़े की हथकड़ियाँ खोलने की आज्ञा दी और कहा कि इसे कुछ खाने को दे दो ताकि यह दम सँभाल ले। इसके पश्चात् इसका बयान ले लो। जब द्वारपाल बूढ़े को वापस लाया था, दरबार समाप्त होने को था। बादशाह ने हुक्म दिया कि इस क़ैदी को महल में भिजवा दो। मंत्री और दरबारी यह सुन कर चकित हो गए। इस कैदी को महल में पहुँचाया गया। यहाँ बादशाह ने कैदी का हाल पूछा। कैदी की आँखों से अश्रुधारा बह चली और कहा, ''महामहिम, मैं भी एक शहर का बादशाह था पर भाग्य ने मुझे इस दशा को पहुँचाया!''

''कैसे ?'' दिलाराम ने पूछा।

''महामहिम, मेरी पत्नी बहुत भली और गुणवती महिला थी, वह मर गई। उससे मेरा एक बच्चा था जो मुझे प्राणों से भी प्यारा था। मन्त्रियों और दरबारियों ने मुझे मजबूर किया कि मैं दूसरी शादी करूँ। मैंने दूसरी शादी की। मेरी इस पत्नी ने भी एक बच्चा जना। इसने मेरे जिगर के टुकड़े, पहले बच्चे को, तंग करना शुरू किया और मेरे दिल में भी उस बच्चे के प्रति घृणा पैदा की। एक दिन मेरे इस बच्चे पर उसने झूठा आरोप लगाया। दूसरे दिन ढिंढोरा पिटवाया कि राजकुमार भाग गया है, परन्तु बाद में पता चला कि उसने उसे जिन्दा दरिया में डुबवा दिया है। यह सुनकर मेरे दिल के टुकड़े हुए और मुझे इस पत्नी से नफ़रत हुई। मैंने अपने मन में निर्णय लिया कि इसे भी मैं किसी ऐसे ही बहाने से मरवा दूँगा। मेरा दुर्भाग्य, मैंने अपने इस निर्णय से एक मन्त्री को अवगत कराया। वह मेरी दूसरी पत्नी से मिला हुआ था और उसने मेरी योजना के बारे में मेरी इस पत्नी को सूचित किया। एक रात को मुझे कैद किया गया और वह मन्त्री तख्त पर बैठ गया और मुझे फाँसी देने की आज्ञा दी गई। एक दिन मूसलाधार वर्षा हो रही थी। द्वारपाल नाच-गाना सुनने में मस्त थे। मेरा एक वफ़ादार नौकर मेरे बन्धन खोल गया। मैं तुरन्त जेल से निकला और भागते-भागते यहाँ पहुँच गया। मैं दो दिन से भूखा था और मेरे पास अब केवल ये सोने की मोहरें हैं। इनको मैंने बेचना चाहा था और मैं दुबारा कैद किया गया।'' यह कहकर कैदी ने लम्बी उसाँस भरी और किसी सोच में पड़ गया। कुछ समय बाद उसने बादशाह की ओर देखा, वह आठ-आठ आँसू रो रहा था। कैदी दिलाराम की दशा देखकर बहुत चकित हुआ। कैदी ने बादशाह से पूछा, ''महामहिम! आप चिन्तित क्यों हो गए।'' दिलाराम खड़ा हो गया और पिता को बाहुओं में कस लिया तथा रोते-रोते कहा, ''मैं आपका बेटा दिलाराम हूँ।'' यह सुनकर कैदी ने दिलाराम को आलिंगन में कस लिया और मूर्च्छित हो गया।

जब दिलाराम का पिता होश में आया तो दिलाराम ने उसे अपनी सारी दास्तान सुनाई : उसे बोरे में भरकर कैसे दरिया में फेंका गया, मछेरे ने उसे दरिया से कैसे निकाला और इसके बाद वे क्या करते रहे। उसकी शादी राजकुमारी के साथ कैसे हुई और इसके बाद वह बादशाह कैसे बना।

कुछ समय गुजर जाने पर दिलाराम ने भारी लश्कर साथ लेकर मन्त्री पर आक्रमण किया। जनता भी मन्त्री के अत्याचारों से तंग आ चुकी थी और उसे हटाने की ताक में ही थी। जब दिलाराम ने हमला किया, जनता को मौका मिला और उन्होंने दिलाराम की सहायता की। परिणामस्वरूप मन्त्री हार गया। मन्त्री और बादशाह की नई पत्नी कैद की गई और बादशाह फिर से तख्त पर बैठा। इसी रात दिलाराम ने एक स्वप्न देखा, जिसमें उसने अपनी माँ को अपने सिरहाने बैठी पाया। वह दिलाराम का सिर सहला रही थी और आशीर्वाद दे रही थी। दिलाराम मस्त नींद सो गया।

डाइन

कहा जाता है कि एक बादशाह की बेगम की मृत्यु हो गई। वह दूसरी पत्नी की तलाश में था। एक दिन वह शिकार खेलने गया था और एक वन में चल रहा था। वहाँ उसने एक बहुत सुन्दर परी जैसी नवयौवना को चलते पाया। इस सलोनी नवयुवती ने हीरे-जवाहरों से जड़े अनेक आभूषण पहने थे। बादशाह का दिल उसकी ओर आकृष्ट हुआ और मन-ही-मन निर्णय लिया कि मैं इसी परी-सूरत नवयुवती से शादी करूँगा और किसी से नहीं। बादशाह इस रूपसी के पास गया। औपचारिकता निभाई, हाल पूछा। युवती ने कहा, "मेरा पति शादी से सात दिन के अन्दर ही अल्लाह का प्यारा हो गया और अब मैं मैके जा रही हूँ।"

बादशाह ने अन्दर-ही-अन्दर अल्लाह का शुक्र किया और इस चन्द्रमुखी को बिना किसी लाग-लपेट के अपने मन की बात सुना दी। रूपसी तैयार हो गई। दोनों का विवाह सम्पन्न हो गया।

बादशाह दिन-प्रतिदिन सूख कर काँटा होने लगा। देश के जाने-माने पीरों-फकीरों से मंत्र पढ़वाया गया तथा बड़े-बड़े हकीमों से इलाज कराया गया। कोई भी उसकी बीमारी को ठीक न कर सका। इलाज की असफलता से बादशाह काफी परेशान हो गया। मन्त्री और दरबारी भी बादशाह का इलाज करवाते थक गए। आखिर में ढिंढोरा पिटवाया गया कि जो बादशाह को ठीक कर देगा उसे आधी बदशाही दे दी जाएगी।

इस शहर में एक वृद्धा रहती थी। इसने भी बादशाह की बीमारी के बारे में सुना। यह लाठी टेकती हुई बादशाह के महल में आ पहुँची। वहाँ हर वस्तु और व्यक्ति का अपनी अनुभवी नज़रों से निरीक्षण करने के पश्चात् उसने घोषणा की कि मैं बादशाह को ठीक कर दूँगी। सभी लोग बहुत खुश हुए और प्रतीक्षा करने लगे कि बुढ़िया बादशाह को कैसे ठीक करेगी। बुढ़िया बादशाह को एक एकान्त स्थान पर ले गई और कहा, "आज आप जो भी सब्जियाँ या व्यंजन पकवाएँगे उनमें काफी नमक डलवाना और भोजन करते समय यही सब्जियाँ एवं व्यंजन अपनी पत्नी को खिलवाना तथा महल में एक बूँद पानी भी नहीं रखना, रात-भर जागते रहना और सुबह मुझे सारा हाल बता देना, जो आपने रात को देखा हो।"

बादशाह ने बुढ़िया की बातें मान लीं। रात-भर जागते रहने के लिए उसने अपनी

टाँग पर छोटे-छोटे घाव कर दिए और इन पर नमक तथा पिसी मिर्ची छिड़की। पति-पत्नी बिस्तर में घुसे। बादशाह को नींद कहाँ आती! वह आँखें बन्द कर सोने का नाटक कर रहा था और पत्नी की हर गतिविधि पर नज़र रख रहा था और टाँग के घावों में दर्द के कारण टाँग सहला रहा था। उसकी पत्नी मारे प्यास के हलकान होती जा रही थी। आधी रात के करीब उसने अपनी गर्दन ओढ़ने से बाहर निकाली। गर्दन लम्बी होती गई। लगभग आधे घंटे में गर्दन खिड़की से बाहर हो गई और लम्बी और लम्बी होती गई। उसके बाद लगभग एक पहर बीता और उसका शरीर ठंडा हो गया। फिर गर्दन छोटी होते-होते अपने आकार तक आ गई और ओढ़ने में घुस गई। तनिक विश्राम लेने के बाद बेगम ने बादशाह के सीने को दिल की जगह चाटना शुरू किया।

सुबह बादशाह ने यह सारा हाल बुढ़िया को सुनाया। बुढ़िया बोली, "बादशाह सलामत, यह एक डाइन है। इसका भोजन आपका दिल है जिसे यह धीरे-धीरे चाट कर खत्म कर देगी।"

बादशाह हैरान रह गया। क्षण-भर मौन के बाद बुढ़िया से पूछा, "अच्छा अम्मा! इस डाइन को खत्म करने की क्या युक्ति है ?" बुढ़िया ने युक्ति बता दी। इसके बाद लोहार को एक चार पायों वाला मजबूत सन्दूक बनाने का हुकम दिया गया। यह सन्दूक जब बनकर तैयार हुआ तो एक छोटे कमरे के बराबर था। इस सन्दूक के चारों पाये ज़मीन के अन्दर दबा दिये गए। इसके पश्चात् बादशाह अपनी बेगम को सैर के बहाने बाग में लाया और चहलकदमी करते हुए उस सन्दूक के पास पहुँचा और कहा, "देखो, गर्मियों के लिए मैंने कितना अच्छा सर्दखाना (ठण्डा कमरा) बनवाया है। इसके अन्दर बैठने वाले को गर्मी नहीं लगेगी।" बेगम बहुत प्रसन्न हुई और कहा, "जरा इसका ढक्कन तो खोल दीजिए, मैं भी देखूँ कि यह सर्दखाना अन्दर से कैसा है!" बादशाह ने ढक्कन खोला और बेगम सन्दूक के अन्दर चली गई। बादशाह इसी अवसर की ताक में था। बेगम के अन्दर घुसते ही बादशाह ने ढक्कन बन्द कर दिया!

लकड़ियों की लगभग एक हजार खारियाँ* लाकर इस सन्दूक के इर्द-गिर्द तथा ऊपर रखी गईं और आग लगा दी गई। इतना कुछ करने पर भी डाइन दो दिन तक नहीं मरी। अन्त में जब वह राख हो गई तो सन्दूक खोल दिया गया! इसमें राख का एक ढेर था। राख के छानने पर इसमें से एक सोने की रोटी-सी निकली। यह सोना बुढ़िया ने आधी बादशाही के बदले ले लिया।

बादशाह स्वस्थ हो गया।

---

* खारी : एक कश्मीरी तौल जो लगभग दो मन के बराबर होता है।

पतिघातिन

एक था बादशाह। उसकी इकलौती पुत्री थी। इसके विवाह की बात कई राजकुमारों से चल रही थी, पर बात कहीं पक्की नहीं हो पा रही थी। अन्त में एक नगर के राजा जिसके सात बेटे थे, उसके बड़े बेटे के साथ राजकुमारी की शादी पक्की हो गई। विवाह का दिन नियत हुआ और यह दिन नजदीक आता गया।

दुल्हन स्नान के लिए स्नान-गृह में प्रविष्ट हुई। सभी कपड़े उतारे। इसी बीच यहाँ एक साँप प्रकट हुआ और राजकुमारी के कमर के गिर्द कुण्डली मारकर बैठ गया। राजकुमारी ने शोर मचाना चाहा पर उसके ऐसा करने से पहले ही साँप मानव की तरह बोलने लगा, ''शोर नहीं मचाना, नहीं तो मैं एक ही दंश से तुम्हारे प्राण ले लूँगा और यदि मौन रहकर कपड़े पहन लोगी तथा इस रहस्य के बारे में किसी से कुछ नहीं कहोगी तो मैं तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगाड़ूँगा वरना ज्यों ही मेरे बारे में ज़बान खोलोगी उससे पहले ही मैं तुम्हें अपने दंश से मार दूँगा।'' प्राणों के डर से राजकुमारी ने ब्याह का जोड़ा पहना और इस विषय में बिलकुल मौन रही।

शाम को दूल्हा आया। शाही शान से दावत हुई और दूल्हा दुल्हन को लेकर अपने घर की ओर चल पड़ा। घर पहुँचकर जब दूल्हा-दुल्हन सुहागरात के लिए कमरे में बिस्तर पर लेटे तो साँप ने राजकुमार को डस लिया और वह वहीं पर ढेर हो गया। साँप फिर दुल्हन के कमर के साथ कुण्डली मारकर चिपका रहा। बेचारी दुल्हन रात-भर खून के आँसू रोती रही।

''भोर हुई।'' दूध-माँ ने कमरे का दरवाजा खटखटाया। दुल्हन ने दरवाजा खोला। दूध-माँ ने दुल्हन को रोते हुए और शहज़ादे को मरा हुआ देखा! बात फैली। राजमहल में कोहराम मच गया। दूल्हे को कब्रिस्तान ले जाकर दफनाया गया। विचार हुआ कि दुल्हन का क्या किया जाए! इसी बीच दूसरे शहज़ादे ने दुल्हन के साथ विवाह करने की पेशकश की। कई लोगों ने, यह कहकर कि दुल्हन पतिघातिन हो सकती है, विरोध किया पर शहज़ादे के आगे उनकी एक न चली और विवाह हो गया। पति-पत्नी सुहागरात के लिए कमरे में चले गए। सुबह क्या देखते हैं कि यह शहज़ादा भी मृत पड़ा है!

अब इसमें कोई शक न रहा कि दुल्हन कोई बला है। बादशाह ने अपने सभी

मन्त्रियों और शेष बचे पाँचों पुत्रों को बुलाया और कहा, ''आप लोग निर्णय दीजिए कि दुल्हन का क्या किया जाए।'' कइयों ने फाँसी देने को कहा, कइयों ने गर्दन काटने को और कइयों ने दुल्हन को उबलते तेल के कड़ाह में डालने को कहा। जब सभी अपना-अपना मत दे चुके, तीसरे शहज़ादे ने कहा, ''इसे हरगिज मारना नहीं है। मैं इसके साथ शादी करूँगा और पता लगाऊँगा कि यह क्या बला है।'' सभी उपस्थित व्यक्तियों ने शहज़ादे को समझाया कि ऐसा करना बिलकुल उचित नहीं है क्योंकि यह मौत के साथ मुकाबला करना है। पर शहज़ादा कुछ न माना और कहने लगा, ''जब वैसा ही होगा तो भी क्या हुआ ? जहाँ मेरे पहलवान से दो भाई, वहाँ मैं भी उन पर फिदा!'' अन्त में शहज़ादे के ज़िद की जीत हुई। सुबह कमरे में उसका भी शव पाया गया।

कहते हैं कि इसके बाद शेष शहज़ादे इस औरत की असलियत जानने के लिए अड़ गए। उन्होंने भी क्रमशः शादियाँ कीं और मरते गए। शहर में बात फैल गई कि बादशाह के यहाँ रोज एक-एक जनाज़ा निकलता है। प्रजा बहुत उदास हो गई।

अन्त में सबसे छोटे शहज़ादे की बारी आ गई। वह चश्मे पर नहाने गया। ज्यों ही स्नान-गृह में घुसा वहाँ इसने एक काला-कलूटा साँप देखा। इसने तलवार निकाली और साँप को मारने को था कि साँप मनुष्यों की तरह कहने लगा, ''मुझे मारने से तुम्हें क्या मिलेगा ? तुम्हें भी आज रात मरना है। अगर मुझे नहीं मारोगे तो मैं भी तुम्हें मौत से बचा लूँगा।''

शहज़ादे ने तलवार म्यान में डाल दी और कहा, ''बोलो, यह क्या माजरा है ?''

''जिस शहज़ादी को तुम लाए हो, उसका कोई कसूर नहीं अपितु उसके कपड़ों के नीचे एक साँप कुण्डली मारे है। वही दूल्हों को दंशित कर मारता है। शहज़ादी को अपने प्राणों का भय है क्योंकि यदि वह साँप का रहस्य किसी को बताएगी तो साँप उसे डस लेगा।'' साँप बोला।

''अच्छा, ठीक है। पर यह तो बताओ कि उस साँप को कैसे मारा जाए।'' शहज़ादे ने मालूम किया।

''तुम एक काम करो, तुम सुहागरात वाले कमरे में दुल्हन से पहले घुस जाना। जब दुल्हन कमरे में घुसकर दरवाजा बन्द कर लेगी तो तुम उसे दरवाजे से ही सारे कपड़े उतारने को कहना। इसके बाद तुम अपनी सूझ से काम ले लेना।'' साँप ने उत्तर दिया।

शहज़ादा घर लौटा। घर में खुशियाँ मनाने का नाम भी न था। ब्याह-शादी के गीतों की आवाज़ भी कहीं सुनाई न देती थी। सब जानते थे कि आज रात शहज़ादा मरने वाला है। जहाँ छह शहज़ादे बच नहीं पाए वहाँ यह कहाँ बच पाएगा। खैर,

रात हुई और शहज़ादा कमरे में घुसा। कुछ समय के बाद दुल्हिन भी कमरे में घुसने लगी। जब वह किवाड़ बन्द कर ही रही थी तो शहज़ादे ने उसे वहीं सारे कपड़े उतारने को कहा। वह तनिक शर्माई, पर पति की आज्ञा थी उसने सारे कपड़े वहीं उतार दिए। साँप भी धीरे से उसके जिस्म को छोड़कर नीचे उतरा और उतरे कपड़ों में छिप गया। शहज़ादे ने शमशीर उठाई और साँप के टुकड़े-टुकड़े कर दिए। केवल साँप का सिर साबुत रहा। यह सिर आदमियों की तरह शहज़ादे से कहने लगा, "मुझे मालूम है कि तुमसे यह किसने कहा है। अब मैं तो मर गया पर उन सबको बिलकुल खत्म करवा दूँगा।" शहज़ादा तलवार हाथ में लिये हक्का-बक्का-सा खड़ा रह गया और साँप की बातें सुनता रहा। साँप बोला, "अमुक बुइन (चिनार) के नीचे एक खड्ड है, जिसमें बिच्छू बूटी के पौधे उगे हैं। वहाँ अनेक साँप हैं। यदि उन सभी साँपों को मारोगे, वहीं नीचे तुम्हें सात खजाने दबे मिलेंगे। इन्हें प्राप्त कर तुम मजे से जिन्दगी गुजार सकोगे।" इसके बाद साँप मर गया। दम्पती की रात आराम से गुजरी।

महल में रात-भर सभी लोग जगे थे कि सुबह बादशाह के छोटे बेटे का जिनाज़ा (अर्थी) निकालना होगा। सूर्योदय हुआ और शहज़ादा कमरे से स्वस्थ-सानन्द निकला। पूरे शहर में खुशियाँ मनाई गईं। शहज़ादा बादशाह के पास गया और उसे पूरा किस्सा सुनाया कि वास्तव में क्या हो रहा था। बादशाह ने खुदा का लाख-लाख शुक्र किया कि तख्त का वारिस जिन्दा रहा।

इसके पश्चात् शहज़ादा उस बुइन के नीचे गया। वहाँ सभी सर्पों का सफाया किया। खजाने निकाले और मजे से जीवन गुजारने लगा।

नहले पर दहला

कहा जाता है कि पुराने जमाने में दूर एक एकान्त स्थान में एक व्यक्ति रहता था। इस जगह उसने अपनी आवश्यकता के अनुसार जमीन का एक टुकड़ा आबाद किया था और अच्छी तरह से इस पर मेहनत करके, अपने दिन गुजारता था। समय गुजरने पर इसके बच्चे वयस्क हो गए। उनकी शादियाँ हुईं और इस तरह से उस व्यक्ति का परिवार बढ़ता गया। अब उस जमीन के टुकड़े की उपज उसके परिवार के लिए कम पड़ गई। उस जमाने में जमीन भगवान की सम्पत्ति मानी जाती थी और हर कोई अपनी आवश्यकता के अनुसार इस पर कब्जा कर सकता था। उस व्यक्ति ने अपनी जमीन के टुकड़े के इर्द-गिर्द देखा और उसे इस टुकड़े के साथ लगी जमीन को अपने टुकड़े के साथ मिलाकर आबाद करने का विचार आया। अपने बेटों को बुलाकर उसने साथ लगी ज़मीन पर काम करना आरम्भ किया। बहुत समय से बंजर होने के कारण इसे खोदना व साफ करना कठिन काम था परन्तु जीवट और दृढ़ निश्चय इस्पात को भी गला सकता है। धीरे-धीरे यह पर्ती भी पहले टुकड़े की तरह नर्म हो गई। एक जगह की कँटीली झाड़ियों के कारण किसान कुछ परेशान हो गया पर हिम्मत न हारी। उसके दोनों पुत्रों ने इस कँटीली झाड़ियों वाली भूमि को छोड़ने के लिए कहा क्योंकि सख्त जमीन ने उनकी भुजाओं की शक्ति को चूस लिया था और उन्होंने हिम्मत हार-सी ली थी।

पिता ने बेटों को हुक्म दिया कि ''कँटीली झाड़ियाँ किसी-न-किसी तरह काट कर गिरानी हैं।'' ''कोई मजबूरी नहीं।'' बेटों ने जवाब दिया, ''दूसरी ओर से जमीन खोदकर अपनी जमीन के साथ मिला लेंगे।'' परन्तु अनुभवी किसान न जाने क्या सोच कर अपने कथन पर डटा रहा।

बेटों ने बार-बार अपनी राय को ही दुहराया और पिता-पुत्रों में तनिक कहा-सुनी हो गई। पिता क्रोधित हुआ और वहाँ से दोनों पुत्रों को जाने के लिए कहा और यह भी सुनाया कि तुम लोग कमहिम्मत और कायर हो। यहाँ से जाओ और देखो, कल तक इन झाड़ियों का कहीं नाम-निशान नहीं होगा। बेटे घर की ओर चले और बूढ़े ने तेज फावड़े से काम करना शुरू किया। कम समय में ही उसने काफी जमीन को साफ कर दिया और आगे-आगे बढ़ता गया। इसी बीच उसने झाड़ों के एक

बड़े समूह पर फावड़े से प्रहार किया और अचानक उस जगह कोई व्यक्ति खड़ा हो गया। किसान ने जब एकाएक अपने सामने एक व्यक्ति को प्रकट होते हुए देखा तो उसकी टाँगें काँपने और शरीर थरथराने लगा, पर जीवट का होने के कारण अपने पर एकदम काबू पा लिया, चेहरे को क्रोधीला बनाकर उस आदमी से बोला, "अरे! तुम कौन हो, और तुम्हें क्या चाहिए ?"

"मैं जिन हूँ।"

"जिन !" किसान ने उसका कहा दुहराया।

"हाँ, हाँ, मैं जिन हूँ। मैं यहीं अपने परिवार के साथ रहता हूँ। कँटीली झाड़ियों में। मेहरबानी करके इन झाड़ियों को न काटिए क्योंकि मेरा परिवार बेघर हो जाएगा।"

"अरे नहीं! क्या कहते हो तुम! क्या तुम्हारे परिवार के लिए मैं अपने परिवार की बलि चढ़ा दूँ ? मैं कहाँ जाऊँ ? मुझे इस जमीन में फसल बोना है।"

"फसल!" जिन ने किसान का कहा दोहराया।

"हाँ, हाँ, फसल।"

"तुम कौन-सी फसल बोओगे इस जमीन में ?" जिन ने किसान से पूछा।

"फिलहाल मक्का बोऊँगा, आगे फिर देखेंगे।"

यह सुनकर जिन थोड़ा उदास हुआ और तनिक सोचने के बाद किसान से कहने लगा, "अरे किसान! मैं तुम्हें एक बात बताता हूँ, कृपया इसे स्वीकारो।"

"तुम स्वार्थ की बात कहोगे। वह मैं कभी मानूँगा नहीं।" किसान ने रोबीले लहजे में जवाब दिया।

"नहीं जी नहीं, स्वार्थ नहीं कहूँगा।"

"तो कहो क्या कहना है।"

"मैं तुम्हें एक बात बताता हूँ— इस ज़मीन में बीज बोने के बाद तुम्हें कितनी फसल प्राप्त होगी ?"

"जितनी प्रभु की इच्छा होगी। मुझे क्या पता!"

"तनिक अन्दाजा लगाइए कि अच्छी फसल होने पर कितनी उपज मिलेगी।"

"यदि ईश्वर चाहे तो मक्का की एक खारी* से कम नहीं।"

"एक खारी क्या!"

"हाँ, हाँ, एक खारी।"

"अच्छा तो एक काम कीजिए— मेरे परिवार पर तरस खाइए। मैं प्रतिवर्ष शरद् काल में आपको एक खारी मक्का पहुँचा दिया करूँगा। इन कँटीली झाड़ियों को कभी भी हाथ न लगाना।"

---

* 'खारी' कश्मीरी तौल लगभग दो मन।

किसान और जिन ने आपस में फैसला किया और किसान अपने घर की ओर चल पड़ा। इसके पश्चात् जिन हर साल शरद् काल में मक्का की एक खारी किसान के घर पहुँचाता रहा।

एक दिन गाँव के इस जिन के यहाँ शहर का एक जिन अतिथि बन कर आया। गाँव का जिन अपने वायदे के अनुसार मक्का ठीक-ठाक कर रहा था। अपने मित्र के साथ बातचीत करने के बाद शहर का जिन कहने लगा, ''यह मक्का तुमने किसलिए जमा कर रखा है ?'' गाँव के जिन ने उसे सारा किस्सा सुनाया और शहर का जिन यह सुनकर हैरान रह गया। बाद में गाँव के जिन को लताड़ता हुआ सा कहने लगा, ''कुछ नहीं, सारी जिन जाति पर तुमने धब्बा लगाया। आज तक मैंने अपनी उम्र में यह नहीं सुना है कि किसी जिन ने इनसान को उत्कोच दिया है। आज मैं तुम्हारा किस्सा सुनकर बहुत हैरान हो गया !''

गाँव के जिन ने अपनी ओर से विषय-परिवर्तन करने का प्रयत्न किया था और शहर के जिन से कहा था कि ''मैंने वायदा किया है, मैं अपने वचन से मुकर नहीं जाऊँगा।'' परन्तु शहर के जिन ने उसकी एक भी न सुनी और कहा, ''तुम मुझे उसका अता-पता बताओ। मैं अभी तुम्हें मुक्ति दिला दूँगा। उम्र-भर के लिए किसान को मक्का देने से बचा लूँगा।''

बहुत वाद-विवाद होने के बाद गाँव का जिन शहर के जिन को किसान का पता देने पर मजबूर हो गया। शहर का जिन बड़े रोब से किसान के घर गया।

किसान उस समय थक कर चूर होकर घर आया था। ज्यों ही वह कमरे में घुसा वहाँ बिल्ली घी चाट रही थी। उसने काफी घी चाट लिया था और काफी फर्श पर बिखेर दिया था। बिल्ली द्वारा नुकसान किए जाने पर किसान को बहुत क्रोध आ गया। और क्रोध में अपने आप से कहा, 'इस बिल्ली को मैं जिन्दा नहीं छोड़ूँगा।' कमरे का दरवाजा बन्द कर दिया और हाथ में एक मोटा डंडा लिया और बिल्ली पर आघात किया। बिल्ली ने उछाल मारी और कमरे के दूसरे कोने में गई। किसान का गुस्सा दुगुना हो गया और बिल्ली के पीछे पड़ गया। किसान और बिल्ली में धमाचौकड़ी छिड़ी थी कि शहर के जिन ने द्वार को धक्का दिया। द्वार के किवाड़ खुल गए और बिल्ली एक ही उछाल में बाहर निकली। किसान ने अब द्वार की ओर रुख किया और बिल्ली पर जोरदार आक्रमण किया। वहाँ दरवाजे पर एक व्यक्ति को खड़ा देखा। शहर के जिन ने जब क्रोधित किसान को देखा तो वह सहम गया उसकी टाँगें थरथराने-सी लगीं।

किसान ने जिन से क्रोध-भरी आवाज़ में पूछा, ''तुम्हें क्या चाहिए ?''

शहर का जिन हकला गया, ''कु··छ··न··हीं··जी।''

''मक्का··मैं··मक्का।''

किसान ने क्रोध से पूछा, ''नहीं लाए ?''

''मक्का साबुत··या··पीस कर।''

''पीस के लाओ, साबुत का क्या करूँ।''

''अच्छा जी, अच्छा। अभी ला रहा हूँ।''

''जल्दी ले आओ। मैं प्रतीक्षा कर रहा हूँ।''

शहर का जिन तुरन्त निकल पड़ा। बाहर आकर उसे विश्वास ही नहीं आ रहा था कि मैं कैसे बच गया। साथ ही यह भी सोच रहा था कि मैं अपने दोस्त को कौन-सा मुँह दिखाऊँगा। अब तक साबुत ले जाता था, अब पीस कर ले जाना पड़ेगा।

मछुआ और तोता

कहने वाला कहता है कि एक मछुआ था जो बहुत ही गरीब था। इतना गरीब कि उसे कभी भी पूरा न पड़ता था। मछुआ और उसकी पत्नी, दोनों दिन-भर मछलियाँ पकड़ते तथा शाम होने पर इन्हें बेचने के लिए ले जाते। जो धन मिलता वह इनकी आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए अपर्याप्त होता। इस दम्पती को ऐसा समय भी देखना पड़ा जब इनके जाल में एक भी मछली न फँसी। मछुआ की सारी कोशिशें बेकार गईं। बहुत कुछ सोचा सिर पटका पर सब व्यर्थ। इन्हें भोजन के लाले पड़े। एक दिन मछुआ एक अन्य नदी में मछलियाँ पकड़ने गया। वहाँ एक बहुत बड़ी मछली इसके जाल में फँस गई। जाल समेटने और मछली को जाल से निकालने पर मछुआरिन ने कहा कि इस मछली को बेचने के लिए ले जाएँगे पर मछुआ ने विरोध किया और कहा, नहीं इसे हम स्वयं पकाकर खाएँगे, कल जो मछलियाँ हमारे जाल में फँस जाएँगी उन्हें बेचेंगे। मछुआ की पत्नी ने मछली को पकाने के लिए काटना शुरू किया। मछली का पेट चीरने पर उसके पेट में से मछली के ही आकार का एक पत्थर निकला। उसे उठा कर मछुआ ने नदी में फेंक दिया। पत्थर ज्यों ही नदी में गिरा वहाँ से एक तोता निकल आया। यह देख मछुआ आश्चर्य में पड़ गया। नाव एक ओर ले जाकर मछुआ ने तोता को पकड़ लिया। तोता देखने में बहुत सुन्दर एवं आकर्षक था। मछुआ ने उसे एक पिंजरे में डाला और उसे पालने लगा। यह तोता मनुष्यों की तरह बातें करने लगा। यह देखकर मछुआ को और भी आश्चर्य हुआ। वह सोचने लगा, भला यह क्या रहस्य है ! जब उसे कुछ भी समझ में न आया तो तोता से ही पूछ बैठा, ''बताओ यह क्या माजरा है ? तुम नदी के पानी में से कैसे प्रकट हुए और मनुष्य की तरह बोलने लगे ?'' तोता ने मछुआ को अपना किस्सा सुनाना शुरू कर दिया—

'' मैं एक जौहरी था। हीरे खरीदने और बेचने का कारोबार करता था। एक दिन एक आदमी बोलने वाला तोता बेचने आया। मुझे वह तोता बहुत पसन्द आया और मैंने दस हजार मुहरों में उसे खरीद लिया। उस तोता की मैंने खूब देखभाल की, पाला-पोसा और साध लिया। जब वह तोता खूब परच गया तो मैं उसे पिंजरे के बाहर भी रखने लगा। वह उड़कर इधर-उधर भी जाने लगा पर बाद में वापस

आ जाता। एक दिन वह उड़कर गया तो वापस न लौटा। मैंने सोचा शायद किसी जंगल में भाग गया होगा या फिर शायद उसे कोई बिल्ली खा गई होगी। कई दिन बीत जाने पर वह तोता अचानक लौट आया। मैंने उससे पूछा कि 'तुम इतने दिनों कहाँ रहे ?' वह बोला कि 'क्या बताऊँ! उड़ते-उड़ते मैं एक शहर में जा पहुँचा। इस शहर में मैंने एक अचम्भा देखा। इसी कारण आने में मुझे देर हो गई।'

" 'भला, वह कौनसा अचम्भा था जो तुमने देखा ?' मैंने पूछा। तोता ने कहा, 'वहाँ मुझे एक अन्य तोता मिला। उसने मुझसे कहा कि जब मैं उस शहर में घूम रहा था तो उड़ते-उड़ते राज-महल के पास पहुँच गया। वहाँ देखा कि एक खिड़की पर वहाँ की रानी बैठी थी। यह रानी अत्यन्त रूपवती एवं सुन्दर थी। दिनभर खिड़की पर बैठी रही और शाम होने पर उठी। उठते-उठते कहने लगी, 'हाय ! क्या कोई ऐसा नहीं जो मेरी इस समस्या को सुलझा दे और मैं उसी की हो जाऊँ ?'

उस तोता ने मुझे बताया कि उसने देखा कि उस रानी की हर चीज़ सोने की है। यहाँ तक कि उसके दास-दासियाँ भी सोने के कपड़े पहने रहते हैं। यह रानी वहाँ स्वयं राज करती है, पर भाग्य को कोसती रहती है। हर दिन मैंने उसे खिड़की पर बैठे देखा और शाम को उठते समय, 'हाय, क्या कोई ऐसा नहीं जो मेरी इस उलझन को सुलझा दे, और मैं उसकी हो जाऊँ,' कहते सुना।

तोता ने मछुए से कहा, "जब उस तोता ने यह सब कुछ मुझे कहा तो मेरा मन भी उस रानी को देखने के लिए मचल गया। मैंने कहा, मैं भी देखूँ कि उस रानी की समस्या क्या है ? मैंने तोता से कहा कि वह मुझे उस महल के पास ले चले। तोता अपने साथ मुझे महल के पास ले गया। आगे-आगे तोता और पीछे-पीछे मैं। हम चलते गए, चलते गए और उस महल के निकट पहुँच गए। वहाँ पहुँचने पर मैंने उस तोता से पूछा कि भई, रानी के महल में कैसे प्रवेश करूँ ? वह बोला कि उसे सन्देश भेज दो, कि तुम उसकी समस्या को सुलझा सकते हो। उत्तर में वह जब कुछ कहेगी तो मैं तुम्हें स्वयं बता दूँगा कि क्या करना है! जब मैं रानी के पास गया तो वह पर्दे की ओट से कहने लगी कि यहाँ एक मैदान है। हर आठवें दिन वहाँ एक मकान प्रकट हो जाता है। मकान के प्रकट हो जाने पर आदमियों की एक टोली वहाँ आती है। वे लोग लकड़ियाँ इकट्ठा करते हैं और मकान के बाहर रखते हैं। लकड़ियों का एक बड़ा और आकाश को छूने वाला ढेर जब इकट्ठा हो जाता है तो वे लोग उसमें आग लगा देते हैं। उसके बाद उस मकान में से एक स्त्री को निकालते हैं और उसे आग में डाल देते हैं। वह स्त्री बहुत रोती और चिल्लाती है, पर उन लोगों पर कुछ असर नहीं होता। वह बेचारी जब आग में जल कर राख हो जाती है तो वे आदमी और आग गायब हो जाती है। मैंने इसका रहस्य जानने के लिए कई बार अपने सिपाहियों को भेजा, पर उन आदमियों ने मेरे सिपाहियों को

मार डाला। तब मैंने यह शर्त रखी कि जो इस रहस्य का पता लगाएगा उसी से मैं विवाह करूँगी। वही यहाँ का राजा बनेगा। रानी ने बताया कि आज तक बहुत से लोग आए पर मेरी इस समस्या को कोई सुलझा न सका। वहाँ जो भी जाता है लौट के नहीं आता।''

तोता ने मछुआ से कहा कि ''यह सुनने के बाद मैं उस तोता के पास गया और इस बारे में बात की। उस तोता ने कहा, 'तुम एक काम करो, अमुक पर्वत पर एक मलंग बाबा वास करता है, तुम उसी के पास जाओ। उससे विनती करो, अनुनय-विनय करो, वह जरूर कोई मार्ग सुझाएगा। इसके पश्चात् क्या करना होगा वह मैं बताऊँगा।' ''

तोता ने मछुआ से कहा कि ''मैं उस मलंग बाबा के पास गया। मैंने उसे एक गुफा में अपनी साधना में लीन पाया। मैं उसकी खूब सेवा करने लगा। एक दिन मलंग बाबा ने मुझसे पूछा कि तुम्हें क्या चाहिए। मैंने झट सब बता दिया। मैंने कहा कि मैं यह समस्या सुलझा सकूँ बस मुझे यही चाहिए। उत्तर में उसने मुझे डाँटते हुए कहा, 'चल जा अपने घर! इन बातों में मत उलझ!' मैंने कुछ न माना और अपने हठ पर अड़ा रहा। मैं उनके सामने रोया, गिड़गिड़ाया और फिर उनकी सेवा में लग गया। आखिर एक दिन मलंग बाबा पसीजे— उन्होंने मुझे एक झोला और एक डंडा दिया। बोले, 'अमुक स्थान पर जा वहाँ एक स्रोत है। डंडा हाथ में पकड़ व आँखें मूँद कर उस स्रोत में उतर जाना, वहाँ तुम्हें एक नया ही संसार दिखाई देगा। वहाँ एक राजा है। उसका नाम इन्द्र है। तुम इन्द्र के पास जाना और उसे मेरा झोला मेरी ओर से भेंट में देना। एक बात याद रखना, यह डंडा मुझे वापस लौटाना। इन्द्र को ही तुम सारा किस्सा सुनाना। वही तुम्हारी समस्या सुलझा देगा।' ''

तोता ने मछुआ से कहा कि ''जब मैं राजा इन्द्र के पास गया और उसे सारी बात कह सुनाई तो वह मुझसे कहने लगा कि 'मैं तुझे भस्म कर डालता पर करूँ क्या तुम्हें उस मलंग बाबा ने भेजा है। अब उसी के नाम पर लौट जा।' मैंने कहा कि 'मैं इतनी लम्बी यात्रा करके आया हूँ। अनेक कठिनाइयाँ झेली हैं। अब खाली हाथ वापस कैसे जाऊँ ?' यह कहकर मैंने उससे बहुत अनुनय-विनय की। वह पसीज गया और कहा, 'वह जो तुमने मकान देखा है। वह तिलिस्म से बनता है। वे जो आदमी तुमने देखे वे मेरे देव हैं। वह महिला मेरी पुत्री है। वह एक देव के साथ भाग गई थी क्योंकि वह उस पर मोहित हो गई थी। मैं उसे पकड़ लाया। बहुत समझाया, कहा कि जो कदम तुमने उठाया है उससे बाज़ आ। मेरा नाम बदनाम मत कर। वह कुछ न बोली और मुँह फेर लिया। इसीलिए उसके लिए मैंने यह दण्ड नियत किया है। हर आठवें दिन उसे जलाया जाता है और वह फिर जीवित हो

उठती है।' इतना कहकर इन्द्र ने मुझे पत्थर का एक छोटा-सा टुकड़ा दिया और कहा, 'वह मकान जब प्रकट होगा, उसके साथ यह पत्थर का टुकड़ा छुआ देना, और ऐसा करने से स्वयं मकान से चालीस गज की दूरी पर जा गिरेगा। यदि मेरे कहे पर विश्वास नहीं तो स्वयं देख ले कि क्या होता है।' ''

तोता ने मछुए से कहा कि ''मैंने वह पत्थर का टुकड़ा ले लिया और मलंग बाबा के पास जाकर उसका डंडा लौटाया। फिर उस मकान के पास गया, पत्थर का टुकड़ा उससे छुआया और चालीस गज दूर जा गिरा। मैं वहीं से उस मकान की तरफ देखता रहा। देखते-देखते उस पत्थर के टुकड़े से प्रकाश फूटना आरम्भ हुआ। वह जगमगा उठा और मकान गायब हो गया। मैने देखा एक सुन्दर रमणी एकदेव के साथ बैठी है। यह सब देख मैं रानी के पास गया और उसे सब हाल कह सुनाया। रानी ने मुझसे कहा कि मैं कैसे विश्वास करूँ कि तुम सच कहते हो कि झूठ। मैं उससे क्या कहता भला ? मैं फिर उसी तोता के पास चला गया और उससे सलाह माँगी। उस तोता ने मुझे फिर मलंग बाबा के पास जाने के लिए और उन्हीं से अनुनय-विनय करके सलाह लेने को कहा। मैं फिर मलंग बाबा के पास गया और उनसे बहुत विनय करने लगा। बहुत समय तक मैंने उनकी सेवा की उन्होंने मुझे फिर राजा इन्द्र के पास भेजा और उनसे यह कहने के लिए कहा कि वे अपनी उस बेटी को क्षमा करें। मलंग बाबा ने मुझे फिर वही डंडा दिया और साथ ही अपनी टोपी भी दे दी। टोपी देते हुए उन्होंने मुझसे कहा, 'जा, यह टोपी राजा इन्द्र के आगे डाल दे। मैंने जो डंडा दिया है इसे लौटा देना।' ''

तोता ने मछुआ से कहा कि ''मैं फिर राजा इन्द्र के पास गया और उनके सामने मलंग बाबा की टोपी रख दी। उन्होंने मुझे पहले की तरह ही धमकाते हुए कहा, 'तुझे मैं भस्म कर देता, पर क्या करूँ तुझे उस मलंग बाबा ने भेजा है।' मैंने उसकी खूब मनुहार की और कहा कि 'अब अपनी बेटी की यह सजा मुआफ़ कर दीजिए।' मैने अपनी अनुनय-विनय से मजबूर किया और उन्होंने मुझे वचन दिया, 'जा, आज से मैं उसे यहीं कैद करके रखूँगा। अब न तो वह मकान ही प्रकट होगा और न ही उस तरुणी को आग में जलाया जाएगा।' राजा इन्द्र से यह वायदा लेकर मैं मलंग बाबा के पास उनका डंडा लेकर गया। फिर रानी के पास पहुँचा। रानी से मैंने कहा कि यह तो राजा इन्द्र की बेटी है, जिसे जलाया जाता है। इसके अतिरिक्त मैंने उसे सारा वृत्तान्त कह सुनाया। उसे मैंने यह भी कहा कि अब उस युवती की सजा समाप्त कर दी गई है। रानी ने कहा, 'यदि तुम्हारे कथन में सच्चाई है, तो वह मकान वहाँ अब से प्रकट नहीं होना चाहिए।' उस दिन की हम प्रतीक्षा करने लगे जिस दिन यह मकान वहाँ प्रकट होता था। वह दिन आया पर न वहाँ मकान प्रकट हुआ और न वे आदमी ही। रानी मुझसे कहने लगी, 'सचमुच ही तुमने मेरी शर्त पूरी

कर दी है। अब से मैं तुम्हारी हो गई हूँ।' मैंने रानी के साथ विवाह कर लिया और मैं उस राज्य का राजा बन गया। अब मैं राजा की हैसियत से मलंग बाबा के पास उपहार लेकर जाया करता। तोता को भी अपने साथ ले जाता। एक दिन जब मैं तोता को साथ लेकर मलंग बाबा को उपहार देने गया था, उन्होंने मुझसे कहा, 'देख, तुम्हारी समस्या अब हल हो गई, अब इस तोता को अपने पास मत रख। बेच डाल इसे।' बाबा का यह कथन मुझे बहुत बुरा लगा। मैंने सोचा, देखो बाबा कैसी अजीब बात करते हैं। इस तोता के कारण ही मैं राजा बना, इसी को मैं बेच डालूँ! वाह ! मैंने तोता को नहीं बेचा और अपने महल में जाकर बैठ गया।''

तोता ने मछुआ से कहा कि ''समय गुजरता गया। मेरी पत्नी बीमार पड़ गई। बहुत इलाज आदि कराया पर कुछ लाभ न हुआ। मैं हारकर मलंग बाबा के पास गया वे बोले, 'मैंने तुमसे कह दिया है कि तोता को बेच डालो। यह तुम्हें कष्ट पहुँचाएगा।' मुझे बाबा के कथन पर फिर क्रोध आ गया। सोचा न जाने क्या बकवास कर रहे हैं। तोता ने ही मुझे इस उत्कर्ष पर पहुँचाया है। भला यह मुझे कष्ट पहुँचाएगा ? मैंने तोता को नहीं बेचा। कुछ दिन बाद रानी का देहान्त हो गया। उस रानी के कारण ही मैं वहाँ राज करता था। वही मर गई! मैं असहाय-सा सोचने लगा कि अब मैं क्या करूँ! तोता से सलाह ली तो वह बोला, 'मैं तुम्हें फिर राजा बना दूँगा। चलो, मेरे साथ आ जाओ।' इतना कहकर वह मुझे एक नदी के पास ले गया। नदी के पास ही एक पेड़ था। तोता ने मुझसे कहा कि इस पेड़ के पास खोदो। मेरे वहाँ खोदने पर एक सन्दूक निकला। सन्दूक से एक मोतियों का हार निकला। तोता ने कहा कि यह मोतियों का हार मेरे गले में डाल दो। ज्यों ही मोतियों का हार मैंने तोता को पहनाया, वह एक देव बन गया! उसने मुझे एक फूँक मारा और मैं पत्थर का टुकड़ा बन गया और मुझे नदी में फेंक दिया। वहाँ मुझे एक मछली निगल गई। उस मछली के पेट में पड़े-पड़े मैंने छह महीने बिता दिए। पता नहीं अब मैं यह तोता कैसे बन गया ? ''

तोता ने मछुआ से कहा, ''अगर तुम मुझे उसी मलंग बाबा के पास ले जाओगे, वे मुझे आशीर्वाद देंगे और उनकी दया से मैं इस कष्ट से मुक्ति पा लूँगा।'' मछुआ को तोता पर दया आ गई। उसे पिंजरे में डालकर वह मलंग बाबा के पास ले गया। रास्ते में उसे एक अपाहिज मिल गया। अपाहिज ने मछुए से कहा, 'अरे आदम, तुम्हें इस तोता को लेकर मलंग बाबा के पास जाना है ना ? वहाँ पहुँच कर बाबा से मेरी भी कहना। मेरी ओर से काफी अनुनय-विनय करना और कहना कि अब मुझे इस कष्ट से मुक्ति दिला दे।' मछुआ चकित हुआ! उसने अपाहिज से पूछा, 'तुम्हें कैसे पता चला कि मुझे मलंग बाबा के पास जाना है ?'

'मुझे इस तोता की सारी कहानी मालूम है। यह कौन था, और अब क्या हो

गया है, सब जानता हूँ। मैं स्वयं उसी मलंग बाबा के पास था। उन्होंने इससे समय पर कहा था कि तोता को बेच दे क्योंकि वह एक देव था। उस देव को मलंग बाबा ने दण्ड दिया था। इसने मलंग बाबा का कहा नहीं माना। अतः वह सजा इसे लग गई। खुद मुझे भी यही हुआ। एक बार मैंने भी मलंग बाबा का कहा नहीं माना। तभी मेरी यह दशा हो गई। अब तुम मलंग बाबा के पास जा ही रहे हो, उन्हें मेरी ओर से भी विनती करना।' अपाहिज ने कहा।

अपाहिज की बातें सुनने के पश्चात् मछुआ मलंग बाबा के पास गया। उनके समक्ष पहुँचकर तोता और अपाहिज की ओर से बहुत अनुनय-विनय करने लगा। मलंग बाबा ने फूँक मारी और तोता फिर अपने वास्तविक रूप में आ गया। वह मलंग बाबा के चरणों में नतशिर हुआ और उनसे आशीर्वाद माँगा। वह अपाहिज भी भला-चंगा हो गया। जौहरी फिर से जौहरी का काम करने लगा। उसने मछेरा को मालामाल कर दिया। मछुआ का सारा दारिद्र्य छूमन्तर हो गया और वह अपने परिवार के साथ सुख-चैन से जीवन व्यतीत करने लगा।

सौदागर

एक था सौदागर। काफी सम्पन्न और धनाढ्य। उसका कारोबार दूर के देशों तक फैला हुआ था। एक दिन वह घर में बैठे-बैठे एक पुस्तक पढ़ रहा था। इस पुस्तक में लिखा था कि जंगल में अमुक स्थान पर एक कुआँ है जिसमें एक दीपक जल रहा है। जो इस दीपक को कुआँ से निकाल लेगा और इसे तनिक झिंझोड़ कर कोई भी वस्तु माँगेगा, दीया फौरन उस वस्तु को हाज़िर कर देगा। शर्त यह है कि दीया कोई मूर्ख निकाले।

सौदागर ने पुस्तक में जंगल तथा कुएँ की निशान देही देख ली। वह अब सोचने लगा कि मैं उस मूर्ख को कहाँ खोजूँ जो मुझे कुआँ से दीया निकाल कर दे। एक दिन सौदागर कहीं जा रहा था कि रास्ते में उसने एक आदमी को निरर्थक और बेसिर-पैर की बातें करते सुना। उसने मन-ही-मन कहा, बस यही व्यक्ति मेरा काम कर सकेगा। उसने इस व्यक्ति से मित्रता गाँठ ली और कहा, 'मैं तुम्हें बहुत-सा धन-दौलत दूँगा, तुम मेरे साथ यात्रा पर आ जाओ।' मूर्ख इस बात पर राजी हो गया और दोनों जंगल की ओर चल पड़े। ज्यों ही वे उस कुआँ के निकट पहुँचे, सौदागर ने मूर्ख से कहा, "इस कुआँ में एक दीया जल रहा है। तुम इस दीया को मुझे निकाल कर दो।" "मैं इस कुआँ में कैसे जाऊँ ?" मूर्ख ने पूछा। आखिर घास से एक रस्सी बाटी गई और मूर्ख इसी रस्सी के सहारे कुआँ में उतर गया। ज्यों ही वह मूर्ख कुआँ में उतरा, रस्सी टूट गई! मूर्ख धड़ाम से कुआँ में गिर कर दीया तक पहुँच गया।

दीया के पास पहुँच कर मूर्ख ऊपर आने के लिए बहुत हाथ-पाँव मारने लगा, तड़पने लगा। सौदागर ने सोचा कि फँस गया मूर्ख ही, मैं बच गया। उसने मूर्ख को कुआँ के अन्दर ही छोड़ा और स्वयं दीया को लिये बिना ही घर की राह ली। मूर्ख ऊपर आने के लिए हाथ-पाँव मारने लगा। वह तड़प-तड़पकर कुएँ की दीवारों को पकड़ता रहा। इसी हालत में किसी तरह मूर्ख के हाथ से दीये पर खरोंच-सी लगी। बस इतने से ही राक्षसी अट्टहासों की आवाज़ें आने लगीं। ये अट्टहास लम्बे समय तक गूँजते रहे और इसके पश्चात् उसके कानों में एक आवाज़ आई। मूर्ख एक ओर जाकर सहम गया। उसका दिल जोर-जोर से उछलते हुए-सा धड़कने लगा। यह

आवाज़ जिन की थी। जिन ने कहा, ''तुम सहम क्यों गए हो ? आज्ञा दो कि मुझे क्या करना है ?'' ''बस, मैं कुआँ से निकलना चाहता हूँ।'' मूर्ख ने कहा। जिन ने मूर्ख को अपनी हथेलियों पर उठाकर कुआँ से निकाल दिया। मूर्ख ने दीया को अपनी मुट्ठी से पकड़ लिया था और अपने साथ कुआँ से बाहर निकाल लाया था। जिन के अधीन बारह सौ जिन थे जो अपने मुखिया जिन के साथ आज्ञा की प्रतीक्षा में थे। मूर्ख जब ऊपर आकर तनिक सुस्ताया तो उसने दीया को खरोंच देकर कहा कि मुझे जल्दी घर पहुँचा दो। जिनों ने उसे एकदम हथेलियों पर लिया और उसे अपने घर पहुँचा दिया। मूर्ख ने इन जिनों को एक नया आलीशान मकान बनाने की आज्ञा दी। देखते-ही-देखते उन्होंने एक बड़ा मकान खड़ा कर दिया जिसकी एक बहुत ही सजी-सँवरी बैठक भी थी। मूर्ख बैठा रहता और उसके सामने नाना प्रकार के पकवान एवं व्यंजन पेश किए जाते। मूर्ख के सम्पत्तिवान एवं धनवान होने की प्रसिद्धि शहर भर में कम समय में ही फैल गई। बादशाह स्वयं इस बड़े आदमी का मकान और दौलत देखने आ गया। इसके पश्चात् बादशाह की लड़की के साथ मूर्ख का विवाह हो गया। जिसने उसे मूर्ख समझ कर उस कुआँ से दीपक निकालने के लिए अपने साथ जंगल में लिया था वह सोच रहा था कि मैं किस युक्ति से इस मूर्ख से वह दीया प्राप्त करूँ।

एक दिन सौदागर दीये बेचने निकल पड़ा। दीये सोने के थे। मूर्ख के घर के पास पहुँचकर उसने मालूम किया कि क्या मूर्ख घर पर ही है ? मूर्ख घर पर नहीं था। यह जान कर सौदागर ने आवाज़ दी, ''सोने के दीये हैं, ले लो! सोने के दीये ले लो!'' आवाज़ सुन कर मूर्ख की पत्नी यह देखने के लिए अन्दर से निकल आई कि देखें क्या चीज बिकाऊ है।

सौदागर ने ज्यों ही उसे देखा, उसने आवाज़ दी, ''मिट्टी के दीयों के बदले सोने के दीये ले लो!'' मूर्ख की पत्नी ने सोचा कि उस मिट्टी के दीया के बदले सोने का दीया लेना बेहतर रहेगा जिसे वे (उसका पति) आले पर रखकर हर दिन हाथ से मलते और कुछ कहते हैं। वह उल्टे पाँव, सौदागर को यह कहकर कि ''आप ठहरिए, मैं मिट्टी का दीया लाती हूँ।'' अन्दर चली गई। सौदागर की अन्दर-ही-अन्दर बाँछें खिल गईं। मूर्ख की पत्नी मिट्टी का दीया लाई और बदले में सोने का दीया ले लिया और इस दीया को भी उसी तरह आले पर रखा जिस तरह मिट्टी का दीया हुआ करता था। सौदागर घर पहुँचा और मिट्टी के इसी दीपक को खरोंच दी। जिन उपस्थित हो गया। ''हुक्म कीजिए।'' जिन ने सौदागर से कहा। सौदागर ने हुक्म दिया, ''मूर्ख की पत्नी मेरे पास पहुँचनी चाहिए। और उसका भवन एकदम खत्म होना चाहिए।'' जिन ने आज्ञा का पालन किया और आन की आन में मूर्ख को खोखला कर दिया।

नमक

एक बादशाह था। उसकी सात बेटियाँ थीं पर बेटा कोई न था। एक लम्बे समय तक जब पीरों-फकीरों से बार-बार पुत्र-प्राप्ति के लिए दुआ देने की विनतियाँ करने के बाद भी पुत्र-प्राप्ति नहीं हुई तो उसने सोचा कि उसके बाद उसका उत्तराधिकारी कौन होगा। काफी सोच-विचार के बाद उसने अपने मन में कहा, क्यों न मैं इन बेटियों की परीक्षा लूँ और देखूँ कि इसके योग्य कौन है ? उसने सबसे पहले अपनी बड़ी पुत्री को बुलवाया और उससे पूछा, "बेटी, मेरी एक समस्या है, वह यह कि मेरी मृत्यु के बाद मेरी बादशाहत किसे मिलनी चाहिए ? मुझे विचार आया कि मैं तुम लोगों से एक-एक बात का जवाब पूछ लूँ ताकि मैं यह देख सकूँ कि तुम में से बुद्धिमान कौन है।" बेटी ने जवाब दिया कि "श्रीमान, आप कहें कि क्या आज्ञा है।" बादशाह ने पूछा कि "तुम मुझे बताओ कि तुम्हें सबसे प्यारा कौन लगता है ?" बड़ी पुत्री ने एकदम उत्तर दिया, "श्रीमान, मेरी आत्मा, मेरे प्राण आप ही हैं। यदि इस संसार में मुझे कोई प्यारा है, वे बस मेरे पिताजी ही हैं।" यह सुनकर बादशाह ने कहा, "अच्छा ठीक है। अब तुम चली जाओ।" इसके बाद दूसरी बेटी को बुलवाया। उससे भी ऐसे ही पूछा, "बेटी, तुम मुझे बता दो कि तुम्हें सबसे प्यारा कौन लगता है ?" उसने उत्तर दिया, "मुझे आप से अधिक प्यारा कोई नहीं। मेरी जान आपके बिना कोई जान ही नहीं।" यह सुनकर बादशाह ने उससे कहा, "अच्छा ठीक है। चली जाओ।" इसी प्रकार बादशाह ने तीसरी, फिर चौथी, फिर पाँचवीं और फिर छठी बेटी को बुलवाया। इन सबों ने यही जवाब दिया कि बादशाह के बिना उन्हें कोई प्यारा नहीं। अन्त में सातवीं बेटी को बुलवाया गया। उससे भी यही प्रश्न पूछा। उसने जवाब दिया, "श्रीमान, मुझे आप उतने प्यारे लगते हैं जितना कि नमक।" बादशाह को इतना सुनना था कि वे आगबबूला हो गए। आँखें लाल अंगारे बन गईं। कहा, "क्या तुम मेरी पुत्री हो ? तुमने मेरी तुलना किससे की ? क्या मैं और नमक एक सरीखे हैं ?" पर लड़की ने इसके बाद कोई उत्तर न दिया। बादशाह ने आज्ञा दी कि इसे तुरन्त देशनिकाला दिया जाए। क्योंकि इसने बादशाह की तौहीन की है।

खैर, उस लड़की को देशनिकाला दिया गया। किन्तु जिन कोतवालों ने उसे

अपने साथ लिया उन्हें उस पर करुणा आ गई और इन्होंने उसे देश के एक कोने में ले जाकर एक गंजा के हवाले कर दिया। उसके साथ इसकी शादी रचाई। उस गंजा का घर एक फूस की कुटिया थी। वह अकेला था, निपट अकेला— न माँ न बाप और न भाई न बहन। दिन-भर जंगल जाता वहाँ से लकड़ियों का खेप लाकर बेचता और मुश्किल से गुजारा करता। अब उसकी पत्नी आ गई, अतः काफी श्रम करना पड़ता।

उसकी पत्नी काफी चालाक थी। उसने उससे पहले की तरह ही जंगल जाने और लकड़ियों का खेप लाने को कहा। किन्तु जो पैसा मिले वह उसे सौंपने को कहा। वह उन पैसों से दिन का खाना-पीना खरीदती और हर दिन एक-एक पैसा बचाती। ऐसे ही कुछ समय बीता और एक दिन उसने गंजा से कहा कि "ये पैसे ले लो और एक गदहा खरीद कर ले आओ।" गंजा ने वैसा ही किया। उसकी पत्नी ने कहा, "आज तक लकड़ियों का एक-एक खेप लाते थे, अब इस गदहा को भी अपने साथ जंगल ले जाओ और अब से लकड़ियों के तीन-तीन खेप लेकर आया करो। उन खेपों का मूल्य मुझे सौंपा करो।" उसने अब दो खेपों की कीमत का बच्त करना आरम्भ किया और एक खेप की कीमत पर गुजारा करती रही। थोड़ा समय बीतने के बाद ही उसने गंजा को और पैसे दूसरा गधा खरीदने के लिए दिए। गंजा ने दूसरा गधा खरीदा और अब जंगल से लकड़ियों के पाँच-पाँच खेप लाने लगा। और इनकी कीमत पत्नी के हवाले करने लगा। कुछ दिन बीत गए। गंजा की पत्नी ने गंजा को एक और गधा खरीदने के लिए और पैसे दे दिए। अब गंजा छह-छह खेप लाने लगा क्योंकि अब वह स्वयं कोई खेप नहीं उठाता था।

ऐसे ही दिन बीतने लगे। गंजा एक-एक गधा खरीदता रहा। अब गंजा के पास गधों का एक झुण्ड जमा हो गया। अब वह स्वयं घर में ही रहता और मजदूरों को गधों के साथ जंगल भेजता। गंजा को अब गंजा नहीं कहा जाता था। अब वह ख्वाजा कहलाता था।

एक दिन ख्वाजा से उसकी बीवी ने कहा कि हम एक मकान बनवा लेंगे। आप बढ़ई आदि ले आइए। मैं स्वयं उन्हें निर्देश दूँगी कि मकान कैसे बनाना है। अब देर करने की बात ही नहीं थी। ख्वाजा ने आज्ञा दी और बढ़ई आदि आ गए। ख्वाजिन ने उन्हें वह मानचित्र दिया जो उसके दिमाग में अपने मैके के भवन का था। वह तो बादशाह की पुत्री थी। इस भवन के निर्माण में न जाने एक वर्ष लगा या छह महीने, खैर, भवन तैयार हो गया। भवन को वैसे ही सजाया गया, वैसे ही कमरे बनवाए गए जैसे राजभवन के थे। अब ख्वाजा और ख्वाजिन आराम से दिन गुजारने लगे।

एक दिन बादशाह इसी तरफ सैर के लिए निकला। उसने जब अपने भवन

जैसा ही एक भवन देखा, वह हैरान हो गया। उसे गुस्सा भी आ गया। गुस्सा इसलिए आया कि ऐसा भवन देश में केवल बादशाह का है, पर यह क्या ? वह भवन के सामने रुक गया और इसके बारे में मालूम करने लगा कि यह किसका भवन है।

सैर से लौटकर बादशाह ने ख्वाजा को अपने पास बुलवाया। यह तो वही ख्वाजा था जो पहले गंजा के नाम से जाना जाता था। ख्वाजा अन्दर ही अन्दर भयभीत हुआ और सोचने लगा, न जाने क्या बात है कि मुझे बादशाह ने बुलवाया। बादशाह के पास जाने से पहले घर में ख्वाजिन ने ख्वाजा को समझाया कि सतर्क रहना, कुछ ऐसी-वैसी बात न करना। कहना कि मैं कारोबार करता हूँ और खुदा ने बरकत दी है। मुझे क्या पता था कि आपका भवन भी वैसा ही है, जैसा मैंने बनवाया है। सच्ची बात यह है कि मुझे आपकी हकूमत और राजनीति से कोई वास्ता नहीं। यदि अवसर उपयोगी देखो तो खाने का निमन्त्रण भी दे आना।

ख्वाजा जब राजभवन में बादशाह के सामने पहुँचा तो उसने शब्दशः वही कहा जो उसकी पत्नी ने सिखा रखा था, ऊपर से जब उसने बादशाह को निमन्त्रित किया तो बादशाह मन-ही-मन प्रसन्न हुआ— क्योंकि वह भवन को अन्दर से भी देखना चाहता था। खैर, तिथि नियत हुई और बादशाह ने ख्वाजा को रुखसत किया। जब ख्वाजा घर पहुँचा तो उसने पत्नी को सूचित किया कि बादशाह अमुक दिनांक को आ जाएँगे। उसकी पत्नी ने कहा, "ठीक है, आप अपना कारोबार करते जाएँ और बादशाह को दावत खिलाने की व्यवस्था मैं स्वयं सँभाल लूँगी।"

निश्चित तिथि आ गई। ख्वाजिन ने सारी व्यवस्था कर रखी थी। वाज़ुँवान (पेशेवर बावरचियों द्वारा पकवान एवं विशेष कश्मीरी सामि व्यंजन बनाने का काम) चल रहा था। इसकी ख़ुशबू तीन-चार मील तक फैल चुकी थी कि बादशाह पधारे। बादशाह भवन में प्रविष्ट हो गए। उसके साथ मन्त्रीगण और न जाने कितने लोग गए! इन लोगों को आदर के साथ गावतकियों के सहारे भवन में बिठा दिया गया। उस्ताद का कथन है कि यह भवन इतना विशाल था कि ये सारे लोग भवन के एक अतिथि कक्ष के एक कोने में समा गए।

खाने-पीने का समय आया तो बादशाह को वे व्यंजन और पकवान परोसे गए जो बावरचियों ने बहुत ही सावधानी के साथ तैयार किए थे। बादशाह एक-एक व्यंजन एवं पकवान खाता गया और उसे किसी में मजा न आया। इस प्रकार बादशाह ने छह व्यंजनों का स्वाद देख लिया। सातवाँ व्यंजन स्वचल* था। बादशाह ने जब

---

* स्वचल : एक कश्मीरी जंगली साग जिसके पत्ते गोल होते हैं। इसका स्वाद भिंडी जैसा होता है। इसे बगियाओं याने किचन गार्डनों में भी उगाया जा रहा है। इस साग में लोहे की मात्रा काफी होती है।

इस सब्जी को जरा-सा चखा तो उसे यह बहुत ही स्वादिष्ट लगी। वह चकित हुआ कि यह क्या है! खाने-पीने के बाद बातें चलीं और इसी बीच ख्वाजिन को बुलाया गया। बादशाह ने उससे पूछा, ''पहले के छह व्यंजन बेस्वाद थे, पर आखिर में जो व्यंजन परोसा गया उसमें काफी स्वाद था, ऐसा क्यों ?'' ख्वाजिन ने उत्तर दिया, ''बादशाह सलामत! जो छह व्यंजन पहले परोसे गए उनमें नमक नहीं डाला गया था, पर जो व्यंजन, स्वचल, अन्त में परोसा गया, उसमें नमक डाला गया था, इसीलिए उसे खाने में आपको मजा आया। यह बताइए कि दावत खा के भी आपकी समझ में क्या कुछ आया ?''

''नहीं, कुछ नहीं!'' बादशाह ने उत्तर दिया।

ख्वाजिन ने कहा, ''मैं वही आपकी सबसे छोटी लड़की हूँ जिसने आपसे कहा था कि आप मुझे उतने प्यारे हैं जितना कि नमक।''

यह सुनकर बादशाह बहुत ही प्रसन्न हो गया और अपनी लड़की की बुद्धिमत्ता पर हैरान हो गया और बेटी से कहा कि ''अब मैं तुम्हें वापस ले जाऊँगा। वास्तव में तुम्हीं बुद्धिमान हो और मेरे बाद तख्त और ताज की हकदार तुम्हीं हो।''

इस प्रकार ख्वाजिन ख्वाजा सहित राजमहल में आ गई और बादशाह के जीवित रहते ही राजकाज एवं शासन चलाने लगी। वह गंजा जो ख्वाजा हो गया था, मन्त्री बन गया।

ख्वाजा भी मरा और खाँसी भी छूटी

एक ख्वाजा ने अनगिनत दौलत जमा की थी। एक दिन वह काफी चिन्तित हो गया कि उम्रभर की जमा पूँजी कहीं चोरी न हो जाए या आग में जल न जाए। सोच-विचार के पश्चात् वह पत्नी से कहने लगा कि "हम सारी दौलत अपने आँगन में एक गड्ढा खोदकर दफन कर देंगे।" पत्नी ने हामी भरी और वही कदम उठाया गया। दिन पर दिन बीतते गए। एक दिन ख्वाजा को पैसों की सख्त आवश्यकता पड़ी। आँगन में नियत स्थान पर खोदने लगा ताकि पैसे निकाल सके। भाग्य की करनी कि मिट्टी ताँबे की तरह सख्त हो गई थी ! पत्नी को पुकारा और कहा, "जा, एक भेड़ ला थपि-थपि* करेंगे उसी से सम्भवतः पैसे निकल जाएँगे।" ख्वाजा ने मिट्टी को कुरेदना आरम्भ किया। वहाँ से आवाज़ हुई कि यह खजाना अमुक ख्वाजा के बेटे के भाग्य में है जो उसकी आठवीं पत्नी के पास है। वह ख्वाजा एक निकट गाँव में रहता था।

ख्वाजा एक दरवेश के रूप में उसके घर पहुँच गया। उस ख्वाजा के माथे और हाथ को देखकर उससे कहा कि "तुम्हारी आठवीं जोरू तुम्हारे दुर्भाग्य का कारण है। उससे जो बेटा होगा वह तुम्हें खाक पर बिठा देगा, इसलिए आठवीं जोरू को तलाक दे दो।" उस ख्वाजा ने वैसा ही किया। उसकी पत्नी दरवेश के पीछे-पीछे निकल पड़ी, उसके पाँव पकड़े। कहा, "मैं क्या करूँगी, कहाँ जाऊँगी! मुझे बरबाद किया आपने।" एक गाँव में पहुँचकर दरवेश ने उस ख्वाजा की पत्नी सहित डेरा डाला। आधी रात को उठा और उसे मार डाला! खिड़की से छलाँग मारी और आगे की ओर चलता रहा। घर पहुँचकर पत्नी से कहा कि मैंने दुश्मन को मार डाला। दो गेंतियाँ लेकर खजाना निकालने में लग गया। वहाँ से फिर वही आवाज़ हुई। ख्वाजा हैरान हो गया कि वह मरा दुनिया में कैसे आ पाएगा। विचार करके चाय बेचने निकल पड़ा।

जिस घर में दरवेश ने डेरा डाला था, उस घर का स्वामी जब सुबह जागा तो वह

---

* थपि-थपि कठ करुन : कश्मीरी मुसलमानों में प्रचलित एक मान्यता जिसमें भेड़ को मारकर उसका मांस पड़ोसियों आदि में बाँटा जाता है। उनका विश्वास है कि ऐसा करने से कोई भी मुसीबत टल सकती है— एक प्रकार की बलि।

दरवेश को जगाने के लिए गया। कमरे में प्रविष्ट हुआ तो क्या देखता है कि स्त्री ने एक बच्चे को जन्म दिया है। स्त्री मरी पड़ी है और दरवेश गायब है। वह गृहस्वामी निपूता था। गनीमत समझा और लाश को दफना दिया। इधर से ख्वाजा चाय बेचते हुए वर्ष भर के बाद उसी गाँव में पहुँच गया। वहाँ पहुँचकर उसने मकान और मकान मालिक दोनों को पहचान लिया। उसकी पत्नी को एक सलोना-स्वस्थ लड़का के पीछे-पीछे दूध का प्याला लिये चलते देखा। मालूम करने पर ख्वाजा को पता चला कि यह वही लड़का है जिसे वह समाप्त करना चाहता था। ख्वाजा अब इस घर में आने-जाने लगा और यथासमय लड़का को व्यापार के गुर सिखाने लगा। एक दिन ख्वाजा ने इस लड़का को अपने घर एक पत्र देकर भेज दिया और कहा कि अपने साथ चाय लेकर आ जाना। पत्र में अपनी पत्नी को लिखा, "यह हमारा वह दुश्मन है जो हमारे खजाने का मालिक बनेगा। इसे पहुँचते ही कत्ल कर देना।"

भाग्य का खेल— ख्वाजा की बेटी पानी लाने निकली थी। उसने जब एक सलोना और मनोहर आकृति का लड़का आँगन में दाखिल होते देखा तो एक ही नज़र में आसक्त हो गई। लड़के से अता-पता पूछा। उसने चिट्ठी दिखा दी। लड़की चिट्ठी पढ़कर उदास हो गई। तुरन्त गई और दूसरी चिट्ठी लिख लाई—'यह वही लड़का है जो खजाना निकाल लेगा। इसका निकाह अपनी बेटी से फटाफट कर देना जिससे खजाना निकले और हमारे काम आए।' चिट्ठी लड़के को सौंप दी और कहा कि ख्वाजिन अमुक जगह पर है। यह चिट्ठी उसे दे दो। लड़का चल दिया और चिट्ठी ख्वाजिन को पकड़ा दी। उसने जब चिट्ठी पढ़ी, अति प्रसन्न हो गई। ग्यारह आदमियों को लाई और लड़की का निकाह इस लड़के से करवा दिया।

ख्वाजा एक मास बाद घर लौटा। यहाँ उसने दूसरा ही समाँ देखा। बात पचा गया। लड़के की हत्या करने की नई युक्ति सोचने लगा। अपने गाँव के नानवाई के पास पहुँचा और सारी व्यथा-कथा सुना दी। यह कथा सुनाने के पश्चात् उससे कहा, "अगर इस मरदूद की हत्या करोगे तो उस दौलत में से आधी दौलत दे दूँगा।" फैसला हुआ कि लड़का नान लेने आएगा। और नानवाई उसे जलते तन्दूर में डाल देगा। ख्वाजा घर पहुँचा और जमाई को नानवाई के पास नान लेने भेज दिया। ख्वाजा की लड़की छिप कर उसके पीछे निकली और अपने पति से कहा, "सावधान रहना! तुम्हें मारने के मनसूबे बनाए जा रहे हैं!" लड़का बात समझ, नानवाई की ओर चल दिया।

किस्मत की करनी, वहाँ से ख्वाजा का बेटा घर की ओर आ रहा था। जीजा ने जब साला को देखा तो पेट दर्द का बहाना किया। साला ने जीजा से कहा, "तुम्हें पेट दर्द हो रहा है, अतः तुम यहीं रुको। मैं नानवाई से नान लेकर आता हूँ।" जब वह नानवाई के पास पहुँचा तो उससे कहा, "मुझे ख्वाजा साहब ने नान

लेने भेजा है।'' नानवाई का ख्वाजा के पुत्र से कोई परिचय न था। उसने बिस्मिल्लाह करके इसे उठाया और दहकते तन्दूर में डाल दिया। जीजा साला की प्रतीक्षा करता रहा। जब दिन ढल गया तो घर लौटा। ख्वाजा ने पूछा, ''नान लाए क्या ?'' जमाई ने उत्तर दिया, ''मैंने काख* का भेज दिया था वह लौटा ही नहीं।'' ख्वाजा के पाँव तले की जमीन खिसक गई। नंगे पाँव नानवाई की ओर दौड़ पड़ा और हकलाई आवाज़ में उससे पूछने लगा, ''वह मेरा बेटा था।'' नानवाई ने कहा, ''मुझे क्या मालूम था। तुम्हें दिए गए वायदे के अनुसार मैंने उसे मारा तो इसमें मेरा क्या गुनाह!''

कहते हैं, जिसकी नीयत ठीक न हो उसे बुरे दिन देखने पड़ते हैं— ऐसा ही ख्वाजा के साथ हुआ, पर फिर भी उसका स्वभाव न बदला। लौटा तो एक बदमाश से कहा, ''मदद करो मेरी, मेरे दुर्दिन आ गए हैं।'' बदमाश को ख्वाजा ने जब सारा किस्सा कह सुनाया तो बदमाश ने कहा, ''गम न करो! तुम एक मुर्गा जबह करो और मुझे खाने पर बुलाओ। मैं रात को तुम्हारे यहाँ ही रहूँगा। तुम जमाई से मेरे पैर दबवाना। उसे जब नींद आएगी, मैं उसे एक बोरे में भर दूँगा और नदी में फेंक दूँगा, किन्तु मुझे अच्छा-खासा इनाम देना होगा।'' ख्वाजा ने हामी भरी।

घर आने पर उसने तीन-चार सेर वजन का एक मुर्गा मरवाया। बदमाश खाने पर आया। ख्वाजा की बेटी को शक हुआ। उसने अपने पति को सावधान करके रखा कि आघात तगड़ा है। होशयारी से काम लेना। रात हुई, ख्वाजा ने जमाई को अतिथि के पैर दबाने भेजा। पैर दबाते हुए मेहमान को नींद आ गई। लड़का धीरे-से उठा और एक अन्य दूर के कमरे में सोने चला गया। कुछ समय के बाद ख्वाजा की नींद टूट गई और मेहमान के पास गया। वहाँ उसने किसी और को नहीं देखा। बहुत खुश हुआ कि मेहमान काम पूरा करके सोया है। इसी खुशी में मेहमान के पैंताने लेट गया और गहरी नींद में सो गया। कुछ क्षण बीते कि बदमाश जाग गया। व्यक्ति को पैंताने सोया पाया। अपने को कोसा कि मुर्गा खाके भी काम नहीं किया। अब परिंदा बाज के पंजों में है। चुपचाप ख्वाजा को बोरे में भर दिया और नदी की ओर चल पड़ा।

रास्ते में ख्वाजा की नींद टूटी और स्वयं को बोरा में देख ख्वाजा का होश उड़ गया। बदमाश से अनुनय-विनय करने लगा कि खुदा के लिए मुझे छोड़ दो। मैं ख्वाजा हूँ। वह कहाँ मानने वाला था, कहा, ''हरामजादे, मैं ये झूठे बहाने कहाँ मानने वाला हूँ। मैं ख्वाजा नहीं हूँ कि तुम्हारी ठगी में फँस जाऊँ।'' नदी के पास पहुँचा और धारा में फेंक दिया। सुबह वह बड़े ठाठ से इनाम लेने आया। वहाँ सब हँसते-खेलते चाय पी रहे थे। मगर ख्वाजा कहीं न था। जब बदमाश ने असलियत भाँप ली तो बहुत उदास हुआ और जाते-जाते कहने लगा, ''मजे उड़ाओ, ख्वाजा भी मरा और खाँसी भी छूटी!''

---

* काख : साला

भगवान जो कुछ भी करते हैं, अच्छा ही करते हैं

एक स्थान पर एक साधु डेरा डाले बैठे थे। उनके साथ उनके शिष्य भी थे। साधु केवल एक ही रट लगाते थे कि भगवान जो कुछ करते हैं, अच्छा ही करते हैं। एक दिन उनका एक शिष्य मूलियाँ काट रहा था। मूलियाँ काटते हुए उसकी एक उँगली भी कट गई। वह साधु के पास जाकर कहने लगा, "महाराज, मेरी उँगली कट गई!" साधु ने उत्तर में वही शब्द दुहराया, "भगवान जो कुछ करते हैं, अच्छा ही करते हैं।" वह शिष्य नाराज होकर वहाँ से भाग गया। भागकर वह मन में सोचने लगा—'कैसा हृदयहीन है साधु! मेरी पूरी उँगली कट गई और यह कहता है, भगवान जो कुछ करते हैं, अच्छा ही करते हैं! इसे तनिक भी अफसोस न हुआ, न मुझसे सहानुभूति ही दिखाई!'

दिन गुजरते गए और एक दिन ऐसा आया जब शहर में एक बला आ गई, जिसके आतंक से सभी लोग थरथर काँपने लगे। यहाँ के राजा ने घोषणा की कि एक स्वस्थ और हट्टेकट्टे आदमी की बलि दी जानी चाहिए। जिससे यह बला दफा हो जाए। बलि होने वाला आदमी किसी तरह से भी अपंग नहीं होना चाहिए। अब राजा के सिपाही एक स्वस्थ, हट्टेकट्टे और अनअपंग आदमी की तलाश में लग गए। ढूँढ़ते-ढूँढ़ते उन्हें यही भगोड़ा शिष्य मिला। उन्होंने सोचा चलो, इसी को बलि चढ़ाते हैं। जब इसे राजा के सामने प्रस्तुत किया गया तो शिष्य ने अपनी कटी उँगली दिखा दी। कटी उँगली के कारण राजा ने इसे अपंग माना और बलि के योग्य न समझ छोड़ दिया। शिष्य बालबाल बच गया। उसके मन में साधु के प्रति विश्वास पुनः जाग्रत हुआ। वह साधु के पास अनुनय-विनय के लिए गया और कहने लगा, "महाराज! आप सत्य की ही रट लगाते हैं।" आज से मैं भी इसी को दुहराता रहूँगा कि "भगवान जो कुछ भी करते हैं, अच्छा ही करते हैं।"

यमराज आइए, मुझे ले जाइए

पुराने समय में एक गाँव में एक बुढ़िया रहती थी। यह बुढ़िया बड़ी तेज़ थी। इसका एक ही बेटा था। बुढ़िया हर समय अपने इकलौते बेटे को डाँटती-फटकारती रहती और बक-बक करती रहती। इससे इसका बेटा परेशान रहता था।

कोई मामूली-सी बात भी हो जाती तो बुढ़िया कहती, "यमराज! आइए, मुझे ले जाइए।" बेटा हर समय कहता, "माँ! तुम तो अच्छी तरह खा-पी रही हो, ऐसी बुरी बात न कहा करो।"

बुढ़िया बहुत ही हठी भी थी। अब वह बार-बार दुहराने लगी, "यमराज! मुझे इस संसार से उठा दो।"

बुढ़िया का बेटा बहुत तंग आ गया। एक दिन उसे विचार आया क्यों न मैं यमराज का रूप धारण करके रात को माँ के सामने उपस्थित हो जाऊँ, फिर शायद माँ यह मनहूस वाक्य नहीं दुहराएगी। खैर, शाम का समय आ गया। बुढ़िया का बेटा बुढ़िया से कहने लगा, "माँ, कहते हैं कि आजकल बहुत चोरियाँ हो रही हैं, इसलिए आज मैं धान की रखवाली के लिए खलिहान में ही सो जाऊँगा।"

"अच्छा बेटा, ठीक है।" बुढ़िया ने कहा। खाना खाने के बाद बुढ़िया घर में और उसका बेटा खलिहान में सो गया। आधी रात को बुढ़िया का बेटा उठा और घर की ओर चल पड़ा। घर आकर दरवाजे को जोर-जोर से खटखटाने लगा। अन्दर सोई बुढ़िया जाग गई। वह डर गई और इसी दशा में उसके मुँह से निकल पड़ा, "कौन है ?" बेटे ने आवाज़ बदल कर कहा, "बुढ़िया, मैं यमराज हूँ।" बुढ़िया यह सुनकर थरथराने लगी, पूछा, "आप यहाँ कैसे आ गए ?" तुम्हीं मुझे रोज-रोज बुलाती थीं ना, आज मुझे समय मिला, अतः जल्दी दरवाजा खोल दो।" बुढ़िया ने जब यह सुना उसकी साँस रुक-सी गई। उससे कुछ बोलते न बन पड़ा। यमराज ने फिर जोर से चिल्लाते हुए कहा, "बुढ़िया तुरन्त दरवाजा खोल दो, नहीं खोलोगी तो मैं मकान समेत तुम्हें समाप्त कर दूँगा। जल्दी साँकल खोल, मुझे देर हुई जा रही है।"

बुढ़िया ने अब बचने की आशा छोड़ दी और मन मजबूत करते हुए बोली, "अरे यमराज जी, क्षमा करो, अब मैं आपको कभी नहीं बुलाऊँगी।" यमराज बाहर से दरवाजा खोलने के लिए कहता रहा और बुढ़िया अन्दर से क्षमा माँगती रही। जब

इसी तरह कुछ समय गुजरा तो यमराज ने दहाड़ते हुए कहा, ''अरी बुढ़िया आज मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगा। यदि तुम अभी मरना नहीं चाहती तो अपने बदले अपने किसी खास व्यक्ति का नाम बता। मैं उसे ही अपने साथ ले जाऊँगा। बता, ''बता, जल्दी बता।'' बुढ़िया यह सुनकर तुरन्त बोल उठी, ''अच्छा, जाइए, मेरा बेटा अमुक स्थान पर खलिहान में धान की रखवाली कर रहा है। उसे ले जाइए। जाइए!'' 'यमराज' को खलिहान में जाना ही था। वह गया। बुढ़िया का बेटा हैरान व दंग रह गया। वह अपने आपसे कहने लगा, 'ऐसी ही माँ होती है! सच्ची माँ!'

इसी सोच में बुढ़िया के बेटा ने रात गुजारी। सुबह उठा और जल्दी ही घर की ओर चल पड़ा। यहाँ माँ को वैसे ही ठीक-ठाक पाया जैसे वह हर दिन हुआ करती थी।

''माँ, तुमने मेरे पास खलिहान में कल रात किसे भेजा था ? यदि मैं भाग न जाता तो वह मुझे खा ही लेता।'' बेटा ने कहा।

''बेटा, माँ तेरी बलिहारी! मैं रात को तुम्हारे पास किसे भेज देती जो तुम्हें खा लेता! मुझे बिल्कुल भी पता नहीं।'' माँ ने उत्तर दिया।

''नहीं माँ, तुम्हारे पास यमराज आया था और तुमने दरवाजा नहीं खोला था और कहा था कि जाओ मेरा बेटा खलिहान में सोया है, उसे लेकर जाओ। यदि मैं दृढ़ न रहता तो वह मुझे लेकर ही जाता।'' यह कहते ही डंडा उठाया और तड़ाक-तड़ाक बुढ़िया पर प्रहार करने लगा। बुढ़िया ने इसके बाद कभी यमराज का नाम भी नहीं लिया।

माँ का शाप

कहने वाला कहता है कि सूरज और प्रभंजन आपस में भाई हैं और इन्दु इनकी बहन है। इन तीनों की माँ दूर किसी स्थान पर है। एक दिन ये तीनों भाई-बहन कहीं दावत पर गए। वहाँ बहुत अच्छे और स्वादिष्ट व्यंजन पके थे। सूरज और प्रभंजन ने केवल अपना पेट भर लिया किन्तु इन्दु ने जो कुछ भी खाया, उसमें से थोड़ा-थोड़ा माँ के लिए भी लाई।

कहते हैं माँ ने जब सूरज को खाली हाथ आते हुए देखा तो उसने उसे शाप दिया, ''जा, तुम्हारे ताप से पथिक झुलस जाए और तुम्हें बुरा-भला कहते रहें।'' प्रभंजन भी खाली हाथ था, अतः उसे भी शाप दिया, ''जा, तू लोगों के मकानों के छत उड़ाता रह तथा लोगों को परेशान किया कर जिससे वे सदा तुम्हें बुरी-बुरी गालियाँ देते रहें!''

इन्दु खाली हाथ नहीं थी। माँ के लिए सभी व्यंजनों में से थोड़ा-थोड़ा लाई थी, इसलिए उसे आशीर्वाद देते हुए कहा, ''बेटी, तुम्हें मैं याद रही। जा तुम्हें देखकर सब प्रसन्न हों; उन्हें ठंडक मिले। तुम्हारा चेहरा सुन्दर बना रहे। जो तुम्हारी तरह माँ का ख्याल रखे उसे तुम्हारे गुण प्राप्त हों।''

कहते हैं इसी कारण सूरज में ताप, प्रभंजन में तेजी और इन्दु (चाँद) में शीतलता है।

चूहा और चुहिया

चूहा और चुहिया थे। एक दिन चूहे का मन खिचड़ी खाने को हुआ। उसने चुहिया से कहा, ''मेरी अच्छी चुहिया, मेरी प्यारी चुहिया, आज मेरे लिए खिचड़ी पका दो ना।''

चुहिया बोली, ''घर में चावल नहीं, मूँग नहीं, घी नहीं, हल्दी नहीं, नमक नहीं और जीरा भी नहीं, मैं खिचड़ी पकाऊँ तो कैसे!''

चूहा उठा और बाजार से सारी चीजें ले आया। चुहिया खिचड़ी पकाने लगी और चूहा अपने दोस्तों के साथ गपशप लगाने गया। चुहिया खिचड़ी पका ही रही थी कि उसकी सहेलियाँ तथा अन्य परिचिताएँ उसके पास आ गईं। खिचड़ी तैयार हो गई तो चुहिया ने यह देखने के लिए कि खिचड़ी कैसी बनी है, जरा-सी चख कर देखी। सहेलियाँ और परिचिताएँ उसके साथ रसोई में बैठे-बैठे ही बतिया रही थीं, अतः उन्हें भी थोड़ी-थोड़ी खिचड़ी चखने को दे दी। खिचड़ी चखकर सब को मजा आया। वे बातें करती जा रही थीं और जरा-जरा-सी खिचड़ी खाती जा रही थीं। जरा-जरा करके सारी खिचड़ी खत्म हो गई और बाकी रह गई पेंदे की तनिक-सी जली खिचड़ी। चुहिया की सहेलियाँ और परिचिताएँ जब अपने-अपने घरों को चली गईं तो चुहिया ने जली खिचड़ी एक कटोरी में ओखली के नीचे रख दी। और उदास होकर एक ओर बैठ गई।

चूहा लौट आया। हाथ धोने के बाद सीधे ही रसोई में गया। उसे बहुत भूख लगी थी। उसे रसोई में जब खिचड़ी नहीं मिली तो चुहिया से पूछा, ''खिचड़ी कहाँ है ?'' चुहिया ने जवाब दिया, ''थाली के नीचे।''

''यहाँ नहीं है!''

''पतीले के नीचे।''

''यहाँ भी नहीं है।''

''लोटे के नीचे देख लो।''

''अरी यहाँ भी नहीं है !''

''तो ओखली के नीचे देख लो।''

चूहे ने ओखली हटायी। कटोरी में जली खिचड़ी देखकर उसे क्रोध आया।

जरा-सी मुँह में डाली तो स्वाद आया। फिर थोड़ी-सी मुँह में डाली। तीसरी बार जो मुँह में डाली वह बहुत सख्त थी। चबाने से उसका एक दाँत टूट गया। खून बहने लगा। उसका क्रोध दुगुना हुआ। क्रोध के आवेश में चूहे ने उठाई ओखली और चुहिया के कान पर दे मारी। चुहिया चिल्लाने लगी, ''हाय, मेरा कान कट गया! हाय, मेरा कान कट गया!'' चुहिया कटे कान पर हाथ रखकर दर्जी के पास गई और उससे कहने लगी, ''दर्ज़ी भैया! दर्ज़ी भैया! मेरा कान सी दो। सोने के ज़ेवर पहन मैके जाऊँगी।''

''दर्जी ने कहा, धागा ले आ।'' चुहिया कातिन के पास गई और कहा, ''कातिन बहन! कातिन बहन! तुम मुझे धागा दो। वह मैं दर्जी को दूँगी। दर्जी मेरा कान सिलेगा और मैं सोने के जेवर पहन मैके जाऊँगी।''

कातिन ने कपास लाने को कहा। चुहिया कपास लेने खेत में गई और कहा—

''खेत भाई! खेत भाई! मुझे कपास दो। कपास कातिन को दूँगी। कातिन धागा देगी। धागा दर्जी को दूँगी। वह मेरा कान सिलेगा और मैं सोने के जेवर पहन मैके जाऊँगी।''

खेत ने कहा, गोबर ले आ। चुहिया गोबर लेने बैल के पास गई और कहा—

''बैल भाई! बैल भाई! तुम मुझे गोबर दो। वह मैं खेत को दूँगी। खेत कपास देगा। कपास कातिन को दूँगी। कातिन धागा देगी। धागा दर्जी को दूँगी। दर्जी मेरा कान सिलेगा और मैं सोने के जेवर पहन कर मैके जाऊँगी।''

बैल ने कहा, ''जा घास ला।'' चुहिया मेंड़ के पास गई और कहा—

''मेंड़ बहिन! मेंड़ बहिन! तुम घास दो। घास बैल को दूँगी। बैल गोबर देगा। गोबर खेत को दूँगी। खेत कपास देगा। कपास कातिन को दूँगी। कातिन धागा देगी। धागा दर्जी को दूँगी। दर्जी मेरा कान सिलेगा और मैं सोने के जेवर पहन मैके जाऊँगी।''

मेंड़ ने कहा, ला दराँती। चुहिया लोहार के पास गई, कहा—

''लोहार भाई! लोहार भाई! तुम मुझे दराँती दो। दराँती मेंड़ को दूँगी। मेंड़ घास दे देगी। घास बैल को दूँगी। बैल गोबर देगा। गोबर खेत को दूँगी। खेत कपास देगा। कपास कातिन को दूँगी। कातिन धागा देगी। धागा दर्जी को दूँगी। दर्जी मेरा कान सिलेगा और मैं सोने के जेवर पहन मैके जाऊँगी।''

लोहार ने कहा, ''जा कोइला ले आ।'' चुहिया वन के पास गई, बोली—

''वन भाई! वन भाई! तुम मुझे कोइला दो। कोइला लोहार को दूँगी। लोहार दराँती देगा। दराँती मेंड़ को दूँगी। मेंड़ घास दे देगी। घास बैल को दूँगी। बैल गोबर देगा। गोबर खेत को दूँगी। खेत कपास देगा। कपास कातिन को दूँगी। कातिन धागा देगी। धागा दर्जी को दूँगी। दर्जी मेरा कान सिलेगा और मैं सोने के जेवर पहन मैके जाऊँगी।''

वन ने कहा, ''जा अंगारे ले आ।'' चुहिया अंगारे लाने किसान के पास गई, कहा—

''किसान भाई! किसान भाई! तुम मुझे अंगारे दो। अंगारे वन को दूँगी। वन कोयला देगा। कोयला लोहार को दूँगी। लोहार दराँती देगा। दराँती मेंड़ को दूँगी। मेंड़ घास दे देगी। घास बैल को दूँगी। बैल गोबर देगा। गोबर खेत को दूँगी। खेत कपास देगा। कपास कातिन को दूँगी। कातिन धागा देगी। धागा दर्जी को दूँगी। दर्जी मेरा कान सिलेगा और मैं सोने के जेवर पहन मैके जाऊँगी।''

किसान ने कहा, ''जा, कोई बर्तन ले आ।'' चुहिया कुम्हार के पास गई, कहा—

''कुम्हार भाई! कुम्हार भाई! मुझे एक बर्तन दे दो। बर्तन किसान को दूँगी। किसान अंगारे देगा। अंगारे वन को दूँगी। वन कोयले देगा। कोयले लोहार को दूँगी। लोहार दराँती देगा। दराँती मेंड़ को दूँगी। मेंड़ घास दे देगी। घास बैल को दूँगी। बैल गोबर देगा। गोबर खेत को दूँगी। खेत कपास देगा। कपास कातिन को दूँगी। कातिन धागा देगी। धागा दर्जी को दूँगी। दर्जी मेरा कान सिलेगा। और मैं सोने के जेवर पहन मैके जाऊँगी।''

कुम्हार ने कहा, ''जा, मिट्टी ले आ।'' चुहिया टीले के पास गई, कहा—

''टीले भाई! टीले भाई! तुम मुझे मिट्टी दो। मिट्टी कुम्हार को दूँगी। कुम्हार बर्तन देगा। बर्तन किसान को दूँगी। किसान अंगारे देगा। अंगारे वन को दूँगी। वन कोयले देगा। कोयले लोहार को दूँगी। लोहार दराँती देगा। दराँती मेंड़ को दूँगी। मेंड़ घास दे देगी। घास बैल को दूँगी। बैल गोबर देगा। गोबर खेत को दूँगी। खेत कपास देगा। कपास कातिन को दूँगी। कातिन धागा देगी। धागा दर्जी को दूँगी। दर्जी मेरा कान सिलेगा। और मैं सोने के जेवर पहन मैके जाऊँगी।''

टीला मिट्टी लेकर आया और चुहिया के ऊपर गिर गया। चुहिया मिट्टी के नीचे दबकर मर गई।

चूहा दौड़ता-दौड़ता आया और रोते-रोते कहने लगा—

''सोने-सी चुहिया ! चाँदी-सी चुहिया ! क्या तुम सोने के जेवर पहन मैके गईं ? सोने-सी चुहिया ! चाँदी-सी चुहिया ! क्या तुम सोने के जेवर पहन मैके गईं ?''

मुर्गा

एक था मुर्गा। एक दिन वह घूरे को अपने पंजों से खुरच रहा था कि उसे एक पैसा मिल गया। यह पैसा लेकर वह एक दुकानदार के पास गया और कहा, "कुकड़ूँ कूँ...मुझे इतनी चाय दे जितनी मेरे कर्ण विवर में आ जाए।" दुकानदार ने पैसा लिया और सोचा, मुर्गा के कर्ण विवर में तो जरा-सी ही चाय आ जाएगी। अतः फायदे में मैं ही रहूँगा। वह मुर्गा के कर्ण विवर में चाय भरता गया पर विवर भरा ही नहीं! चाय का पूरा बोरा समाप्त हो गया पर विवर नहीं भरा। अन्त में दुकानदार ने मुर्गा से विनती की, "भाई मुर्गा, जितनी चाय मैंने तुम्हारे कर्ण विवर में भरी वह भी तुम्हारी और यह लो तुम्हारा पैसा भी तुम्हारा, भगवान के लिए मुझे क्षमा करो और यहाँ से चले जाओ।" मुर्गे ने पैसा लिया और चलता बना।

चलते-चलते वह एक और दुकान के सामने पहुँचा। दुकानदार से कहा, "कुकड़ूँ कूँ...यह लो पैसा और सभी मसाले मेरे कर्ण विवर में डाल दो।" दुकानदार खुश कि मैं फायदे में रहूँगा, मुर्गा के कर्ण विवर में तो जरा-सा मसाला ही आ पाएगा। दुकानदार ने मुर्गा के कर्ण विवर में मसाले भरे पर विवर भरा नहीं। और भरे विवर फिर भी नहीं भरा। दुकान खाली हो गई पर विवर वैसे का वैसा! आखिर तंग आकर दुकानदार ने मुर्गा को पैसा लौटाया और कहा, "मुझे क्षमा करो मुर्गा महाराज, पैसा भी तुम्हारा और तुम्हारे कर्ण विवर में भरे मसाले भी तुम्हारे।" मुर्गा यहाँ से भी चलता बना।

चलते-चलते मुर्गा सोचने लगा मेरे पास पैसा भी है और काफी सामान भी। मैं बहुत धनाढ्य हो गया हूँ। क्यों न मैं बादशाह की लड़की ब्याह लूँ। वह बादशाह के भवन की ओर चलने लगा और कहता रहा, "कुकड़ूँ कूँ! मुझे बादशाह की लड़की चाहिए!" चलते-चलते रास्ते में उसे एक गीदड़ मिला, कहने लगा, "मुर्गे भाई, कहाँ जा रहे हो ?" मुर्गा बोला, "कुकड़ूँ कूँ! मैं बादशाह के पास उसकी लड़की ब्याहने जा रहा हूँ।" गीदड़ ने कहा, "मैंने कभी राजमहल नहीं देखा है, मुझे भी साथ ले चलो।" मुर्गा बोला, "तुमसे चलते नहीं बनेगा न दौड़ते! न दौड़ते बनेगा न चलते! आ, मेरे कर्ण विवर में घुस जा।" गीदड़ मुर्गा के कर्ण विवर में घुसा और आराम से बैठ गया।

वहाँ से चला तो चलते-चलते रास्ते में अलाव जलते देखा। अलाव ने जब मुर्गा को देखा तो पूछा, ''मुर्गा भाई! कहाँ जा रहे हो ?'' मुर्गा ने बहुत शान से कहा, ''कुकड़ूँ कूँ! मैं बादशाह की बेटी से शादी करने बादशाह के महल में जा रहा हूँ।''

''मुर्गा भाई ! मुझे भी साथ ले चलो ना!'' अलाव ने प्रार्थना की।

''न चल सकोगे, न दौड़ सकोगे। न दौड़ सकोगे न चल सकोगे! आ, मेरे कर्ण विवर में घुस जा।'' अलाव मुर्गा के कण विवर में घुस कर आराम से बैठ गया।

मुर्गा का रास्ता एक जंगल के बीच में से था। मुर्गा जंगल में बड़ी मस्ती से चल रहा था कि उसे एक शेर मिल गया। शेर ने पूछा, ''भाई मुर्गा ! कहाँ जा रहे हो ?''

''कुकड़ूँ कूँ! मैं बादशाह की बेटी ब्याहकर लेने चला हूँ।'' मुर्गा ने उत्तर दिया।

''मुझे भी साथ ले चल यार।'' शेर बोला।

''तुमसे चलते बनेगा न दौड़ते! न दौड़ते बनेगा न चलते! आ, मेरे कर्ण विवर में घुस जा।'' मुर्गा ने कहा। शेर मुर्गा के कर्ण विवर में घुसकर आराम से बैठ गया।

चलते-चलते मुर्गा बादशाह के महल में घुस गया और ऊँची आवाज़ में रट लगाने लगा, ''कुकड़ूँ कूँ! मुझे बादशाह की लड़की चाहिए! कुकड़ूँ कूँ! मुझे बादशाह की बेटी चाहिए···।''

बादशाह ने जब यह आवाज़ सुनी तो बहुत नाराज हो गया! सिपाहियों को हुकुम दिया, ''इस बदतमीज मुर्गा को पकड़ कर मेरे सामने पेश करो!'' सिपाही दौड़े और मुर्गा को टाँग से पकड़कर बादशाह के सामने ले आए। मुर्गा फिर भी ऊँची आवाज़ में कहता जा रहा था, ''कुकड़ूँ कूँ! मुझे बादशाह की बेटी चाहिए···।'' बादशाह और भी भड़क गया और मुर्गा को सजा सुनाई—

''इस बदतमीज मुर्गा को दड़बे में बन्द कर दिया जाए।''

हुकुम की तामील हुई। रात को मुर्गा ने अपने कर्ण विवर में बैठे गीदड़ को पुकारा, ''गीदड़, भाई गीदड़, निकल आ! दड़बे के सभी शाही मुर्गे-मुर्गियों को चट कर जा!'' गीदड़ ने कर्ण विवर से एक ही छलाँग लगाई और दड़बे के सभी मुर्गे-मुर्गियों को चट कर भाग गया।

सुबह बादशाह को यह सूचना मिली कि दड़बे में बदतमीज मुर्गा के अलावा और कोई मुर्गा या मुर्गी नहीं है। दड़बे में चारों ओर खून ही खून है और बदतमीज मुर्गा चिल्लाए जा रहा है कि मुझे बादशाह की बेटी चाहिए। तो बादशाह ने हुकुम दिया—

"इस बदतमीज हत्यारे मुर्गा को घुड़साल में बन्द कर दो वहीं शाही घोड़े अपने खुरों से इसकी जान निकाल देंगे।"

हुकुम की तामील हुई। रात को जब सभी सोए थे, मुर्गा ने कर्ण विवर के शेर को आवाज़ लगाई, "शेर भाई! जल्दी से निकल आ। तुम्हारे खाने के लिए यहाँ बहुत सामान है, इसे चट कर जा!" शेर एक ही छलाँग में निकल आया और सभी शाही घोड़ों को चट कर गया। डकार मारी और जंगल में भाग गया।

सुबह बादशाह को इस घटना की सूचना दी गई। बादशाह आगबबूला हुआ। हुकुम दिया—

"इस बदतमीज हत्यारे मुर्गा को शाही भवन के अँधेरे कमरे में कैद कर दो।"

हुकुम की तामील हुई। रात को जब सभी गहरी नींद में सोए थे, मुर्गा ने अपने कर्ण विवर में के अलाव को आवाज़ दी, "भाई अलाव! जल्दी से निकल आ और इस भवन को राख कर।"

अलाव तुरन्त निकल आया। भवन में आग लग गई और सब राख हो गया। बादशाह इस आग से बहुत गरीब हो गया क्योंकि उसके खजाने, उसकी सम्पत्ति और सब कुछ जल चुका था। बादशाह ने सोचा, यह कोई असाधारण मुर्गा है। इसके साथ दुश्मनी ठीक नहीं। उसने शाही मुल्ला को बुलवाया और अपनी बेटी का निकाह मुर्गा के साथ रचाया।

मुर्गा एक शहज़ादे की तरह शहज़ादी को ब्याह कर घर ले आया।

कागा आठ साल का, पूत साठ साल का

कहा जाता है कि एक कौआ था। इसके दो बच्चे थे। एक बिल्ली ने खाया। बाकी उसके पास एक ही बच्चा रहा। इस बच्चे पर अपना कागा पिता जान छिड़कता था और इसे अपने खून से पालता था। जहाँ कहीं कागा को कोई अनाज का दाना मिलता वह अपने बच्चे को खिलाता। एक दिन यह बच्चा अपने पिता के साथ आसमान की सैर कर रहा था। उड़ते-उड़ते जब वे थक गए तो एक बुइन (चिनार) की शाखा पर बैठ गए।

इधर-उधर की बातें करने के बाद कागा ने अपने बच्चे को कुछ शिक्षाप्रद बातें बतानी आरम्भ कीं। कागा ने अपने बच्चे से कहा, ''बेटा, यह बात याद रखो कि जब किसी स्थान पर बैठे होगे और वहाँ से कोई इनसान गुजरता हो, यदि वह इनसान नीचे झुक जाए तो तुम एकदम उड़कर भाग जाना।''

''क्यों भाग जाया करूँ? इसके पीछे क्या कारण है?'' बच्चे ने पूछा।

''इसका कारण यह है कि ज्यों ही इनसान नीचे भूमि की ओर झुकता हो तो समझ लेना कि वह कोई पत्थर उठा रहा है। जिससे वह तुम्हें मारेगा। इससे तुम घायल हो सकते हो और जान भी गँवा सकते हो।'' कागा ने उत्तर दिया।

कौए का बच्चा सोच में पड़ गया और कुछ क्षण बाद कहने लगा, ''पिताजी आपका कहना ठीक है, पर मुझे भी कुछ कहना है। वह यह कि अगर इन्सान ने पहले से ही पत्थर उठा रखा हो और हमारे देखते वह न झुके तो?… इसलिए चाहे इन्सान जमीन की ओर झुके या न झुके ज्यों ही इनसान नज़र आए, हमें भाग जाना चाहिए।''

कागा अपने बच्चे की बुद्धिमत्ता पर बहुत प्रसन्न हो गया। कागा की समझ सही और काग के बच्चे की समझ बिलकुल सही!

इसी को कहते हैं कागा आठ साल का और पूत साठ साल का।

□□

truth alone triumphs wins

सत्यम्: एव जयते

सत्यमेव जयते

लेखक-परिचय

पृथ्वीनाथ मधुप का जन्म 19.4.1934 को कश्मीर में हुआ। वर्षों तक अध्यापन से जुड़े रहे और लेखन प्रिय शौक रहा ।

अब तक उनके 'मुखर क्षण,' खोया चेहरा,' 'खुली आँख की दास्तान' (पुरस्कृत), 'बबूल के साये में,' 'मोगरा' तथा 'रुकी नदी' कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके। कश्मीर के सांस्कृतिक विरासत से पहचान करवाती इनकी पुस्तक 'कश्मीरियत संस्कृति के ताने-बाने' विशेष चर्चित रही है। इनके अतिरिक्त 'कश्मीरी स्वयं शिक्षक,' 'कश्मीरी बोलचाल,' 'राष्ट्रभाषा से जान-पहचान' इत्यादि लोकोपयोगी व राष्ट्रोपयोगी पुस्तकों का लेखन भी किया है।

'कवि श्रीमाला परमानंद,' 'वाणी वितस्ता' का अनुवाद व चयन तथा 'नीलजा' (प्रथम तरंग) 'कश्यप भारती,' 'गल्प सौरभ,' 'आज की कविताएँ : विस्थापन अंक' आदि का सम्पादन भी इनकी प्रतिभा को उजागर करता है ।

सम्प्रति : लोक कथाओं पर विशेष कार्य कर रहे हैं।